CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

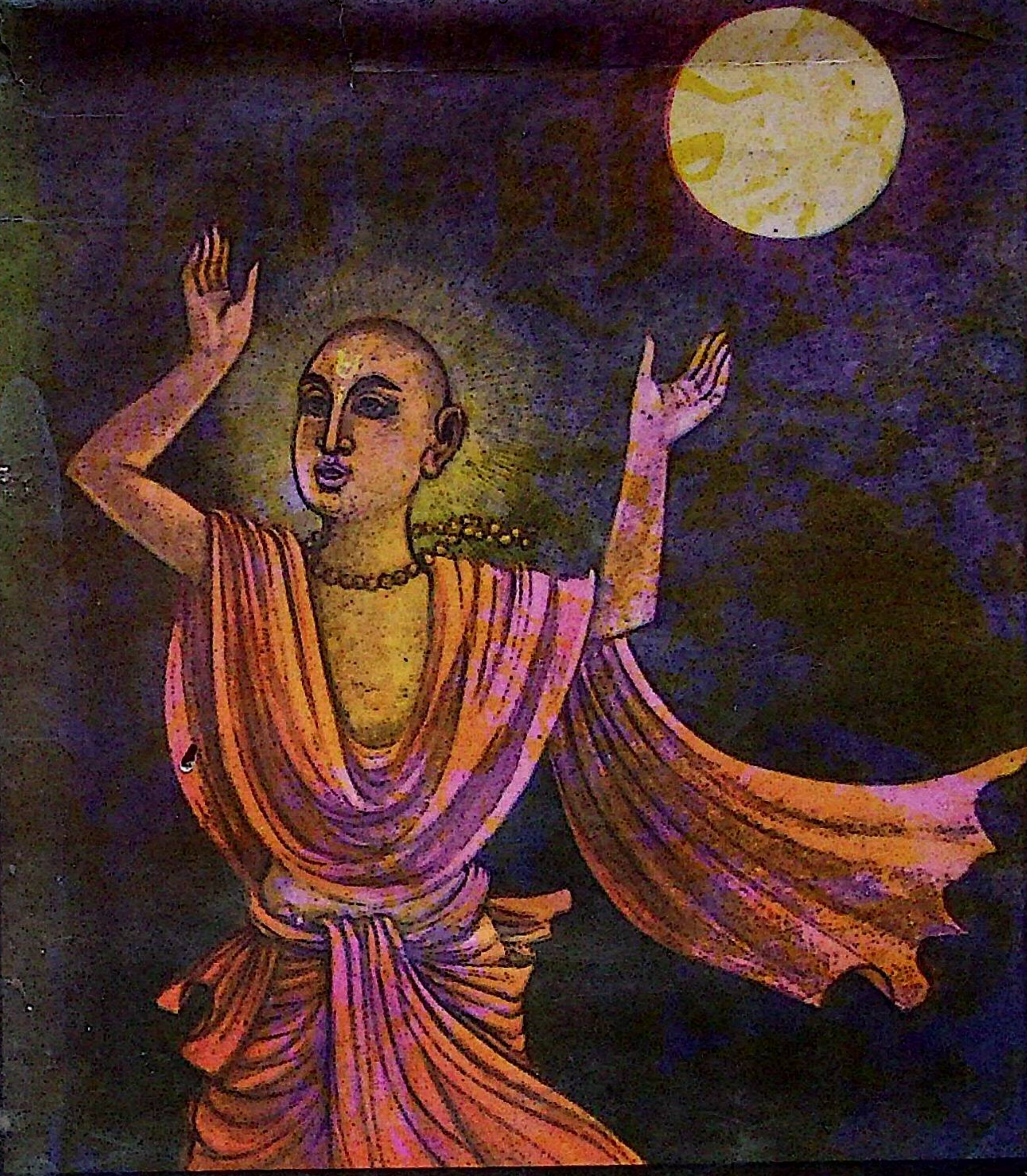

चैतन्य महाप्रभु

अमृतलाल नागर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैतन्य महाप्रभु

चैतन्य महाप्रभु का आविर्भाव वैष्णव धर्म के विकास में एक चमत्कारी घटना है। एक गहरे आवेश और भावनात्मकता के साथ सारे जनसामान्य तक वैष्णव धर्म को पहुँचाने का काम पहले बंगाल में और बाद में सम्पूर्ण देश में, चैतन्य महाप्रभु ने किया। मधुर भाव की नाम-संकीर्तन पद्धति चैतन्य की देन है। इसी के साथ वैष्णव धर्म ने एक नये युग में प्रवेश किया। प्रस्तुत पुस्तक में पहली बार चैतन्य के व्यक्तित्व के इस योगदान को सम्पूर्णता के साथ उजागर किया गया है।

लेकिन इस पुस्तक का उद्देश्य मात्र इतना ही नहीं है। विद्वान लेखक ने चैतन्य के व्यक्तित्व को तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों में भी रख कर देखा है। अपने समय के इतिहास में चैतन्य का व्यक्तित्व एक चुनौती की तरह उभरा और पराजित हिन्दू जाति को एक नयी आस्था और नये आलोक से संयुक्त करने का काम भी चैतन्य ने किया।

उपन्यासकार नागर जी की लेखनी से प्रस्तुत चैतन्य की यह जीवनी पढ़ने पर एक उपन्यास का मजा तो देती ही है, साथ ही वैष्णव धर्म के उदार पथ के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान भी सामने लाती है।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12.2

डॉ० विशेश्वर प्रसाद सिंह
[illegible] कालेज पटना द्वारा प्रदत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चैतन्य महाप्रभु

डॉ० विश्वेश्वर प्रसाद सिंह
बुद्धा कालोनी पटना द्वारा प्रदत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैतन्य महाप्रभु

इं० दिनेश्वर प्रसाद सिंह
बुद्धा कालोनी पटना द्वारा प्रदत्त

अमृतलाल नागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

© अमृतलाल नागर

चतुर्थ संस्करण : १९९५

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य : ८०.००

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इं० दिनेश्वर प्रसाद सिंह
बुद्धा कालोना पटना द्वारा प्रदत्त

परम प्रिय बन्धुवर
श्री नरेन्द्र शर्मा
को
उनके ६२वें वर्ष में यह
चैतन्य

•

सादर, सविनय, सप्रेम

—अमृतलाल नागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्व:पीठिका

ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी में हिन्दुस्तान को तुर्की के आक्रमणकारियों का सामना करना पड़ा। तुर्क वाले अरबों की तलवार से पराजित होकर मुसलमान बने थे, उनके धर्म परिवर्तन का प्रभाव करीब-करीब सारे मध्य एशिया पर पड़ा। यही नहीं, इस्लाम का झण्डा उठाकर अरब के रण-बाँकुरे उस समय यूरोप में स्पेन तक छा गये थे। अब तक प्रायः यही माना जाता है कि उनकी बर्बरता और आतंककारी नीतियों की चक्की में पिस करके ही हमारा देश अनास्था के एक बहुत बड़े और अभूतपूर्व भँवर-जाल में फँसा था। तुर्कों के अत्याचार हमारे बहुत से लोक-गीतों में भी बड़ी करुणा के साथ बखाने गये हैं। आम धारणा यह है कि उन्होंने हिन्दुस्तान के पुराने धर्म को एकदम तहस-नहस कर डाला था।

हजार नौ सौ वर्षों के बाद आज जब हम इतिहास से बीते हुए क्षणों का निरीक्षण करते हैं तो हमें वस्तुतः यह बात पूरी तरह से सच नहीं लगती। यह ठीक है कि उस काल में हजारों लाखों हिन्दू जन मुसलमान बनें परन्तु उनके धर्म परिवर्तन का कारण केवल तुर्कों की तलवार को ही मानना अधिक न्यायसंगत नहीं लगता। अधिकांश जातियों ने आभिजात्य वर्ग के सवर्ण हिन्दुओं के अत्याचारों से ऊब कर क्रूर विदेशी विजेताओं के धर्म को स्वीकार किया था। तुर्की राजनीति पर विचार करने से भी यह लगता है कि उन्होंने उस देश की अनेक छोटी-छोटी दबी कुचली, सदियों से कुण्ठाग्रस्त जातियों तथा किसी निजी कारण-वश स्वजातिद्रोही हो जाने वाले सवर्ण हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का हौसला तो अवश्य दिखलाया पर ब्राह्मणवाद से मंडित भारतीय संस्कृति का पूरी तरह से सफाया करने में उन्हें शायद कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस काल के लगभग हजार बारह सौ वर्ष पहले कुषाणों ने जिस तरह से नये ब्राह्मण और क्षत्रियों और बौद्ध धर्मियों को पुरानी वर्ण-व्यवस्था का शत्रु बनाकर प्रतिष्ठित किया था, वैसा तुर्कों ने नहीं किया। उन्होंने भारतीय वर्ण-व्यवस्था तथा जातियों के महाजाल को छिन्न-भिन्न करने का तनिक भी प्रयत्न न किया। सच तो यह है कि ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजेता लोग किसी हद तक भारतीय संस्कारों के पोषण भी बन गये थे। क्यों न हो, यह तुर्क (तुरुष्क) भी एक समय आखिर शैव या बौद्ध धर्मी रह चुके थे, अग्नि शब्द और उसके प्रति अगाध आदर का भाव संस्कार के रूप में आज तक उनके भीतर विद्यमान है। इस प्रकार उन पर आर्य संस्कृति की छाप एक हद तक तो पड़ी ही हुई थी। इसके अलावा इस विशाल हिन्दू देश में उन्हें कभी-कभी मात भी खानी ही पड़ती थी। उत्तर मध्य काल में भारत भूमि पर हार-जीतों की इन्हीं क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के कारण ही हिन्दू और मुसलमान धर्मों के नव-संस्कार हुए। दोनों ही धार्मिक समाजों के विजित और विजेता लोगों ने घोर राजनैतिक शत्रुता होते हुए भी एक दूसरे को प्रभावित किया। बहुत से मुसलमान शासक तो इस हद तक हिन्दू मान्यताओं की ओर झुकने लगे थे कि उनकी मुसलमानियत केवल कोरे लिफाफे सी ही रह गयी थी। अंग्रेज इतिहासकार जे० टालबॉय ह्वीलर ने उस समय के शासकों की मनःस्थिति का अच्छा वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि 'कुछ मुसलमान राजे हिन्दुत्व के प्रवाह में इस हद तक बह गये थे कि उनका राजपाट तो कायम रहा पर धर्म करीब-करीब छूट गया और जिन शासकों ने हिन्दुओं की हर बात को केवल घृणा की दृष्टि से ही देखने का हठ ठाना उनके पास उनका धर्म तो अवश्य बचा रहा पर राजपाट न बच पाया।'

हारे हुए हिन्दू समाज की मनःस्थिति बेहद कमजोर हो चुकी थी; वे न तो अपने दीन के ही मालिक रहे और न अपनी दुनिया के। भारतीय समाज एक तरह से सनक उठा था। अराजकता भी बेहद बढ़ गई थी। विजेताओं की तलवार उन्हें धमकाकर कहती कि खबरदार, अपने धर्म और ईश्वर को कभी सच्चा मत कहना। ईश्वर एक है और उसका रूप वही है जो इस्लाम ने देखा है। उस ईश्वर ने अपने पैगम्बर मुहम्मद को धरती पर भेज कर तमाम पुराने पैगम्बरों का महत्व कष्ट कर दिया। अब केवल मुहम्मद ही ईश्वर से एकमात्र संदेशवाहक एक ही पैगम्बर और एक ही ईश्वर है, बाकी जो कुछ है झूठा है।

लेकिन मुसलमान बन जाने वाले हर हिन्दुस्तानी के लिए विदेशियों का यह मंत्र पूरी तरह से विश्वसनीय न था। वे जहाँ पुराने साथियों से शत्रुता प्रकट करने का मौका देखते वहाँ तो बड़े तेवर के साथ कलमा पढ़ते-पढ़ाते थे लेकिन धर्म जहाँ व्यक्ति और उसके परिवार से अन्तरंग नाता जोड़ता है वहाँ वे दोहरी निष्ठा से बंधे हुए थे। उनके निजी आचरणों में हिन्दू धर्म के संस्कारों की छाप भी पड़ी थी और नये मुसलमान धर्म की भी। इस दोहरेपन की चिढ़ में भारतीय नव-मुसलमान कभी-कभी बाहर से आये हुए मुसलमानों से अधिक जल्लाद साबित होते थे। बंगाल के इतिहास में अपना धर्म परिवर्तित करके अत्याचार करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाला एक भूतपूर्व ब्राह्मण 'काला पहाड़' के नाम से आज तक प्रसिद्ध है। उस नये मुसलमान ने बंगाल के ब्राह्मणों और इतर ब्राह्मणों पर जैसे निर्मम अत्याचार किये वैसे तो विदेशी विजेता भी नहीं कर पाते थे। इस लोक मानस को ध्यान में रख करके ही हमें उस ऐतिहासिक काल को देखना उचित लगता है।

महमूद ग़ज़नी, मुहम्मद ग़ोरी और क़ुतुब्बुद्दीन ऐवक़ जैसे प्रबल आक्रमण-कारियों ने कम से कम उत्तर भारत को तो पूरी तरह से ही झकझोर डाला था। बहुत से छोटे पुराने राजवंश उजड़ चुके थे, उनकी शक्तियों का प्रभाव नष्ट हो चुका था। ऐसे अनिश्चय के समय में अनेक महत्वाकांक्षियों के भाग्य सहसा जाग उठे। मुहम्मद बख्तियार ऐसे ही भाग्यशालियों में से एक था। वह ग़ज़नी और दिल्ली के दरबारों में तो अभागा रहा, वहाँ उसे कोई सफलता न मिल सकी, लेकिन बिहार और बङ्गाल के प्रदेशों के निर्मम लुटेरे और प्रबल आतंककारी मुसलमान के रूप में वह इतिहास पर अपनी छाप छोड़ गया है। उसने आरंभ में इलाहाबाद में अपना डेरा जमाया था। वहाँ कुछ लड़ैये इकट्ठा किये और बिहार प्रांत में घुस कर लूट-पाट मचानी आरम्भ कर दी। बिहार के बहुत से छोटे मोटे लुटेरे भी इस प्रबल लुटेरे के साथ लग गये। बख्तियार ने बिहार को जी भर के लूटा और रौंदा। सम्पन्न नागरिकों के हीरे जवाहरात उसकी तिजोरी में पहुँच गये। कुलीन घरों की सुन्दर स्त्रियाँ छाँट-छाँट कर निकाली गईं और वेश्याओं से भी बुरी स्थिति में पहुँचा दी गईं। बिहार में विद्यार्थियों का एक बड़ा गुरुकुल था। उसने वहाँ के सभी प्रकांड पंडितों को पकड़कर मौत के घाट उतार दिया। अनेक अमूल्य ग्रंथों से समृद्ध पुस्तकालयों को राख का ढेर बना दिया और प्रजा-जनों को यह कहने पर मजबूर किया कि उनका धर्म और ईश्वर झूठा है।

जनता को दहलाने के लिए यही सबसे अधिक कारगर नुस्खा था। प्रजा के लोग सदियों से जमे हुए धार्मिक संस्कारों को सहसा नहीं छोड़ सकते थे। ईश्वर तर्क के आधार पर हो या न हो लेकिन मनुष्य के मानस में रम कर वह उसे आशा और आत्म-विश्वास का धनी अवश्य बनाता है। हर देश का जन अपनी-अपनी प्रचलित धारणाओं के अनुसार ही ईश्वर को मानता है लेकिन वे प्रचलित धारणाएँ और आत्म-विश्वास जब कारणवश खण्डित होते हैं तब बेचारे इन्सान का जीवन दूभर होने लगता है। वह ईश्वर को आखिर किस रूप में माने। पुराने ईश्वर दुश्मनों की कुल्हाड़ियों से खण्डित होकर जगह-जगह धूल-धूसरित होकर पड़ा है और नया ईश्वर आतंक भरा अनजाना है। उससे जन मानस का नेह-नाता अभी स्थापित नहीं हो पाया। ऐसा स्थिति में आर्तजन आखिर किसका सहारा लेकर जाएँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुहम्मद बख्तियार का आतंक इतना बढ़ गया था कि अधिकांश हिन्दू उसका नाम सुनकर बलिदानी बकरों की तरह मजबूरन बिना लड़े ही अपना सिर उसकी तलवार के आगे झुका देते थे। भय और अनास्था से ग्रस्त भारतवासी कायर हो चुका था। लुटेरा बख्तियार इस जोर और दबदबे के साथ आगे बढ़ा। उसकी शनि-दृष्टि अब गौड़-बंगाल पर पड़ी थी। यह चैतन्य के जन्म से पहले की बात है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक

नवद्वीप गौड़ का प्रमुखतम विद्या-केन्द्र था, बोल-चाल में इसे नदिया भी कहा जाता था। वहाँ के धोबी, नाई तक न्याय और तर्क शास्त्रों के ऐसे शब्द सहज भाव से बोल जाते थे कि बाहर के पण्डित उनका मुँह ताकते रह जायँ। वहाँ की वे स्त्रियाँ भी, जिन्हें गलियों में आवेश आ जाने पर खुले आम हाथ बढ़ा-बढ़ा कर बकनी-नवकनी बकने की आदत थी, अपने अपने स्वामी आचार्यों के पांडित्य के हिसाब से ही घमंड लेकर आपस में झोंटा-नुचौवल किया करती थीं। पंडितों के घरों के मैना-सुग्गे तक शास्त्रों के वाक्य बोला करते थे। वहाँ संस्कृत के उत्कृष्ट काव्य ही युवा रसिकों के शृङ्गार-भीने क्षणों का सहारा थे। नदिया हिन्दू शास्त्रों के महान् आचार्यों का गढ़ थी। बंगाल के लिए विशेष रूप से, यों भारत भर में हर जगह उनकी धाक जमी हुई थी। उनके धार्मिक फतवों हिन्दू समाज की जातियों में उतार-चढ़ाव आते थे, व्यक्तियों की मान-मर्यादाएँ ऊँची-नीची होती थीं।

दूसरों की मान-मर्यादाएँ उठाने-गिराने वाले इन महामहिम पंडितों की इज्जत को धूल चटाने के लिए लुटेरा बख्तियार नदिया जा पहुँचा। वह बड़ी धूर्तता और चतुराई के साथ नदिया में प्रवृष्ट हुआ था। उसने अपने लुटेरों की सेना तो आस-पास छिपा ली और स्वयं अठारह आदमियों को लेकर घोड़ों के सौदागर के भेष में निःशंक नगर में घुस गया। वह सीधे राजा के महल तक चला गया। उस पर शक करने की गुंजाइश ही न थी, लेकिन वहाँ पहुँचते ही उसने तथा उसके साथियों ने बड़े नाटकीय ढंग से अचानक मार-काट मचानी आरम्भ कर दी। पीछे-पीछे उसके छिपे हुए सैनिक भी नगर में इधर-उधर से प्रवेश करने लगे। देखते ही देखते नदिया में चारों ओर लूट-पाट और निर्मम हत्याओं का बाजार गर्म हो गया। नदिया-नरेश राय लखमनियाँ के असावधान लड़वैये इस अचानक आक्रमण से ऐसे घबराये कि जहाँ-तहाँ दुम दबाकर भाग खड़े हुए। स्वयं लखमनियाँ राय भी पिछवाड़े की राह से महल छोड़कर भाग गया। अपनी जान बचाने के लिए उस कायर ने अपने रनिवास और माल--खजाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की भी चिन्ता न की। उस समय तक नदिया ही बंगाल की राजधानी थी। परंतु मुसलमानों ने उसे त्याग कर गौड़ को बंगाल को नयी राजधानी बनाया।

चैतन्य के जन्मकाल के कुछ पहले सुबुद्धिराय गौड़ के शासक थे। उनके यहाँ हुसैनखाँ नामक एक पठान नौकर था। राजा सुबुद्धिराय ने किसी राज-काज को सम्पादित करने के लिए उसे रुपया दिया। हुसैनखाँ ने वह रकम खा पी कर बराबर कर दी। राजा सुब्रुद्धिराय को जब यह पता चला तो उन्होंने दंड स्वरूप हुसैनखाँ की पीठ पर कोड़े लगवाये।

हुसैनखाँ चिढ़ गया। उसने षड्यन्त्र रच कर राजा सुब्रुद्धिराय को हटा दिया। अब हुसैनखाँ पठान गौड़ का राजा था और सुबुद्धिराय उसका कैदी। हुसैनखाँ की पत्नी ने अपने पति से कहा कि पुराने अपमान का बदला लेने के लिए राजा को मार डालो। परन्तु हुसैनखाँ ने ऐसा न किया। वह बहुत ही धूर्त था, उसने राजा को जबरदस्ती मुसलमान के हाथ से पकाया और लाया हुआ भोजन करने पर बाध्य किया। वह जानता था कि इसके बाद कोई हिन्दू सुबुद्धिराय को अपने समाज में शामिल नहीं करेगा। इस प्रकार सुबुद्धिराय को जीवन्मृत ढग से अपमान भरे दिन बिताने के लिए 'एकदम मुक्त' छोड़कर हुसैनखाँ हुसैनशाह बन गया।

इसके बाद तो फिर किसी हिन्दू राजे-रजवाड़े में चूँ तक करने का साहस नहीं रह गया था। वे साधारण-से-साधारण मुसलमान से भी घबराने लगे। फिर भी हारे हुए लोगों के मन में दिन-रात साँप लोटते ही रहा करते थे। निरन्तर यत्र-तत्र विस्फोट हुआ ही करते थे। इसलिए राजा और प्रजा में प्रबल रूप से एक सन्देहों भरा नाता पनप गया। सन् १४८० के लगभग नदिया के दुर्भाग्य से हुसैनशाह के कानों में बार-बार यह भनक पड़ी कि नदिया के ब्राह्मण अपने जन्तर-मन्तर से हुसैनशाह का तख्ता पलटने के लिए कोई बड़ा भारी अनुष्ठान कर रहे हैं। सुनते-सुनते एक दिन हुसैनशाह चिढ़ उठा। उसने एक प्रबल मुसलमान सेना नदिया का धर्मतेज नष्ट करने के लिए भेज दी। नदिया और उसके आस-पास ब्राह्मणों के गाँव-के-गाँव घेर लिये गये। उन्होंने उन पर अवर्णनीय अत्याचार किये। उसके मन्दिर, पुस्तकालय और सारे धार्मिक एवं ज्ञान-मूलक संस्कारों के चिह्न मिटाने आरम्भ किये। स्त्रियों का सतीत्व भंग किया। परम-पूज्य एवं प्रतिष्ठित ब्राह्मणों की शिखाएँ पकड़-पकड़ कर उन पर लातें जमाईं, थूका; तरह-तरह से अपमानित किया। हुसैनशाह की सेना ने झुण्ड-के-झुण्ड ब्राह्मण परिवारों को एक साथ कलमा पढ़ने पर मजबूर किया। बच्चे से लेकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूढ़े तक प्रत्येक नर-नारी के होंठों से निषिद्ध मांस का स्पर्श कराकर उन्हें अपने पुराने धर्म में पुनः प्रवेश करने लायक न रखा। नदिया के अनेक महापंडित, बड़े-बड़े विद्वान समय रहते हुए सौभाग्यवश इधर-उधर भाग गये। परिवार बंट गये, कोई कहीं, कोई कहीं। धीरे-धीरे शांति होने पर कुछ लोग फिर लौट आये और जस-तस जीवन निर्वाह करने लगे। धर्म अब उनके लिए सार्वजनिक नहीं गोपनीय-सा हो गया था। तीज-त्योहारों में वह पहले का-सा रस नहीं रहा पता नहीं कौन कहाँ कैसे अपमान कर दे। नकटा जीये बुरे हवाल। पाठशालाएँ चलती थीं, नदिया के नाम में अब भी कुछ असर बाकी था, मगर सब कुछ फीका पड़ चुका था। लोग सहमी खिसियाई हुई जिन्दगी बसर कर रहे थे। अनास्था की इस भयावनी मरुभूमि में भी हरियाली एक जगह छोटे से टापू का रूप लेकर संजीवनी सिद्ध हो रही थी। नदिया में कुछ इने-गिने लोग ऐसे भी थे जो ईश्वर और उसकी बनाई हुई दुनिया के प्रति अपना अडिग, उत्कट और अपार प्रेम अर्पित करते ही जाते थे। खिसियाने पण्डितों की नगरी में ये कुछ इने-गिने वैष्णव लोग चिढ़ा-चिढ़ा कर विनोद के पात्र बना दिये गये थे। चारों ओर और मनुष्य के लिए हर कहीं अँधेरा-ही-अँधेरा छाया हुआ था। लोक-लांछित वैष्णव जन तब भी हरि-भक्ति थे।

यह संयोग की बात है कि श्री गौरांग का जन्म पूर्ण चन्द्रग्रहण के समय हुआ था। उस समय नदी में स्नान करते, दबे-दबे हरे राम, हरे कृष्ण जपते, आकाशचारी राहुग्रस्त चन्द्र की खैर मनाते सर्वहारा नर-नारी जन यह नहीं जानते थे कि उन्हीं के नगर की एक गली में वह चन्द्र उदय हो चुका है जिसकी प्रेम चाँदनी में वर्षों से छिपा खोया हुआ विजित समाज का अनन्त श्रद्धा से पूजित, मनुष्य के जीने का एकमात्र सहारा—ईश्वर—उन्हें फिर से उजागर रूप में मिल जायगा। अभी तो वह घुट-घुट कर रह रहा है, वह अपने धर्म को धर्म और ईश्वर को ईश्वर नहीं कह पाता है, यानी अपने अस्तित्व को खुलकर स्वीकार नहीं कर पाता है।

श्री चैतन्य ने एक ओर तो ईश्वर को अपने यहाँ के कर्मकाण्ड की जटिलताओं से मुक्त करके जन-जन के लिए सुलभ बना दिया था, और दूसरी ओर शासक वर्ग की धमकियों से लोक-आस्था को मुक्त किया।

नाचो-गाओ, नाम कीर्तन में मस्त रहो, ईश्वर मूर्तियों में मिले तो वाह-वाह वरना वह तुम्हारे मन में, वचन और कर्मों में सदा तुम्हारे साथ। उसके नाम पर निर्भर जियो। चैतन्य ने नाच-गाकर कृष्ण नाम लेने वाले दीवानों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुलूस निकलवा दिये। अहिंसात्मक विद्रोह करने का यह सामूहिक उपाय तब तक इतिहास में शायद पहली बार ही प्रयोग में लाया गया था। आतंक से जड़ीभूत जन-जीवन को श्री चैतन्य ने फिर से नवचैतन्य प्रदान किया। श्री चैतन्य अपने देशकाल की आस्था का प्रतीक बनकर अवतरित हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो

श्रीहट्ट क्षेत्र के ढाका-दक्षिण ग्राम में उपेन्द्र मिश्र नामक एक वैदिक ब्राह्मण रहते थे। उनके सात पुत्र थे। तीसरे बेटे का नाम जगन्नाथ था। न्यायशास्त्र पढ़ने की इच्छा से जगन्नाथ अपना घर-गाँव छोड़कर नवद्वीप में आ बसे। वे गुरु सार्वभौम की पाठशाला में पढ़ने लगे। वे बड़े ही रूपवान और मृदुभाषी नवयुवक थे। सारे नवद्वीप में जगन्नाथ अपनी इसी विशेषता के कारण भी सुख्यात हो गये थे, वैसे नये पण्डितों में भी उनका मान था।

उन दिनों नदिया में नीलांबर चक्रवर्ती नामक एक प्रकांड पण्डित और ज्योतिषी रहा करते थे। पुराना और प्रतिष्ठित घराना, तिस पर सार्वभौम महाराज से उनका घना नेह-नाता था। नीलाम्बर सार्वभौम के सभी शिष्यों को भलीभाँति जानते थे। उनके एक कन्या और दो पुत्र थे। कन्या का नाम शची देवी था। वह रूपवती, गुणवती और परम सुशीला थी। नीलाम्बर जब कभी उसके विवाह की बात सोचते तो घूम-फिरकर भारद्वाज गोत्रीय जगन्नाथ मिश्र के प्रति ही उनका मन बार-बार आकर्षित होता था। ज्योतिष विद्या के प्रकाण्ड विद्वान् नीलाम्बर चक्रवर्ती महाशय अपने मन के इस आग्रह की अवहेलना न कर सके। उन्होंने दोनों की जन्म पत्रिकाएं मिलाकर देखीं। उन्हें लगा कि जगन्नाथ और शची विधि के विधान से ही एक-दूसरे के होकर इस पृथ्वी पर जन्मे हैं। उन्होंने सार्वभौम से मिलकर जगन्नाथ को अपनी पुत्री के लिए माँग किया। सार्वभौम महाराज भी इस सम्बन्ध में बड़े सन्तुष्ट थे। जगन्नाथ उनके प्रिय और पट्टु शिष्यों में से थे। अपने पाण्डित्य से उन्होंने नदिया की नई पीढ़ी के पण्डितों में आदर का स्थान पा लिया था। शुभ लग्न में जगन्नाथ और सची देवी दाम्पत्य सूत्र में बँध गये।

नदिया में श्रीहट्ट क्षेत्र के अनेक ब्राह्मण रहते थे। उनका एक अलग महल्ला बसा हुआ था। विवाह होने पर जगन्नाथ जी भी सपत्नीक उसी महल्ले में एक घर लेकर बस गये। आतंक और अनास्था के जमाने में पण्डितों की आमदनी यद्यपि पहले की सी नहीं रह गयी थी फिर भी जगन्नाथ जी की पांडित्य-प्रतिभा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने उन्हें और उनके पारिवारिक को कभी विशेष अभावग्रस्त नहीं रहने दिया। एक-एक करके शची जगन्नाथ के आठ कन्याएँ हुईं परन्तु उनमें से एक भी न बची। फिर एक पुत्र हुआ। यह बालक शुरू से ही तेजस्वी और मेधावी था। जगन्नाथ जी ने अपने पुत्र का नाम विश्वरूप रखा। पुत्र को पाकर पति-पत्नी के जीवन में हरियाली छा गई।

जगन्नाथ को अपनी जन्मभूमि श्रीहट्ट छोड़े अनेक वर्ष हो गये थे। उनके माता-पिता उन्हें और अपनी सौभाग्यवती पुत्रवधू तथा चिरंजीवी पौत्र को देखने के लिए बड़े लालायित थे। उनका आदेश पाकर जगन्नाथ सपरिवार अपने गाँव गये। घर में आनंद छा गया। एक दिन शची देवी की सास ने रात में एक अद्भुत स्वप्न देखा। स्वप्न में एक अनन्त ज्योति पुरुष ने उनसे कहा, "मैं तुम्हारा पौत्र बनकर आ रहा हूँ, पर यह गाँव मेरी जन्मभूमि नहीं है। अपने बेटे-बहू को नदिया लौट जाने का आदेश दो।' स्वप्न चमत्कारी था। विश्वरूप की दादी को स्वप्न के इस आदेश के कारण अपने मन का मोह त्यागना ही पड़ा। उन्होंने बेटे से कहा—"बहू को लेकर नदिया लौट जाओ। मेरे घर भगवान् पधारेंगे।"

अजीब थी यह बात। आस्थावान् होते हुए भी जगन्नाथ इस बात पर सहसा विश्वास न कर सके। परन्तु एक ओर माँ की आज्ञा और दूसरे उन्हें स्वयं भी नदिया की याद कुछ-कुछ सता रही थी इसलिए उन्होंने लौटने की तैयारी आरंभ कर दी। जगन्नाथ को यह भी मालूम हुआ कि आठ-नौ वर्षों के बाद उनकी अखंड सौभाग्यवती अर्धाङ्गिनी ने फिर से गर्भ धारण किया है। मिश्रजी अपने मन में रहस्य से बँधे-बँधे पुत्र और पत्नी को लेकर नदिया लौट आये।

दिन बीतने लगे। नौ महीने पूरे हुए, सौरी के लिए प्रबंध होने लगा लेकिन वह महीना ऐसे ही बीत गया। खैर यह कोई अनहोनी बात नहीं थी। टोले-महल्ले की सयानी बड़ी-बूढ़ियाँ कहने लगीं कि दसवें महीने में तो लड़का ही होगा। धीरे-धीरे दसवाँ महीना भी पूरा होने लगा; औरतें नाक पर उँगली नचा नचाकर आपस में चर्चा करने लगीं—'हाय राम, दसवाँ महीना भी अब अब करीब-करीब पूरा होने को आ चला लेकिन शची बहू के पेट का भार हल्का क्यों नहीं हुआ?' जब दसवाँ महीना बीत चला तो सबकी चिन्ता व्यापने लगी। शची देवी के पिता नीलाम्बर महाराज ने प्रश्न कुण्डली बनाकर विचार किया। उन्होंने अपने जामाता से कहा—"घबराने की बात नहीं, मेरी बेटी की कोख से किसी दिव्य पुरुष का जन्म होगा।"

फिर वही रहस्य की बात आ गई। जगन्नाथ मिश्र एक मानसिक पहेली के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भँवर जाल में फँस गये। राम-राम करते वह शुभ दिन भी आ गया जिसकी प्रतीक्षा थी। फागुन का महीना था और पूर्ण चन्द्रग्रहण की रात। अखण्ड सौभाग्यवती शची देवी मिश्रा की कोख से उनके द्वितीय पुत्र ने जन्म लेकर मानो अँधेरे में उजाला कर दिया।

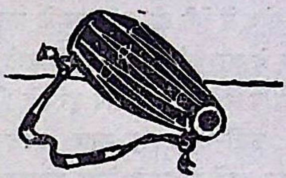

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन

जगनाथ ने अपने पुत्र का नाम रखा विश्वंभर। बालक जन्म से ही चमत्कारी था। उसका कद औसत बच्चों से अधिक था, और रंग-रूप तो ऐसा सुहाना था कि नरनारी गण उसे देख-देख कर मोहते थे। तपे सोने के वर्ण का दिव्य बालक अपनी गोद में लेकर अपने घर-आँगन में घूमते-फिरते शची देवी के आनंद का वारापार न रहा। उसे गोद में लेते ही माँ-बाप के मन में सहसा ऐसी आनंद-पुलक होने लगती थी कि वे आश्चर्य से उभचुभ हो जाते थे। आपस में कहते कि यों तो अपने बच्चों को गोद में लेकर माँ-बाप हरखते ही हैं लेकिन विश्वंभर की बात कुछ और ही है। कभी-कमी काम-काज करके शची देवी जब सोने के कमरे में अपने बेटे के पास आयें तो उन्हें ऐसा अनुभव हो कि खटिया पर एक ज्योति पुंज चमक रहा है। हे राम, यह बालक कौन जीव है ? ऐसा चमत्कार तो और किसी बच्चे के साथ देखने में नहीं आता। वे अपने पति को आवाज देती—"सुनते हो, जरा मेरी निमाई को तो आकर देखो, कैसा दीपू-दीपू चमक रहा है। कहीं किसी ने तंत्र-मंत्र तो नहीं किया ?" जगन्नाथ हँसकर कहते हैं—"ज्योतिष के अनुसार मेरा विश्वंभर महापुरुष है, इस पर कोई जादू-टोना नहीं कर सकता।"

माँ को यह बात सुनना मन ही मन अच्छा तो लगता है पर इसका बार-बार कहा जाना भी उन्हें नहीं सुहाता। बच्चा महापुरुष हो या कोई हो, पर है तो मेरी कोख से उत्पन्न होने वाला बालक ही। मेरे लिए तो यह मेरा निमाई ही है। जच्चा घर के पास नीम का पेड़ था इसलिए जिस दिन बच्चे का नाम-करण हुआ उस दिन माँ ने कहा—" 'वह' भले ही विश्वंभर कह कर पुकारें पर मैं इसे निमाई कहकर ही पुकारा करूँगी।" माँ का दिया हुआ नाम ऐसा चला कि सब उसे इसी नाम से पुकारने लगे।

निमाई शुरू से ही हठी था। अपनी बात मनवाने के लिए वह ऐसा रोना साधता कि घर में ले दे पड़ जाती थी। वह रोते-रोते बेहाल हो जाया करता था। अपने हठ की पूर्ति के लिए रोने की आदत लाड़-प्यार पाने वाले बच्चे में पनपती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही है इसलिए यह कोई विशेष बात न थी, पर विशेषता यह थी कि बच्चा कभी-कभी किसी ऊपरी कारण के बिना भी अचानक रोने लगता था। एक दिन शची देवी को न जाने क्या सूझी कि जब निमाई का रोना किसी तरह से बंद न हुआ तो बच्चे के रोने के जवाब में उन्होंने गाना शुरू कर दिया। संस्कार-शुद्ध निर्मला ब्राह्मणी गाती तो भला क्या गाती, हरि-कीर्तन सुनाने लगी। उन्हें यह देखकर अचंभा हुआ कि बच्चा रोते-रोते अचानक टप से चुप हो गया। शची देवी कीर्तन गाती रहीं और निमाई टुकुर-टुकुर माँ का मुख निहारता रहा। उस दिन से शची माता को अपने निमाई को चुप कराने का एक अनोखा साधन हाथ लग गया।

गोरा-चिट्टा, बड़ी-बड़ी आँखों और मनमोहन रूप वाला बच्चा स्वाभाविक रूप से गली-पड़ोस की नर-नारियों का खिलौना बन गया था। वह नित्य ही कोई नटखट लीला करता और सबका मन मोह लेता था। एक अनोखापन यह भी था कि निमाई को गोद में लेते ही मनुष्य अपने शरीर में आनंद-तरंगें प्रवाहित होते हुए अनुभव करने लगता था। सभी कहते कि बच्चे को छूने मात्र से ही अलौकिक सुख मिलता है।

बच्चा घुटनुओं चला; खड़ा होने लगा और देखते ही देखते दौड़-भाग के दिन भी आ गये। बच्चा कभी-कभी मौका पाकर घर से बाहर भी निकल जाता। कभी किसी के छेड़ में और कभी-कभी अपने खोयेपन की दशा में वह अनायास ही दौड़ने लगता और इतनी तेज दौड़ता था कि उसे पकड़ने में बड़े-बड़ों को पसीना आ जाता था। शची देवी घर के काम-काज करते हुए भी अपना एक ध्यान सदा निमाई की ओर ही रखती थीं, फिर भी वह कब सबकी नजरें बचा कर बाहर निकल जायगा यह कहना कठिन था।

एक दिन निमाई गली में एक कुत्ते के पिल्ले पर मोहित हो गया, उसे उठा कर घर ले चला। ब्राह्मणों का मुहल्ला, सभी एक निषिद्ध जीव के साथ खेलने वाले ब्राह्मणकुमार को टोकने लगे—'हैं, हैं! ये क्या करता है। पिल्ले को छोड़ दे। इसे नहीं छूते हैं भैया। अरे, घर में मत ले जा।' पर अपनी धुन में रमे रहने वाले निमाई पर भला इन बातों का क्या असर पड़ सकता था। जिस काम के लिए उसे मना करो वह उसे अवश्य ही करेगा। निमाई कुत्ता लेकर घर में घुसने लग गया। संस्कार-शुद्ध घर-समाज में हो-हो होने लगी। खैर, बड़ी खुशामद और मनावन के बाद उसने कुत्ते के पिल्ले को गली में छोड़ा। वह नहलाया धुलाया गया। इसके बाद बच्चे ने एक नई जिद पकड़ ली।

पड़ोस मे जगदीश-पण्डित और हिरण्य भागवत नामक दो ब्राह्मणों के घर थे। एकादशी के दिन उनके यहाँ भगवान् का विशेष भोग लगता था। निमाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने उसके लिए रोना शुरू किया। निमाई के रोने से सारा घर घबराता था। रोते-रोते वह अपना बुरा हाल कर लेता था, यहाँ तक कि कभी-कभी साँस चढ़ा लेता था, मूर्छित भी हो जाता था। इसीलिए निमाई का रोना सुनते ही शची देवी हाथ लगे हजार काम छोड़कर उसे चुप कराने के लिए दौड़ीं। बार-बार पूछने पर निमाई रोते हुए बोला : "हिरण्य भागवत और जगदीश पण्डित के यहाँ एकादशी का नैवेद्य बना है, मैं वह खाऊँगा।"

"अरे पगले, नैवेद्य तो भगवान् के लिए बना है। तुझे कैसे मिल जायगा ?"

"मुझे छोड़कर दूसरा भगवान् कौन है ? मुझे तो जगदीश से घर का नैवेद्य ही खाना है। वह लाओ नहीं तो मैं जोर-जोर से रोऊंगा।"

"अच्छा ठहर, मैं तेरे लिए वैसा ही फलाहार बनाए देती हूँ।"

"नहीं, मैं तो वही खाऊँगा जो जगदीश और भागवत के यहाँ बना है।"

माँ बेचारी अब क्या करे। पराये घर की बात, दूसरे जब तक भगवान् का भोग न लग जाय तब तक बच्चे का हठ पूरा करने के लिए वह जरूर माँगे भी तो किस मुँह से माँगे। सभी कहेंगे कि बच्चा तो बच्चा, पर यह शची कैसी है जो जान-बूझ कर भी माँगने आई है। बच्चे की ऐसी हठ लीलाएं देख कर शची देवी को कभी-कभी यह लगता था कि निमाई अपने वश में रह कर ऐसा नहीं करता वरन् उसके ऊपर कोई छाया आती है। इस समय भी माँ को वही शंका हुई। बच्चा रोते-रोते बेहाल हुआ जाता था। उसके पसीने छूटने लगे, धूल पसीने से सनी हुई देह ऐसी लगती है जैसे बादलों में सूरज। माँ अपने बच्चे के हर रूप पर मोहने के लिए विवश है और यह मोह उसके क्रोध और झुंझलाहट को शमित भी कर देता है, पर उसके बाद भी तो राह नहीं मिलती। वह बेचारी करे तो क्या करे।

"अरे क्यों रो रहा है निमाई ?"

आस-पास के घरों की मुंडेरे चढ़कर औरतें पूछने लगीं और होते करते जगदीश तथा हिरण्य भागवत के पास भी यह खबर पहुँच गई कि निमाई उनके घर में बने भगवान् के भोग के वास्ते रो रहा है।

संयोग की बात दोनों भाई उस समय ठाकुर जी को भोग लगाने ही जा रहे थे, एकाएक दोनों ही के मन मे यह भाव आया कि निमाई के रूप मानो साक्षात् बाल-गोपाल ही आज प्रत्यक्ष होकर उनके द्वारा अर्पित नैवेद्य ग्रहण करने की कामना कर रहे हैं। जगदाश बोले—"चलो भाई, आज प्रत्यक्ष गोपाल को भोग लगाकर अपना जन्म सार्थक करें।" वे बड़े भाव से भोग लेकर आये। अपना हठ पूरा होते देखकर निमाई पट से चुप हो गया, हंसने और आनंद मनाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगा। कुछ खाया, कुछ अंग लिपटाया, कुछ बिखराया। घर-वाहर के सभी लोग खड़े तमाशा देख रहे थे। निमाई अपनी बाल लीला से सबका मन मोह रहा था।

यह सब हुआ, बात भी बन गई; पर शची के मन की चिन्ता बढ़ गई—'मेरी कोख से यह कौन जन्मा है भगवान्। यह रिझाता भी है और खिझाता भी, लेकिन ऐसा लगता है कि जो कुछ भी करता है, वह अपने वश में रहकर नहीं करता है। यह कैसी लीला है!'

बच्चे को अब एक नई धुन चढ़ गई। चार हमजोली मुँह-बोली बहू-बेटियाँ अपने खाली समय में जहाँ कहीं मन बहलाव के लिए जुड़ें और गाने लगें तो निमाई तुरन्त नाचने लगता था। भले घर की बहू-बेटियाँ, फिर नदिया का वातावरण, वे गातीं भो तो भगवान् के भजन ही गाया करती थीं। वैष्णवों के कीर्तनों ने अपनी कोमलता और शृङ्गार भावना के कारण प्राय: अवैष्णव घरों के लोगों का मन भी मोह लिया था। बहू-बेटियाँ खास तौर से उन्हें गाया करती थीं। निमाई का नृत्य उनके गायन के इस आनंद को चौबाला-अठबाला करने लगा। अब तो जहाँ कहीं चार लड़कियाँ जुड़ें वहीं निमाई को भी बहका कर ले जायँ। उसे मिठाई खाने के लिए दें, मीठी-मीठी बातों से रिझावें और ताली दे-देकर हरि बोल, हरि बोल गाते हुए उसे नृत्य के लिए प्रेरित करें। निमाई का नाच देखने के लिए बहू-बेटियाँ ही नहीं, बूढ़ी-ठूढ़ियाँ भी अपने सारे वाक्-प्रपंच छोड़कर घिर आती थीं। गलियों में बड़े-बूढ़े तक निमाई को नृत्य के लिए प्रेरित कर देते थे पर निमाई के इस नृत्योन्माद का लोकानन्द शची माँ के उर-अन्तर का सबसे बड़ा भय बन गया। बच्चे का नाचना तो उसके रोने से भी कहीं अधिक बावलेपन भरा था। जब वह नाचता है तो बस नाचता ही चला जाता है। उसके पैर नहीं थकते। मना करने पर वह और भी चग पर चढ़ जाता है। अब तो लोगों का सिखाया हरि बोल, हरि बोल कह-कहकर नाचते उसके मुँह से फिचकुर तक निकल पड़ते हैं, वह बेहाल हो जाता है। यह दशा देख-देखकर माँ अपने भीतर ही भीतर बेहोश न हो तो और क्या करे।

शची देवी के लिए निमाई ही नहीं, उनका बड़ा बेटा विश्वरूप भी एक समस्या बन गया था। विश्वरूप निमाई से लगभग दस वर्ष बड़ा था। पढ़ने में तेज था, पिता सोचते थे कि चार दिन में पढ़-लिखकर उनका सहारा बनेगा। पर विश्वरूप की मनोदशा दिनों-दिन उसे किसी दूसरे दिशा में ही बहाए लिये जा रही थी। नवद्वीप में कमलाक्ष मिश्र नामक वारेन्द्र श्रेणी के एक वैष्णव ब्राह्मण रहा करते थे। उनका निवास स्थान यों तो शान्तिपुर में था पर नदिया में भी उन्होंने एक घर ले रखा था। योग, तप और भजन-साधन में वे बढ़े-चढ़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए थे। श्रीमद्भागवत और गीता के अद्वितीय पण्डित थे। नदिया के लोग उन्हें अद्वैताचार्य कहकर सम्बोधित करते थे। उनके घर पर नदिया के अल्पसंख्यक वैष्णवों की एक छोटी सी मण्डली जुड़ा करती थी। विश्वरूप वहाँ आने जाने लगा। अद्वैताचार्य कमलाक्ष मिश्र जी विश्वरूप से बड़े प्रसन्न थे। वह अपने साथी संगियों से एकदम अलग था। उसके सहपाठी तन्त्र, न्याय, मायावाद आदि अनेक विषयों पर गप्पें लड़ाते किन्तु विश्वरूप को कोरी गाल-वजाऊ पण्डिताई में सुख नहीं मिलता था। अद्वैताचार्य की वैष्णव सभा में जाने पर उसे लगा कि यहाँ जैसी शांति नदिया में और कहीं भी नहीं मिलती। फिर तो यह क्रम बन गया कि वह लगभग आठो पहर वहीं रहने लगा। विश्वरूप पाठशाला के बाद पहले तो नित्य-प्रति अपने घर आ जाया करता था और दोपहर भर कहीं नहीं जाता था किन्तु अब अद्वैताचार्य का घर छोड़कर उसका मन और कहीं नहीं लगता था। विश्व-रूप को जब आने में देर-सबेर हो जाती तो माँ निमाई को उनके यहाँ भेज कर उसे बुलाया करती थीं। निमाई जब अद्वैताचार्य के यहाँ जाता तो वे उसे मंत्र-मुग्ध होकर देखने लगते थे। देखते-देखते उनकी टकटकी-सी बँध जाती थी। कभी-कभी कहते कि यह बच्चा जब आता है तब मेरा मन अपने वश में नहीं रह पाता। जाने इसमें क्या विशेषता है कि मुझे बरबस अपनी ओर खींच लेता है। विश्वरूप भी अपने छोटे भाई को बहुत चाहता था।

धीरे-धीरे विश्वरूप का वैराग्य भाव दिनोंदिन प्रगाढ़ होता गया। माता-पिता को चिन्ता लगी। जब से विश्वरूप अद्वैताचार्य के यहाँ अधिक समय बिताने लगा था तब से तो कभी-कभी ऐसे बालक भी बन जाते कि जगन्नाथ जी कई-कई दिनों तक अपने बड़े बेटे की झलक भी नहीं देख पाते थे। शची देवी ने एक दिन अपने पति से कहा, "अब विश्वरूप के ब्याह की चिन्ता करो, लड़का सयाना हो गया है।"

जगन्नाथ बोले, "हाँ, मैं भी यही सोचता हूँ। आजकल ऐसा बुरा समय आ लगा है कि नदिया के ब्राह्मण युवक थोड़ा सा ज्ञान लाभ करते ही संन्यासी हो जाते हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा इस तरह संन्यासी बने।"

परन्तु विधि के विधान को कौन मेट सकता है। विश्वरूप का एक साथी था, लोकनाथ। वह उसका ममेरा भाई था। यों तो वह विश्वरूप का समाध्यायी और समवयस्क था किन्तु वह उसके प्रति गुरु की भाँति ही भक्ति-भाव रखता था। धीरे-धीरे उन दोनों की ज्ञान की दुनिया में रमते-रमते 'ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या' का आभास होने लगा था। वे घर छोड़ने की सोचने लगे।

एक दिन दोपहर में जब विश्वरूप घर आया तो देखा कि माँ निमाई के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंगे पर नाराज हो रही थीं। वह किसी के घर भगवान् के भोग की थाली को जुठार आया था। माँ अपने छोटे बेटे पर जितनी मुग्ध थीं उतनी ही उससे असन्तुष्ट भी थीं। बड़े बेटे के सामने वे बड़ी देर तक अपना दुख और चिन्ता प्रकट करती रहीं। विश्वरूप सुनता रहा, कुछ बोला नहीं। माँ ने उसे भोजन कराया फिर वह अपनी कोठरी में गया, कुछ देर बैठा फिर एक ग्रन्थ छाँट कर उठाया और बाहर आकर माँ से कहा—"माँ, निमाई जब बड़ा हो जाय तो उसे यह ग्रन्थ पढ़ने के लिये दे देना।"

"ईश्वर जाने यह पढ़े लिखेगा भी या ऐसे ही दंगे मचाता रहेगा।" माँ ने झुँझलाकर उत्तर दिया।

विश्वरूप ने उत्तर दिया : "यह एक दिन जगद्गुरु बनेगा माँ।"

उसी दिन आधी रात के समय सोते हुए माता-पिता को प्रणाम करके तथा छोटे भाई को मन ही मन में आशीर्वाद देकर विश्वरूप घर से चला गया। लोकनाथ भी उसके साथ ही अपना घर छोड़ आया था। दोनों साथी संसार त्यागी बन गये। कुछ दिनों बाद शंकराण्य पुरी नामक पुरी संप्रदाय के एक तपोनिष्ठ संन्यासी से विश्वरूप ने गुरुमन्त्र लेकर संन्यास धारण कर लिया। लोकनाथ ने विश्वरूप को अपना गुरु बनाया।

बड़े लड़के के गृह-त्याग से माता-पिता को गहरा धक्का लगा। सवेरे उठने पर माँ ने जब बेटे को न देखा तो समझा कि जल्दी उठकर गंगा जी चला गया होगा फिर दिन चढ़ने लगा तो सोचा कि शायद वहीं से वह अपनी पाठशाला चला गया है। जब पाठशाला का भी समय बीत गया तो माँ ने अपने खेल में मस्त निमाई से खुशामद की, "जा रे, अद्वैत महाराज के यहाँ से अपने दादा को बुला ला। कहना माँ ने खाने के लिए बुलाया है।" निमाई गया, और अद्वैताचार्य जी से कहा, "दादा कहाँ हैं? माँ उन्हें खाने के लिये बुला रही हैं।"

"तेरा दादा तो आज यहाँ नहीं आया बेटा।" निमाई ने घर आकर यह सूचना दी। शची देवी ने फिर अपने मैके में बेटे को तलाश करवाया। लोकनाथ उनके भाई का पुत्र था, सोचा कि दोनों लड़के साथ ही साथ होंगे। वहाँ पता चला कि दोनों ही लड़के आज ही सवेरे ही से नहीं दिखलाई दिए। अब तो हाय-तोबा मच गई। गली-गली में ढुंढ़ौवा पड़ा। पास-पड़ोस की स्त्रियाँ जुट आईं। यही चर्चा होने लगी कि जान पड़ता है कि दोनों लड़के संन्यासी हो गये। विश्वरूप की आदतों का बखान होने लगा। वह लड़का तो शुरू से ही वीतराग था। संन्यासी होना ही उसकी गति थी। चलो अच्छा हुआ, जगन्नाथ के घर में ऐसा कुलतारन पैदा हुआ कि संन्यासी होकर चौदह पीढ़ियाँ तार दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शची और जगन्नाथ दुःख के मारे बेहाल हो रहे थे। कहाँ तो वे यह सोचते थे कि लड़के का ब्याह होगा। वहू आयेगी, थकती उमर में शची-जगन्नाथ को सुख-सहारा मिलेगा और कहाँ यह दिन देखने को मिला। शची देवी पुत्र-शोक-वश बारबार मूर्छित हो जाती थीं। छः वर्ष का नन्हा निमाई घर में व्याप्त इस रुदन और शोक से स्तंभित हो गया था। वह पहले तो बड़ी देर तक दादा-दादा करके रोता रहा फिर एकाएक सम्हलकर अपनी माँ से चिपटकर उन्हें सांत्वना देने लगा। बोला—"माँ, तुम और बाबा अपने जी को छोटा न करो। दादा चले गये तो क्या हुआ, मैं बड़ा होकर पढ़-लिखकर तुम दोनों का पालन करूंगा।" नन्हें बच्चे की इस भोली-सी बात ने गहरे शोक में भी माँ को सुख दिया। पास बैठे स्त्री-पुरुष निमाई की वाही-वाही करने लगे। माँ ने उसे कलेजे से चिपटा लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार

एक ओर जहाँ चार जनों में निमाई की इस भोली-सी बात की चर्चा चल रही थी वहाँ ही बच्चे की शिक्षा-दीक्षा के संबंध में पण्डित जगन्नाथ मिश्र के मन में एक भयंकर द्वन्द्व मच रहा था। पढ़ाई के कारण ही एक पुत्र को खोकर वे बार-बार यही सोचते कि मेरा विश्वम्भर भी यदि यही घोटा लगायेगा कि 'यह संसार अनित्य है, अनित्य है' तो एक दिन यह भी निश्चय ही संन्यासी होकर निकल जायगा। पण्डित जी अपने दूसरे बेटे को इस तरह खोने से लिए तैयार न थे।

मुसलमानों के आक्रमणों और अत्याचारों के फलस्वरूप संसार की अनित्यता और दुःखमयता का चर्चा आये दिन गली-घाटों पर हर जगह हुआ ही करता था। श्मशान जैसे मनहूस जीवन-क्रम में इस विचार के अतिरिक्त भला और कुछ पनप ही क्या सकता था। पण्डित जगन्नाथ अपने दूसरे बच्चे को इस प्रकार के पांडित्य से दूर रखने का हठ ठान रहे थे।

इधर भाई के जाने के बाद बालक निमाई के मन में पढ़ने की ऐसी लगन जागी कि दिन रात 'बाबा हमें पढ़ाओ' की रट बाँध ली। एक दिन जगन्नाथ जी ने गम्भीर स्वर में कहा—"पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। खेलो खाओ मौज करो।"

बच्चा थोड़ी देर तक स्तब्ध होकर अपने पिता का मुँह देखता रहा फिर हँसा और बाहर चला गया। शची देवी पति के पास आईं और विनम्र भाव से कहा—"ब्राह्मण का पुत्र पढ़ेगा नहीं तो फिर और क्या करेगा?"

"कुछ भी करे, घास छीले, परन्तु मैं इसे पण्डित नहीं बनाऊँगा। आजकल विद्या पढ़ाने का अर्थ है बच्चे को संन्यासी बना देना। मैं यह जुआ खेलने को तैयार नहीं हूँ।"

निमाई का उत्पात दिनोदिन बढ़ने लगा। खालीपन में भला वह और कर ही क्या सकता था। किसी के घर में घुसकर कोयले के बारीक चूरे से सोते हुए बच्चे के दाढ़ी-मूँछें बना आता, किसी के रसोईघर में पहुँचकर उत्पात मचाता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी को राह चलते छेड़ता, बस यही उसका काम रह गया था। धीरे-धीरे निमाई नदिया भर के दंगई बच्चों का सरगना बन गया। कभी-कभी रात-रात भर उसका पता नहीं चलता था। चद्दर ओढ़कर दो शिशु बैल के समान चार पैरों से चलते हुए चाँदनी रात में किसी ऐसे घर की बाड़ी में घुस जाते जहाँ केले लगे रहते। लड़के केलों की गौद की गौद चद्दरों में बाँध लाते। पके-पके खा जाते कच्चे रौंदकर नष्ट कर डालते। कभी रात में अनेक टोलों के घरों की कुंडियाँ बाहर से बन्द कर आते और सवेरे अपने-अपने घरों में कैद गृहस्थ लोग हाय-तोबा मचाते थे। एक दिन विष्णु नैवेद्य बनाकर घूरे पर फेंकी गई हंडियों के ढेर पर मस्तराम निमाई जी बैठ गये और टूटी हुई हंडियों के टुकड़ों की कालिख अपने नन्हें-नन्हें हाथों में मलकर अपने साथियों के हाथ-मुँह पोतने लगे। उनके साथी उनके साथ भी यही कर रहे थे। जो देखता वही कहता कि हाय-हाय, बाँभन का पूत नीच जाति के छोकरों के साथ हुड़दंग मचा रहा है। होते करते जगन्नाथनन्दन की यह अशौच लीला की खबर शची माता के कानों में भी जा पहुँची। वे बेचारी भागी-भागी आईं और निमाई को पकड़ कर पीटते हुए जली-कटी सुनाने लगीं। रोते हुए निमाई ने गला फाड़ कर कहा—"करूँगा, करूँगा और करूँगा। जब तुम लोग मुझे पढ़ाओगे नहीं तब मैं यही सब करूँगा।"

आस-पास खड़े लोग बच्चे की बात का समर्थन करने लगे। माँ ने कहा कि बेटे का बाप संन्यासी बनने के भय से उसे नहीं पढ़ाना चाहता। लोगों ने कहा कि हम मिश्र जी को समझा लेंगे। सबसे आश्वासन पाकर ही निमाई गंगा स्नान करने गये। पास-पड़ोस वालों ने जगन्नाथ मिश्र को किसी न किसी तरह समझा ही लिया निमाई उर्फ विश्वम्भर प्रसाद मिश्र का उपनयन संस्कार करने की योजना बनी। घर में चहल-पहल हुई, द्वारे पर बाजे बजने लगे। हल्दी तेल लगा कर निमाई को नहलाया गया। अच्छे-अच्छे विद्वान् ब्राह्मण उत्सव की शोभा बढ़ाने आये थे।

उसी समय निमाई उर्फ विश्वम्भर के जीवन में पहली बार वह चमत्कारी घटना घटी जो बाद में उनके जीवन की विशेषता बन गई थी। नहा-धोकर जब बच्चे ने पवित्र लाल वस्त्र पहना तो वह ऐसा सुन्दर लग रहा था कि देखने वालों की नजरें उसके अनुपम कान्तिमय शरीर को बस देखती ही रह गईं। किसी शुभचिंतिका ने टोका—"हाय मेरे बच्चे को यों न देखो, कहीं किसी की कुदृष्टि न लग जाय उसे।" इस पर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए यज्ञ मण्डप की ओर जा रहा बालक ऐसा खिलखिलाया कि लोगों पर मोहिनी छा गई। किन्तु पिता ने उसके जब कान में गायत्री मन्त्र उच्चारित किया तो सुनते ही बालक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकाएक आवेश में आ गया। उसने बड़ी जोर से हुङ्कार भरी और गर्जन किया गरजने के साथ ही वह आसन से लुढ़ककर धरती पर गिरा और अचेत हो गया। सब लोग बच्चे की तरफ दौड़े। निमाई अचेत था ही किन्तु उसकी आँखें अध-खुली हुई थीं और धरती पर आँसू टपाटप टपक रहे थे; यही नहीं बच्चे का चेहरा कुछ-कुछ अलौकिक रूप से चमक रहा था। आँखों में आँसू, होंठों पर मुसकान—बेहोशी तो लोगों ने बहुत बार देखी थी पर ऐसी बेहोशी पहले कभी नहीं देखी। उपस्थित पंडित समुदाय नूतन ब्रह्मचारी के पूर्वावेश और इस अद्‌भुत अचेतावस्था को देखकर अवाक् हो गया। देशकाल की धारणा के अनुसार लोगों में, आम-तौर से स्त्रियों में यहीं सयानपनभरी कनफुसकियाँ चलने लगीं कि हो न हो ब्रह्म-राक्षस इसके सिर पर चढ़ गया है। दंगई तो है ही, बरगद पीपल तले काई उल्टा सीधा काम कर आया होगा जिसका वदला ब्रह्मराक्षस यों ले रहा है।

बच्चे को होश में लाया गया। वह बैठा दिया गया। उसके आँसू तो थम गये थे पर टकटकी कहीं अदृश्य में बँधी हुई थी, होंठों पर मुस्कान खिल रही थी। 'अच्छे हो, कैसे हो, कोई कष्ट तो नहीं है' किस्म के लाड़-भरे प्रश्नों का उत्तर वह बहुत पूछने पर प्रायः सिर हिलाकर ही देता। होश में आ जाने पर भी उसमें यह आनन्द भरा खोयापन बना रहा। औरतों-मर्दों की भूत-प्रेत, ब्रह्म-राक्षस आदि की बातें भी होती रहीं। सुनते-सुनते एक बुढ़ऊ पंडित नाराज हो गये। झिड़ककर कहा—"क्या अज्ञानियों जैसी बातें कर रहे हो तुम लोग? अरे यह मोहिनी छवि देखो! यह तेज भला किस आसुरी शक्ति का हो सकता है? आहा, बस हाथ में मुरली और माथे पर मोर मुकुट पहनाने को देर है, निमाई के रूप में साक्षात् कृष्ण कन्हैया दर्शन दे रहे हैं। द्वापर में वह साँवले थे, अब कल-युग में गोरा होकर मोहन आये हैं। यह गौर हरि हैं।" बुढ़ऊ ने ऐसे भावभीने स्वर में बात कही कि लोगों के मन चढ़ गई। उसी दिन से माँ का निमाई और पिता का विश्वम्भर जनता का गौरहरि भी बन गया।

ब्रह्मचारी के लिए भिक्षा माँगना भी रीत्यानुसार आवश्यक होता है। इस-लिए निमाई भी भिक्षा माँगने लगा। सभी ने अपने-अपने नाते और व्यवहार के अनुसार जगन्नाथ मिश्र के बेटे को भिक्षा दी। एक दरिद्र ब्राह्मण था, बेचारे के पास देने के लिए एक सुपारी ही थी, उसने बड़े प्रेम से आशीर्वाद देते हुए 'गौर-हरि के हाथ में सुपारी रख दी। दाता की आँखों का प्रेमभाव बालक की आँखों में भी वही ज्योति जगा गया। हंसते हुए उसने सुपारी मुंह में डाल ली। चबाते-चबाते एकाएक बड़े गम्भीर स्वर में आवाज दी, 'माँ!'

शची माता तुरन्त आईं। बालक सबके सामने ही अपनी माँ से आवेश भरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर में बोला—"माँ, अब से एकादशी के दिन तुम आजीवन अन्न ग्रहण नहीं करोगी।" निमाई के कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि माँ पहले तो चौकीं परन्तु फिर अपने बच्चे के आगे श्रद्धानत हो गयीं, उनके मुँह से सहसा यह निकला—"तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगी।" उन्हें मन ही मन में यह विश्वास जम गया कि बालक निश्चय ही किसी अदृश्य शक्ति के वशीभूत होकर ऐसे आचरण करता है। वे एक अनबूझे भय से जड़ीभूत हो गई थीं।

जनेऊ होने के बाद विश्वम्भर को गंगादास की पाठशाला में पढ़ने के लिए बिठला दिया गया। बालक में अब अभूतपूर्व परिवर्तन आ गया था, दंगा-फ़साद करने की पुरानी आदत एकदम समाप्त हो गई थी। निमाई के स्वभाव में चंचलता और मसखरापन अब भी था लेकिन पहले जैसी निरंकुशता अब नहीं रही थी। उसने पढ़ने में ऐसा मन रमाया कि उसकी वाह-वाह होने लगी। बालक विलक्षण प्रतिभाशाली सिद्ध हुआ। उसकी अध्ययनशीलता उसके पुराने दंगों की तरह ही चार मुखों की चर्चा बन गई। उसके अध्यापक ऐसे खुश थे कि प्रशंसा करते नहीं अघाते थे। पुत्र की उन्नति देखकर माता-पिता अपने बड़े बेटे का दुख भूलने लगे। जगन्नाथ मिश्र बड़े ही रामभक्त थे। अपने बच्चे की विलक्षण प्रतिभा से चमत्कृत होकर कभी-कभी उनमें भय भी समा जाता था। श्री रघुनाथ के विग्रह के आगे वे नतमस्तक होकर प्रार्थना करते—"हे राम, भला दिखाकर कहीं मुझे फिर बुरा न दिखाना। विश्वरूप की गुण सम्पन्नता पर भी मैं यों ही हरखता था किन्तु उसे ज्ञान देकर तुमने हमसे छीन लिया, अब इसे न छीनना। आठ लड़कियाँ दिवंगत हुईं, एक पालापोसा बेटा संन्यासी होकर विछुड़ा, अब इस बुढ़ापे के सहारे को हमसे न छीनना राम!"

निमाई अपने समवयस्क सहपाठियों से आगे बढ़ने लगा। अलंकारशास्त्र, तन्त्र और न्याय आदि में निमाई बहुत तेज थे। व्याकरण और न्यायशास्त्र में तो उसकी प्रतिभा अपना परिचय विलक्षण रूप से दे रही थी। ग्यारह-बारह वर्ष की आयु में ही निमाई को ख्याति नदिया की विद्यार्थी मण्डली में चतुर्दिक फैल गयी थी। वह अपनी उमर से दुगुनी आयु वालों के साथ पढ़ ही नहीं रहा था बल्कि उन्हें अपने बुद्धि बल से प्रायः पछाड़ भी देता था।

अपने पुत्र की विलक्षण बुद्धि और बढ़ती हुई ख्याति माता-पिता को आह्लादित करने के बजाय भय प्रदान करती थी। जगन्नाथ जी विशेष रूप से दहलते थे। निमाई के जन्म से पहले श्रीहट्ट ग्राम में जगन्नाथ जी की माता ने उनसे अपने देखे हुए स्वप्न की जो खर्चा का थी तथा उसके जन्म के बाद उनके ससुर ने ज्योतिष शास्त्रानुसार उसके अलौकिक महापुरुष होने की जो भविष्यवाणी की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी वह उन्हें मोहवश डंक-सी चुभती थी। उसके बचपन में और जनेऊ के समय देखे हुए चमत्कार भी उन्हें याद आते थे। इस चिन्ता में कि बालक बड़ा होकर संन्यासी हो जायगा, जगन्नाथ जी दिन-रात घुलते-घुलते बीमार पड़ गये। उन्हें ज्वर आने लगा। गरीबी अवश्य थी फिर भी उपचार में कोई कसर न उठा रखी गई। विश्वंभर ने सेवाभाव से अपने पिता का मन जीत लिया, किन्तु कोई उपचार उन्हें बचा न सका। जगन्नाथ मिश्र ने बड़े सन्तोष से आँखें मूंदीं। शची माता पर मानो वज्रपात हुआ। उस समय उनकी आयु लगभग पचपन वर्ष की थी। पिता की मृत्यु ने निमाई को और भी गम्भीर बना दिया।

निमाई के सहपाठियों में कई लोग ऐसे प्रभावशाली थे जिन्होंने आगे चल कर बड़ा नाम कमाया। अलंकारशास्त्र में अद्वितीय कमलाकांत, 'तंत्रसार'-कर्त्ता कृष्णानंद, 'दीधिति'-कर्त्ता रघुनाथ, अमर नामक नैयायिक और मुरारि गुप्त आदि निमाई मिश्र के समाध्यायी थे। मुरारि को शुरू से ही निमाई की छेड़छाड़ पसंद नहीं आती थी। अपने आपको बड़ा गंभीर और विद्वान् मानने के कारण उसे निमाई के मुँह लगना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन निमाई थे कि उन्हें छेड़-छेड़ कर अपने साथ वाक्‌युद्ध में फँसाते थे। दूसरे सहपाठी विनोदवश इस तर्कयुद्ध को बढ़ावा देते थे, बेचारा मुरारि न चाहते हुए भी ताव में आकर फँस जाता था। तर्कयुद्ध में विश्वंभर उर्फ निमाई से पराजित होना ही बेचारे के भाग्य में लिखा था। आयु में छोटे से पराजित होना मुरारि को तपा-तपा देता था।

गंगादास की पाठशाला में अध्ययन समाप्त करके न्यायशास्त्र पढ़ने के लिए निमाई सार्वभौम भट्टाचार्य की पाठशाला में भर्ती हुए। रघुनाथ यहाँ भी उनके सहपाठी रहे। वे सार्वभौम के सर्वाधिक प्रिय शिष्य थे। गुरु, गुरुजन तथा सहपाठियों से प्रशंसा पाते-पाते स्वयं रघुनाथ भी यह समझने लगे थे कि भविष्य में वे ही न्यायशास्त्र के पण्डितों में सूर्य बनकर चमकेंगे, लेकिन निमाई के कारण उनका यह विश्वास धीरे-धीरे डगमगाने लगा। स्वयं सार्वभौम भी अब रघुनाथ के साथ-साथ निमाई के प्रति अपना विशेष प्रेम भाव प्रदर्शित करने लगे थे। इससे रघुनाथ की शान में बट्टा लगता था। एक दिन पाठशाला के विद्यार्थियों में यह खबर फैली कि विश्वंभर ने न्यायशास्त्र पर टिप्पणी करते हुए एक ग्रंथ रचा है। सुनकर रघुनाथ की ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। रघुनाथ अपने 'दीधिक्षित' ग्रंथ की रचना पर कार्य आरम्भ कर चुके थे। उन्हें विश्वास था कि वे इस ग्रंथ से अलौकिक ख्याति प्राप्त करेंगे। अब विश्वंभर उर्फ निमाई के ग्रन्थकार बनने की सूचना पाकर उनकी इस महत्त्वाकांक्षा पर भी तुषारपात हो गया। रघुनाथ भीतर ही भीतर घुटने लगा। एक दिन अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन का साहस बटोर कर रघुनाथ ने पूछा—"विश्वंभर, हमने सुना है कि तुम कोई ग्रन्थ लिख रहे हो। क्या यह सच है ?"

"हाँ भाई, लिख तो रहा हूँ।"

"ग्रन्थ पूरा कर लिया ?"

"अभी पूरा तो नहीं हुआ, किन्तु समाप्तप्राय है।"

"मुझे सुनाने की कृपा करोगे ?"

"अरे, तुम्हारे ऐसे विद्वान् मित्र को नहीं सुनाऊँगा तो भला और किसको सुनाऊँगा। मैं कल ही वह ग्रन्थ अपने साथ लेता आऊँगा। गंगापार चलते समय नौका पर एकान्त में सुनाऊँगा।"

दूसरे दिन ऐसा ही हुआ। रघुनाथ सुनते जाते थे और उनका दिल बैठता जाता था। अपना लेख सुनाने के बाद निमाई ने जब रघुनाथ को देखा तो वे जड़वत् बैठे हुए थे और उनकी आँखों में टपाटप आँसू बह रहे थे, पूछा—"अरे क्या हुआ मित्र, रो क्यों रहे हो ?"

"कुछ नहीं, तुम्हारी टिप्पणी सुनकर रोना आ गया।"

"क्या इतनी खराब है ?"

"यह इतनी अच्छी है कि पण्डितों में इसकी चर्चा होने के बाद मेरी पुस्तक को फिर कोई न पूछेगा। तुमने मेरा एक स्वप्न भङ्ग कर दिया।"

"हरि हरि, तुम्हारे ऐसे परम मित्र को कष्ट पहुँचाने वाला यह ग्रन्थ अब मेरे किसी काम का नहीं रहा। यह तो मेरे मन का एक खेल मात्र था। ग्रन्थकार बनकर किसी का यश छीनने की मेरी इच्छा कदापि न थी। आज से अपने क्षेत्र में तुम्हीं सर्वश्रेष्ठ पंडित माने जाओगे, तुम्हारे यश में बाधक अपनी कृति को मैं माँ गङ्गा की गोद में समर्पित किये देता हूँ।" निमाई ने अपना ग्रन्थ गङ्गा में डाल दिया। रघुनाथ 'अरे-अरे, यह क्या करते हो' कहते ही रह गये। निमाई हँसकर बोले : "मेरे लिए तुम्हारी मित्रता अधिक मूल्यवान है रघु !"

रघुनाथ की आँखों से कृतज्ञता का भाव उमड़ा-उमड़ा पड़ता था। पण्डित-समाज में केवल अपनी ही नहीं वरन् पुरानी पीढ़ी में भी निमाई के समान उदार हृदय वाला एक व्यक्ति उन्हें उदाहरण देने के लिए भी नहीं दिखलाई पड़ रहा था। रघुनाथ श्रद्धा और आश्चर्य से अभिभूत हो गये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँच

सोलह वर्ष की आयु में शची-जगन्नाथ-नंदन विश्वंभर मिश्र अपना अध्ययन पूरा करके पण्डित कहलाने लगे। नदिया का पण्डित समाज उन्हें आश्चर्य से देखता था। इतनी छोटी आयु में पूर्ण पण्डित बन जाने वाला कोई अन्य व्यक्ति अब तक उनके देखने में नहीं आया था। सवेरे शाम गंगातट पर प्रायः सभी पाठशालाओं के विद्यार्थी आपस में मिला करते थे। विद्यार्थियों की आपसी बहसों से उनके गुरुओं का माहात्म्य भी बढ़ता था किन्तु निमाई के आगे क्या छोटे क्या बड़े सभी बौने लगते थे। बहस में उनसे कोई पार नहीं पा सकता था। इसलिए निमाई की ख्याति धीरे-धीरे चारों ओर फैलने लगी।

शची माता के आनंद का तो पार ही नहीं था। सभी कहते, 'अरी माई, तू बड़भागिनी है। इतनी छोटी आयु में किसी को पण्डित बनते नहीं देखा। तुम्हारे निमाई की चंचलता देखकर हम कभी यह सोच भी न पाते थे कि आगे चलकर यह बालक ऐसा विलक्षण विद्वान सिद्ध होगा। आज बड़े महाराज होते तो यह देखकर कितने सुखी होते। अब इसके ब्याह-ब्याह की फिकर करो न, लड़का सयाना हो गया है।'

ऐसी प्रशंसाओं और विशेष रूप से निमाई की भक्ति और सेवापरायणता ने भोली माँ के मन को उसकी ओर से प्रायः भयमुक्त कर दिया था। निमाई के कारण वे अपने बड़े बेटे विश्वरूप और पति को भी भूल गई थीं। निमाई का ब्याह करके घर में बहू लाने की उन्हें भी साध थी, परन्तु इससे पहले वे चाहती थीं कि उनके बेटे की पाठशाला खुल जाय। उसी से घर की हैसियत बनेगी। लेकिन शची माता का घर बहुत छोटा सा था। उसमें पाठशाला नहीं खुल सकती थी। स्थान की चिन्ता करते-करते उनका ध्यान मुकुन्द संजय नाम के एक धनाढ्य ब्राह्मण की ओर गया। वे स्वर्गीय जगन्नाथ जी को बहुत मानते थे। शची माता उन्हीं के पास गईं। कहा—"मुझ गरीबनी का बेटा पढ़-लिखकर रघुनाथ जी की कृपा से अब पण्डित हो गया है महाराज।"

"हाँ भाभी, मैंने भी चार मुख से उसकी प्रशंसा सुनी है। तुम बड़ी भाग्य-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शालिनी हो जो ऐसा बेटा पाया।"

"भाग्य का चमत्कार तो जब देखने को मिलेगा तब देखूंगी परन्तु अभी तो अपने दुर्भाग्य की चिन्ता में घुली जा रही हूँ।"

"चिन्ता किस बात की ?"

"मेरा घर तो भैया, छोटा सा है। इसकी पाठशाला वहाँ स्थापित नहीं हो सकती। फिर जीविका कैसे चलेगी ?"

"विश्वंभर से कहिये कि मेरे चण्डीमण्डप में अपनी टोल चलायें। वह स्थान सार्थक हो जायगा। और जो कुछ सहायता सेवा मुझसे बन पड़ेगी मैं सहर्ष करूँगा। ऐसा होनहार महापण्डित की सहायता करके कीर्ति कमाने का लोभ भला कौन छोड़ेगा।"

सोलह साल के आचार्य विश्वंभर मिश्र की पाठशाला मुकुन्द संजय के चंडी-मण्डप में खुल गई। उमर कम होने पर भी उनकी विलक्षण प्रतिभा का चमत्कार नदिया के बाहर दूर-दूर गाँवों तक के पंडित समाज में थोड़ा बहुत फैल ही चुका था; पाण्डित्य के साथ-साथ उनका चंचल मसखरा स्वभाव भी बखाना जाता था। छात्रों के लिए आचार्य मिश्र की यही बदनामी आकर्षण बन जाती थी। इसीलिए नदिया में बड़े-बड़े धुरंधर आचार्यों की बड़ी-बड़ी टोलें (पाठशालाएँ) रहते हुए भी आचार्य विश्वंभर मिश्र की टोल में देखते-ही-देखते छात्रों की इतनी भीड़ हो गई कि नदिया की पुरानी-से-पुरानी पाठशालाएँ भी उसके आगे मन्द पड़ गईं। आचार्य मिश्र जब पढ़ाते थे तब उसकी मुद्रा बृहस्पति के समान गुरु-गंभीर होती थी। उनकी वाणी में ऐसा ओज और आकर्षण था, अध्यापन कला में ऐसी सिद्धि थी कि कुटिल-से-कुटिल विद्यार्थी भी उनके सामने ऐसे बैठते थे जैसे बीन बजाते हुए सँपेरे के आगे मंत्रमुग्ध काले नाग बैठते हैं। लेकिन वही आचार्य पढ़ाने के बाद सबको लेकर गंगा स्नान के लिए जाते थे तो उनका व्यवहार कुछ और ही होता था। उनकी चाल बहुत तेज थी। निमाई के शिष्यों को लगभग दौड़ना पड़ता था। वैसी ही बिजली की सी उनकी दृष्टि और वाणी भी थी। चलते-चलते मनोविनोद के लिए वे लपक कर किसी गुमानी पंडित को घेर लेते थे। आमतौर से वैष्णव लोग उनके खास शिकार हुआ करते थे। निमाई वैष्णव भक्ति के सम्बन्ध में बड़े विद्रूप भरे प्रश्न करते। सुनने वाला चिढ़ता तो वे उसे और छेड़ने लगते थे। निमाई की शिष्य मण्डली का मनोरंजन होता। आस-पास राह चलते लोग और दूकानदार भी मजा लेते थे। निमाई पण्डित अपने शिकार को तभी बख्शते थे जब कि वह खिसियाते-खिसियाते करीब करीब रोने लगता था। गंगा में वे घाट की ऊंची सीढ़ियों से सहसा ऐसे छपाक से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कूदते थे कि आस आस के नहाने वाले चौंक-चौंक उठते थे। जब गुरुजी ऐसी चंचलता दिखलाते तब शिष्य भला क्यों चूकते। बड़ी धमाचौंक मचती थी। इसीलिए निमाई और उनकी शिष्य मण्डली के घाट पर पहुँचते ही दूसरे नहाने वाले गुरु-चेले झटपट अपना स्नान-ध्यान समाप्त करके प्रायः टल जाया करते थे। नदिया के लोग निमाई के रूप और विलक्षण प्रतिभा से जितने प्रभावित थे उतने ही उनके नटखटपने से परेशान भी। निमाई से अच्छे-अच्छे लोग घबराते थे। उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए सहसा कोई पण्डित राजी नहीं होता था। अपनी विलक्षण तर्कबुद्धि और सूझ-बूझ से वे जाने कब किसकी बँधी साख बिगाड़ दें, इसका कोई ठिकाना नहीं था। खासतौर से अपने पाण्डित्य पर घमण्ड करने वालों की तो वे ऐसी पगड़ी उछालते थे कि वह सारे नगर में हँसी के पात्र बन जाते थे। बहुत से पण्डित निमाई से मन-ही-मन कुढ़ते थे पर उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते थे।

पाठशाला जब इस ठाठ से जम गई तो शची माता का घर भी अन्न-धन से भर चला। अब उन्हें बहू लाने की चिन्ता पड़ी। वनमाली घटक को बुला कर सलाह सूत की। नदिया में आचार्य वल्लभ नामक एक धनी-मानी पण्डित थे। उनकी लक्ष्मी नाम की एक कन्या बड़ी सुन्दर, सुलक्षण और गुण-शीलवती थी। वनमाली ने जब उसका नाम लिया तो माता फड़क उठीं पर फिर उदास भाव से कहा : अरे भैया वह बड़े आदमी हैं, भला हमारे घर में अपनी कन्या देना कैसे स्वीकार करेंगे।''

''अरे मैया, कैसी बातें करती हो। इस समय हमारे निमाई से बड़ा पण्डित नदिया में है कौन ? देख लेना, इधर मेरे मुँह से बात निकलेगी और उधर मेरा मुँह मिठाइयों से भर देंगे।''

और सचमुच हुआ भी ऐसा हो। वल्लभाचार्य ही नहीं उनका सारा घर खुशी से नाच उठा। थोड़े ही दिनों में लक्ष्मी शची माता के घर की लक्ष्मी बन गई। शची माता का घर बैकुण्ठ बन गया। वे परम प्रसन्न थीं। लक्ष्मी-विश्वंभर भी एक दूसरे को पाकर बड़े ही मगन थे। लोग-बाग कहते कि शची मैया के दिन बहुरे वैसे राम करे सबके बहुरें।

एक दिन श्रीपाद ईश्वरपुरी नामक एक सुख्यात संन्यासी का नदिया में पदार्पण हुआ। ईश्वरपुरी जी माधवेन्द्रपुरी नामक एक बड़े ही प्रसिद्ध संन्यासी के शिष्य थे। लोगों का बड़ा आदर किया करते थे। वे बड़े ही कृष्ण-भक्त संन्यासी थे। उन्होंने राधा-कृष्ण का प्रेम वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण-लीलामृत नामक एक काव्य रचा था जिसकी चतुर्दिक प्रशंसा होती थी। वैष्णव लोग उसे बड़े प्रेम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाया करते थे। एक दिन हाट में ईश्वरपुरी की निमाई पण्डित से देखा-देखी हो गई। उन्होंने एक नटखट शिष्य मण्डली को आते हुए देख पूछा—"किसके शिष्य हैं ? बड़े चंचल हैं।"

किसी ने उत्तर दिया, "जैसे गुरु हैं वैसे ही चेले भी हैं महाराज ! ये निमाई पण्डित के टोल के हैं। ये देखिए, चले तो आ रहे हैं पण्डित जी हँसते पान चबाते हुए।"

ईश्वरपुरी जी चौंककर देखने लगे। "कौन से हैं विश्वम्भर निमाई," पूछते पूछते सहसा वे स्वयं ही बोल उठे, "इस तेजस्वी युवा के सिवा और कौन हो सकता है। अरे मैं समझता था कि विश्वम्भर मिश्र कोई बड़ी आयु के व्यक्ति होंगे। बढ़ो, बढ़ो, मैं इनसे मिलना चाहता हूँ।"

ईश्वरपुरी जी की भक्त-मण्डली को उनका निमाई से मिलने का आग्रह अच्छा न लगा। एक ने संकोच भरे स्वर में कह भी दिया : "अरे महाराज, उससे न मिलिए। पता नहीं कब किसकी पगड़ी उछाल दे।"

तब तक निमाई पास आ चले थे। आँखों से आँखें मिलीं। ईश्वरपुरी जी की टकटकी बँध गई। यह देखकर निमाई स्वयं ही उनकी तरफ बढ़ गये। हाथ जोड़कर भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और कहा—महाराज, आज इस अकिंचन की कुटिया पर भिक्षा ग्रहण करके इसे कृतार्थ करें। इस बहाने से आपको मुझे नयन भर देखने का अवसर भी मिल जायगा।" कहकर निमाई हँस पड़े। ईश्वरपुरी जी भी हँसने लगे, बोले : "तुम्हारा प्रस्ताव मुझे सहर्ष स्वीकार है। ऐसी योग-सिद्ध आत्मा को कितनी देर झाँकने का अवसर मिले उतना ही मेरा मंगल होगा।" ईश्वरपुरी जी निमाई के साथ उनके घर पधारे। फिर तो नेह-नाता बँध गया। ईश्वरपुरी जी ने कहा—"पण्डित, मेरी इच्छा है कि तुम मेरा काव्य ग्रंथ सुनो और यदि उसमें कोई दोष हो तो इंगित करो।"

निमाई हाथ जोड़कर बोले : "अरे महाराज, एक तो कृष्ण की कथा दूसरे उसे रचनेवाला जब कोरा शब्द विलासी पण्डित न होकर कोई आप सरीखा भक्त हो तो उस काव्य-ग्रंथ में दोष दिखाने का साहस भला कौन कर सकता है।"

"वह सब ठीक है, परन्तु मेरी इच्छा है कि तुम मेरा श्रीकृष्ण लीला काव्य सुनो और यदि उसमें तुम्हें कोई दोष दिखलायी पड़े तो अवश्य बतलाओ।"

संन्यासी की आज्ञा का पालन करने के लिए निमाई पण्डित प्रतिदिन सायं-काल को गदाधर वैष्णव के घर पर उनका काव्य सुनने लगे। काव्य सुन्दर और रसपूर्ण था। उसमें दोष निकालना सहसा किसी साधारण पण्डित के वश की बात न थी। फिर भी एक दिन निमाई ने एक श्लोक में एक धातु प्रयोग पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी शंका व्यक्त की। ईश्वरपुरी जी शंका सुनकर स्तब्ध हो गये। उस समय तो उन्होंने कुछ न कहा किन्तु दूसरे दिन बोले, "विश्वम्भर पंडित, तुम्हारी बात पर मैंने खूब विचार किया। तुमने जिस धातु को परस्मैपदी मानकर शंका प्रकट की है उसे मैंने आत्मनेपदी माना है। उस दृष्टि से मेरा प्रयोग ठीक है।" निमाई ने हँसकर हारी मान ली।

इस पराजय में भी विजय ही थी क्योंकि ईश्वरपुरी जी लोगों से निमाई पंडित की प्रशंसा करते नहीं अघाते थे।

ईश्वरपुरी जी के साथ कुछ दिन बिताकर वैष्णवों का मज़ाक़ उड़ाने वाले युवा महापंडित विश्वम्भर मिश्र के स्वभाव में भी एक परिवर्तन क्रमशः किन्तु स्पष्ट रूप से होता दिखाई पड़ने लगा था। स्वभाव परिवर्तन का यह क्रम ऊपरी तौर से तो धीमा था किन्तु भीतर ही भीतर उनकी चेतना एक नई भाव-विचार धारा की ओर उन्मुख और आंदोलित हो उठी थी। वैष्णवों का सखी-भाव अब तक उनके बौद्धिक व्यक्तित्व को क़तई नापसंद था, किन्तु ईश्वरपुरी जी का काव्य सुनते हुए, राधा-गोपी-कृष्ण के अनूठे शृङ्गार वर्णनों और वैष्णव-भक्ति की व्याख्या पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उन्हें एक नया भाव बोध होने लगा। वैसे भी निमाई अब अपनी लक्ष्मी की बदौलत प्रेम का रूप कुछ-कुछ पहचानने लगे थे। उन्होंने ऐसी तीव्र संवेदनशील आवेग भरा मन पाया था कि वे जिस भाव में रमते उसमें पूरी पैठ लिए बिना रुक नहीं सकते थे। प्रेम के अनुभव को लेकर भी उन्हें ऐसा ही लगा।

वह देशकाल कुछ और ही था। बड़ों के सामने अपनी प्रिया पत्नी से बात करना तो दूर नज़र उठाकर देखना तक उन दिनों अच्छा नहीं माना जा सकता था। निमाई का आवेग भरा हृदय चूंकि सामाजिक शिष्टाचार का यह अनुशासन मानने के लिए मजबूर था इसलिए उनकी विवश प्रेमानुभूति किसी मुक्त और सुदृढ़ आलम्बन की तलाश में थी। वे अक्सर यह सोचने और कहने भी लगे थे कि कामवृत्ति में उद्भूत रीझ और उसकी रंगीन भावनाएँ वस्तुतः प्रेम नहीं हैं। प्रेम की असली पहचान तभी हो सकती है जब वह काम मुक्त होकर हृदय में विकसित हो। लेकिन इसके लिए अभी चैतन्य को अपने मन में तब तक राह नहीं मिली थी। वे अपनी हँसी मसखरी नटखटपन भरी जिन्दगी की रोज़मर्राह में कहीं भीतर ही भीतर उमड़ते-घुमड़ते रहे। ईश्वरपुरी जी के सत्संग से यह उमड़न-घुमड़न एक व्यवस्था पाने लगी। रस-विचार आरम्भ हुआ। राधा-कृष्ण रति का मर्म लक्ष्मी-विश्वम्भर को रति-सुख के सहारे बूझ में आने लगा। रस अतुल अथाह और अनंत है। रति-रस स्थायी भाव है क्योंकि उसमें सारे भाव सिमट कर एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर अभिन्न हो जाते हैं। इस एकात्म भाव के परिपोषण से प्रेम-रस जागता है। एकनिष्ठ और प्रगाढ़ होकर यही भक्ति रसायन बन जाता है। भक्ति-रस-सिन्धु व्यक्त से अव्यक्त तक व्याप्त है। थाह लेने पर वह जितना ही मूर्त है उतना ही अमूर्त भी। विश्वम्भर की लक्ष्मी भक्ति लक्ष्मी को सदैव अपने सामने, अपने पास देखना चाहती है। लोक-मर्यादावश यह चाहना हर समय प्रतिफलित न हो सकने के कारण आग्रह और आवेगवश इस विश्वास के रूप में प्रतिफलित होती है कि लक्ष्मी प्रतिपल उनके अंतर में उनके पास है। भक्ति विशुद्ध हुई तो व्यक्त लक्ष्मी से अव्यक्त कृष्ण तक पहुँचने लगी। मन की उमड़न-घुमड़न एक नये धरातल पर आरम्भ हुई। यह उमड़न-घुमड़न एक दिन सहसा रहस्यमय रूप से बाहर भी प्रकट हुई। वे अपने घर में बैठे थे, एकाएक हँसने लगे, फिर होंठों की स्फुट बुद-बुदाहट भी आरंभ हुई। आँखों में आँसू झलकने लगे। देखते ही देखते वे बिलख-बिलख कर रोने लगे। पत्नी, माँ, सभी यह हालत देखकर घबरा गये। "अरे निमाई क्या हुआ ?" पूछते हुए जैसे ही माँ ने निमाई की पीठ पर हाथ रखा वैसे ही वे एकाएक गिरकर अचेत हो गये। घर में घबराहट फैल गई। पास-पड़ोस के लोग जुट आये। सबने यही कहा कि बहुत पढ़ने से निमाई के मगज पर प्रभाव पड़ा है, कुछ-कुछ पागलपन के लक्षण दिखलाई देते हैं। इनके सिर पर यदि विष्णुतैल की मालिश की जाय तो लाभ होगा।

शची माता ने जगह-जगह से तलाश करके विष्णुतैल मँगवाया। मालिश होने लगी। विश्वम्भर ने माँ को मना भी किया कि इसकी आवश्यक नहीं, मैं ठीक हूँ। पर उनके मन में काफ़ी हद तक यह स्पष्ट हो गया था कि संन्यासी ईश्वरपुरी जी द्वारा वर्णित कृष्ण-प्रेम अचेतन की गहन अन्धकारमयी गुफा में कहीं जुगनू-सा चमक रहा है। लेकिन यह चमक और यह भाव अभी पूरी तौर से मन में स्पष्ट नहीं था। वे अपने आपको ठीक तरह से समझ नहीं पा रहे थे। उनका मन उड़ा-उड़ा रहने लगा।

पाठशाला यथावत् चलती रही। आचार्य विश्वम्भर मिश्र को विद्यासागर की उपाधि मिली। संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित उनकी एक पुस्तक बंगाल की पाठशालाओं में जगह-जगह पढ़ाई जाती थी। बाईस वर्ष की छोटी-सी आयु में किसी विद्वान को ऐसा चामत्कारिक यश नहीं मिला था। घर में सुख, बाहर आदरमान किन्तु निमाई के अचेतन में एक ऐसा आंदोलन उठ रहा था जिसे वे समझ नहीं पाते थे। उन्हें हंसने-रोने और मूर्च्छा के कई दौरे पड़े। वे ठीक तो जल्दी हो जाते थे किंतु यह बार-बार की लगी बलाय शची माता के लिए गहरी चिंता का विषय बन गई। एक दिन निमाई ने अपनी माँ से कहा—"माँ, मेरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छा होती है कि थोड़ा घूम-फिर आऊँ। ग'व जाकर अपने पितामह और चाचाओं के दर्शन कर आऊँ।"

लेकिन अपने बेटे को आँखों से दूर करना शची माता को स्वीकार न था। आठ-आठ बेटियाँ हुईं और मर गईं, पाला-पोसा सोलह वर्ष की आयु का बड़ा बेटा संन्यासी हुआ, पति परलोक सिधारे। बड़े-बड़े संकट झेलकर शची माता ने अपने निमाई के बहाने यह सुख का दिन देखा था, इसलिये उसे वे आँखों से दूर करने में वैसे भी हिचकिचाती थीं और अब तो उसे बेहोशी के दौरे पड़ने लगे थे। ऐसे में वे भला क्योंकर आज्ञा देतीं। लेकिन निमाई पंडित हठी ठहरे, मन में जो ठाना सो ठान लिया। लोगों ने भी शची माता को समझाया कि घबराने की ऐसी कोई बात नहीं। निमाई का घूमने का मन है सो उसे थोड़ा घूम-फिर आने दो। बहुत सम्भव है कि इससे निमाई को स्वास्थ्य लाभ हो जाय।

माँ के निमाई और नवद्वीप के कीर्तिशाली पण्डित, विद्यासागर आचार्य विश्वम्भर मिश्र ने दिन-मुहूर्त विचारकर सिलहट जिले के ढाका-दक्षिण ग्राम में अपने बाबा से मिलने के लिए घर से प्रस्थान किया। नूरपुर, सुवर्णग्राम, विक्रमपुर आदि कई बस्तियों में घूमते-घामते वे भिटालिया ग्राम में पहुँचे। भिटालिया उन दिनों विद्वानों का तीर्थ था, वहाँ पद्मगर्भ आचार्य नामक एक वयोवृद्ध विद्वान् रहा करते थे। उन्हें नदिया के जयराम चक्रवर्ती की बेटी ब्याही थी। उनके लक्ष्मीनाथ नामक एक परम विद्वान् पुत्र भी था। पद्मगर्भ आचार्य के कारण भिटालिया ग्राम की महिमा चतुर्दिक् फैली थी। उन्होंने काशी में उपनिषद् और मिथिला में तर्क-शास्त्र की शिक्षा पाई थी; अनेक ब्राह्मण ग्रंथों की टीकाएं लिखी थीं तथा 'भ्रमर गीतिका' नामक एक सुख्यात ग्रन्थ के रचयिता भी थे। पद्मगर्भ आचार्य के पुत्र लक्ष्मीनाथ लाहिड़ी ने आचार्य विश्वम्भर मिश्र का बड़ा स्वागत सत्कार किया। भिटालिया ग्राम से वे अपने पुरखों के गाँव ढाका-दक्षिण गये। उनके पितामह उपेन्द्र मिश्र तब तक जीवित थे। दादी कमलावती भी मौजूद थीं। चाचा-चाचियों और चचेरे भाई, बहन से घर भरा-पुरा था। स्वाभाविक रूप से निमाई को अपने दादा के घर बड़ा लाड़-प्यार और सत्कार मिला। निमाई वहाँ काफी दिन ठहरे। जिन गाँवों में वे जाते वहाँ के पंडितों में उनका यश पहले ही पहुँच चुका होता था, इसलिए इस यात्रा के दौरे में निमाई को बहुत सुख और स्फूर्ति मिली। जब ये लौटकर नदिया आये तो पहले से बहुत अधिक स्वस्थ और प्रसन्नचित्त थे। लेकिन विधाता ने सांसारिक सुख और आनन्द लाभ करने के लिये उन्हें पैदा नहीं किया था। घर आकर उन्हें पता चला कि साँप के काटने से उनकी सौभाग्यवती प्रिया का देहावसान हो चुका है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छः

अर्द्धाङ्गिनी की मृत्यु ने विश्वंभर मिश्र पर बाह्य रूप से क्या प्रभाव डाला इसका विवरण तो कहीं नहीं मिलता किन्तु भीतरी रूप से उनके अलक्ष्य अनमनेपन को इस दुःखद घटना ने अवश्य ही कहीं गहरे में प्रभावित किया होगा, क्योंकि उनकी स्वाभाविक वाचालता में पहले से थोड़ा बहुत अन्तर अवश्य परिलक्षित होने लगा था। उनकी आनन्द और चपलता में भरी बड़ी-बड़ी आँखों की आकर्षक पुतलियों में कहीं पर हंसी की तह में रोना भी नज़र आने लगा था।

विद्यार्थियों को पढ़ाने में वे पहले से अब कहीं अधिक दत्त-चित्त हो गये थे। उनके विद्यार्थियों की संख्या भी पहले से अधिक बढ़ गई थी। उनके पढ़ाने समझाने के ढंग की बड़ी तारीफ थी। विश्वंभर पंडित की पाठशाला में उनकी आयु के बराबरी के लड़के तो होते ही थे, अक्सर उनकी उम्र से बड़े विद्यार्थी भी उनसे पढ़ने के लिए आ जायां करते थे। उनमें से बहुत से लोग प्रायः ऐसे प्रश्न पूछते कि जिससे गुरुजी उत्तर देने में गड़बड़ा जायँ पर गुरुजी ऐसे पोढ़े थे कि उनसे पार पाना कठिन था। पर्वत की ऊँचाइयों को छूने वाले बड़े-बड़े स्वनामधन्य वयोवृद्ध आचार्य भी शची माँ के निमाई के सामने बौने बन जाया करते थे, इसीलिये आमतौर से पंडित वर्ग मौन ईर्ष्या रखते हुए भी निमाई से किसी विषय पर शास्त्रार्थ करने में कतराया करते थे।

उन्हीं दिनों में कश्मीर के एक प्रकांड पंडित भारत में दिग्विजय करते हुए डोल रहे थे। उनका नाम आचार्य केशव जी था, केशव जी काशी, मिथिला आदि बड़े-बड़े विद्या-केन्द्रों में पीढ़ियों से पुजने वाले चोटी के विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराकर नवद्वीप को जीतने के लिए अपने दलबल के साथ पधारे। दिग्विजयी आचार्य प्रचार कला में भी कुछ कम पटु न थे क्योंकि उनके नदिया पहुँचने से पहले ही उनकी महिमा की बिजलियाँ चमकने लगी थीं। शहर में तरह-तरह की अफवाहें फैली हुई थीं। जिसे देखो वही कहता कि साक्षात् सरस्वती का वरदपुत्र नदिया आ रहा है। आचार्य केशव के सामने अमुक जगह के आचार्य पावघड़ी भी ठहर न सके, और अमुक आचार्य तो केशव जी का नाम सुनते ही ऐसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हड़बड़ा गये कि उनके मुँह से एक बोल भी न फूट पाए। इस प्रकार केशव जी कश्मीरी के संबंध में चमत्कारों भरी अनगिनत अफवाहें उड़ रही थीं। नदिया उन दिनों भी महामहोपाध्यायों से भरा हुआ था। पुरानों में अद्वैताचार्य जैसी जानी-मानी हस्तियाँ थीं और नयों में रघुनाथ, रघुनन्दन और विश्वम्भर जैसे नामी आचार्य भी रहते थे। केशव जी के संबंध में तरह-तरह की बातें उड़ने पर नदिया के चौधरियों में बड़ी सनसाहट फैल गई। जहाँ चार पण्डित या उनके विद्यार्थी जुड़ते तो यही बातें होने लगतीं कि केशव को किस जुगत से पछाड़ा जाय। केवल निमाई ही ऐसे थे जिन्होंने इस चर्चा में कोई रस नहीं लिया। उनके विद्यार्थी यदि कभी यह चर्चा छेड़ते भी तो व कह देते कि समय आने पर देखा जायगा।

समय आ गया। दिग्विजयी आचार्य केशव जी कश्मीरी नदिया में पधारे। उनके डेरे-तम्बू तन गये। तीर तलवारों से लैस शक्तिधर शत्रु की चढ़ाई से जैसी घबराहट प्रज़ा में फैलती है प्रायः वैसी ही घबराहट नदिया के पण्डितों में कश्मीरी दिग्विजयी के आने से फैल गई। दिग्विजयी आचार्य ने नगर में डौंडी पिटवा दी कि जो भी अपने को बड़ा पण्डित समझता हो वह हमसे शास्त्रार्थ करने के लिये आ जाये। इस डौंडी से चारों ओर सनाका-सा छा गया। सब लोग कान दबाकर चुप बैठे रहे।

गर्मी के दिन थे। निमाई पंडित नित्य की भाँति उस दिन भी अपनी शिष्य मंडली के साथ शाम के समय गंगातट की ओर चले। रेशमी वस्त्र पहने पान चवाते हुए जब वे हाट से गुजरे तो लोग-बाग उनके सम्मान में उठ खड़े हुए। हर एक उनसे यही कहता कि महाराज नदिया की लाज बचाइये। कहीं ऐसा न हो कि कश्मीरी हमारे मुँह पर कालिख पोत कर चला जाय। निमाई सबको ढाढ़स बँधाते, हँसते-बोलते हुए गंगातट पर पहुँच गये। चाँदनी खिली हुई थी। आज दूसरी पाठशालाओं के विद्यार्थियों और आचार्यों की नित्य जैसी चहल-पहल वहाँ न थी। सिंह के मार्ग से जैसे दूसरे पशु डर कर भाग जाते हैं वैसे ही नदिया के पंडित भी आज छिप गये थे। केशव जी अपने शिष्यों व मुसाहिबों के साथ गंगातट पर आये। उनका शास्त्रीय दरबार लग गया। केशव जी ने देखा कि एक बड़ा शिष्य समुदाय वहाँ बैठा शास्त्रालाप कर रहा है तो सोचा कि लाओ तनिक इन लड़कों को भी टटोल देखें कि जिससे उनके गुरुओं की कुछ थाह मिल सके। कौतूहलवश वे पास पहुँच गये। एक वयोवृद्ध तेजवान ब्राह्मण को पास आया देखकर सब लोग सम्मान प्रदर्शन के लिये उठ खड़े हुए।

"तुम लोग किसके शिष्य हो ?" आचार्य ने पूछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हम विद्यासागर आचार्य विश्वम्भर मिश्र के शिष्य हैं।" एक ने उत्तर दिया।

"हाँ, उनका नाम मैंने भी सुना है। यह भी सुना है कि वे बड़े पंडितों में माने जाते हैं। कहाँ हैं वे इस समय ?"

"हमारे पूज्यपाद आचार्य जी आपके सामने खड़े हैं।" एक ने झटपट निमाई की ओर हाथ उठाकर कहा।

आचार्य केशव से आश्चर्य से निमाई को देखा, कहा—"अरे, तुम्हीं हो विश्वम्भर मिश्र, जो निमाई के नाम से भी विख्यात हैं ?"

निमाई ने उत्तर न दिया केवल आंखों से अपनी विनय प्रदर्शित कर दी। आचार्य ने फिर पूछा—"व्याकरण में तुम्हीं सर्वश्रेष्ठ माने जाते हो ऐसा मैंने सुना है। क्या यह सत्य है ?"

निमाई सविनय बोले—"लोगों ने ऐसे ही यह बात उठा रखी है महाराज ! मैं व्याकरण पढ़ता तो अवश्य हूँ किन्तु उसे आप केवल मेरी धृष्टत्ता ही समझें। क्या मैं महाराज का परिचय जान सकता हूँ ?"

कश्मीरी महापंडित के एक दरबारी ने बड़ी हेकड़ी के साथ उनका परिचय दिया। निमाई ने तुरन्त बड़ा भाव देते हुए उन्हें आदर से बिठलाया और कहा —"आप तो दिग्विजयी हैं। मैं आपके सामने अज्ञ शिशु मात्र हूँ। कृपया मेरे सम्बन्ध में सुनी हुई बातों पर ध्यान न दें और मुझ पर अनुकम्पा करते हुए अपने काव्यामृत का पान कराएँ।"

दिग्विजयी आचार्य के मन में निमाई के प्रकाण्ड पांडित्य के संबंध में जो सुनी-सुनाई सनसनाहट थोड़ी बहुत थी भी वह उन्हें देखकर तथा उनकी यह विनय युक्त बातें सुनकर लोप हो गयी। मन में सोचा, यह जरा सा लड़का मेरे आगे भला क्या ठहर पाता, इसीलिए तो मीठी-मीठी बातें कर रहा है। खैर, मैं भी अब निश्चिन्त मन से बैठूंगा। नदिया के लौंडे-लपाड़ी आचार्य मेरे बिना मारे ही मर जायेंगे। यह सोचकर बड़े बड़प्पन भरे अन्दाज में उन्होंने निमाई से पूछा—"क्या सुनना चाहते हो ?"

निमाई बोले—"कृपा करके गंगा का वर्णन करें।"

आचार्य केशव जी कश्मीरी क्षणभर गंगा की ओर निहारते रहे और फिर जो सुनाना आरंभ किया तो एक के बाद एक, घड़ी भर में सौ श्लोक रचकर सुना डाले। उनका काव्य प्रवाह, शब्द लालित्य, उपमाओं और अलंकारों का चमत्कार जादू बनकर सभा पर छा गया। दिग्विजयी का काव्य पाठ सुनने के लिए गंगातट पर इधर-उधर बिखरी भीड़ भी वहीं सिमट आई थी। केशव जी की धारा प्रवाह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्य शक्ति और ओजस्वी वाणी सुनकर सभी प्रभावित हो गये।

निमाई ने कहा—"आचार्य धन्य हैं। आपके समान कवि पृथ्वी पर दूसरा नहीं हो सकता। आपके काव्य का अर्थ बूझने की शक्ति देवी सरस्वती तथा आपके अलावा भला और किस्में हो सकती है, इसलिए यदि आप ही कृपा करके हमें अर्थ समझायें तो बड़ी कृपा होगी।"

आचार्य केशव बोले—"किस श्लोक की व्याख्या सुनना चाहते हो ?"

निमाई ने तुरंत ही आचार्य जी के सौ रचे हुए श्लोकों में से एक सुनाना आरंभ किया :

"महत्त्वं गंगायाः सततमिदमाभाति नितराम्
यदेषा श्रीविष्णोश्चरणकमलोत्पत्ति सुभगा।....."

श्लोक सुनाकर उन्होंने कहा : "कृपा करके इस श्लोक की व्याख्या करें"।

सुनकर दिग्विजयी चकित हो गये। कहने लगे—"मैं तो झंझावात की तरह श्लोक रचना करता चला गया था और फिर भी तुमने उसमें से एक श्लोक कंठस्थ कर लिया !"

एक शिष्य तुरन्त बोल उठा—"केवल एक श्लोक ही नहीं महाराज, हमारे आचार्य जी आपके रचे पूरे सौ-के-सौ श्लोक आपको ज्यों-के-त्यों सुना सकते हैं।" सुनकर आचार्य केवल सहसा गंभीर हो गये। उन्होंने सोचा कि हो न हो, यह निमाई श्रुतिधर है, इसे एक बार का सुना हुआ याद हो जाता है। उन्होंने अपने काव्य की व्याख्या सम्हल-सम्हल कर आरम्भ की। एक-एक बात को बड़ी पाण्डित्यपूर्ण कलाबाजियाँ ले-लेकर समझाया। महापण्डित की व्याख्या सुनकर सभा मुग्ध हो गयी। निमाई बोले—"आपने हमें कृतार्थ कर दिया आचार्य। ऐसी सूक्ष्म विवेचना आपके सिवा भला और कौन कर सकता था। अब कृपा करके इस श्लोक के दोषों को भी बखानिये।"

"दोष ? मेरे काव्य में भला दोष कौन दिखला सकता है। तुम मात्र वैयाकरण हो, अलंकारशास्त्र की विशेषताओं को तुम भला क्योंकर बूझ सकते हो। मेरे काव्य का सारा तत्व तुम्हारे पल्ले कभी नहीं पड़ सकता।" आचार्य ने बड़ी ठसक के साथ उत्तर दिया।

निमाई सविनय हाथ जोड़कर फिर बोले—"इसीलिए तो मैंने आपसे ही गुण-दोष बखानने की प्रार्थना की है।"

आचार्य जी बोले—"मैंने अपने काव्य का अर्थबोध तुम्हें करा दिया, उसमें दोष देखने का मिथ्या प्रयत्न मत करो।"

"मैं ऐसा साहस भी नहीं कर सकता आचार्य जी, किन्तु मुझे लगता है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्य में दोष है। कदाचित् हमारी परीक्षा लेने के लिए ही आचार्य प्रवर ने इस काव्य में जान-बूझकर कुछ दोष छोड़ दिया है।"

आचार्य केवल का घमण्ड फूलने लगा। उन्होंने तनिक घुड़कते हुए कहा—"पहले तुम्हीं बतलाओ कि इसमें क्या दोष है ?"

निमाई हाथ जोड़कर बोले—"सुनकर आप रोष न करें।"

केशव जी ने इस बात का जवाब न दिया, त्योरियाँ चढ़ाये, गम्भीर मुख किये बैठे रहे। आचार्य विश्वम्भर मिश्र कहने लगे : "इस श्लोक में पाँच अलंकार उसके गुण स्वरूप विद्यमान हैं और पाँच ही दोष भी है। दो स्थानों पर 'अविमृष्ट विधेयांश' दोष है। और तीन स्थानों पर 'विरुद्ध मति', 'पुनरुक्ति' और 'भग्नक्रम' दोष हैं।"

आज तक आचार्य केशव के दोषों को कोई पण्डित नहीं बखान पाया था। इसलिए उनका जेहरा एकदम से लाल हो उठा। वह बोले—"अभी तुम निरे बच्चे हो निमाई ! समझ कम होते हुए भी तुम अपना महत्त्व दिखलाने के लिए ही झूठ-मूठ मेरे काव्य में दोष दिखलाने का दुस्साहस कर रहे हो। मैं तुम्हारे प्रत्येक तर्क को काट सकता हूँ।" यह कहकर उन्होंने बड़ी अकड़ के साथ निमाई से तर्क करना आरम्भ कर दिया, लेकिन जैसे-जैसे शास्त्रार्थ का विषय गहरा होता चला वैसे-वैसे ही आचार्य को निमाई के आगे अपना बौद्धिक बौनापन भी नजर आने लगा। बीच-बीच में कहीं लाल होते, कहीं भड़क उठते और कभी-कभी गरजने भी लगते थे। परन्तु निमाई ने बराबर शान्त रहकर उनकी ऐसी बखिया उधेड़ी कि कश्मीरी पंडित घबराकर इधर-उधर बगलें झाँकने लगे। यह देखकर निमाई पंडित के शिष्य और सभा में बैठे नदियावासियों के चेहरों पर आनन्द की आभा पूनो की चाँदनी से भी अधिक चटक होकर निखर आई। दिग्विजयी का हौवापन दूर होने से निमाई के दो-चार शिष्य हँस पड़े। यह हँसी केशव को गंगा में डूब जाने के लिए प्रेरित करने लगी। उनकी नजरें ऐसी झुकीं कि उठ ही न पाती थीं। निमाई तुरन्त उनकी मान रक्षा के लिए आगे बढ़े। अपने हँसने वाले शिष्यों को झिड़कते हुए कहा—"इसमें भला हँसने की क्या बात है ? किसके काव्य में दोष नहीं होता। कालिदास और भवभूति के काव्यों में भी दोष दिखलाये जा सकते हैं। सराहना काव्य शक्ति की होती है। आचार्य जी महाकवि हैं। हमने तो इस समय यह गुण-दोष विवेचन मात्र इसलिए किया था कि इस बहाने से हम सबको आचार्य जी सेकुछ ज्ञान लाभ हो सके। हम आपके बड़े ही कृतार्थ हैं महाराज ! आज तो रात अधिक हो गई है, घर जाने की आज्ञा दें, किन्तु कल फिर विचार होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निमाई की बातों और मधुर व्यवहार से केशव जी और भी अधिक लज्जित हो गये। वे सिर झुकाये सदल-बल अपने डेरे पर वापस लौट आये। आधी रात बीत चुकी थी। शहर में प्रायः सोता पड़ गया था फिर भी नदिया के आचार्यों और विद्यार्थियों के बीच आनन-फानन यह खबर बिजली की तरह फैल गई थी कि निमाई ने केशव को पहली ही पकड़ में चारों खाने चित कर दिया है। कुछ लोग निमाई से ईर्ष्या भले ही रखते थे पर इस प्रकार प्रत्येक पंडित यह समाचार पाकर आनंदित हुए बिना न रह सका। नदिया के निमाई ने नदिया की लाज रख ली थी।

उधर बेचारे केशव कश्मीरी की आँखों की नींद उड़ी हुई थी। अब तक बड़ी-बड़ी जगहों में बड़े-बड़े पण्डितों को हराकर आचार्य ने उनको पगड़ियाँ अपने चरणों पर रखवायी थीं। उन्हें जीतने की आदत थी हारने की नहीं, लेकिन आज नदिया के एक युवा पंडित ने उन्हें धूल चटा दी थो। रात भर वे कटे रुण्ड की तरह तड़पते-उछलते रहे। सबेरे बड़े तड़के ही उन्होंने जाकर निमाई के द्वार की कुंडी खटखटाई। वे सो रहे थे, जगाये गये। जैसे ही वे द्वार पर आये वैसे ही केशव ने उनके चरणों में अपना मस्तक नवाया। निमाई ने तुरन्त उन्हें अपनी दोनों बाँहों में भरकर उठा लिया, बोले—"आप यह क्या करते हैं महा-राज, कहाँ आप जैसे दिग्गज विद्वान् और कहाँ मैं एक अज्ञ बालक! इस प्रकार अपनी दीनता प्रदर्शित करके कृपया मुझे लज्जित न करें।"

केशव हाथ जोड़कर बोले—"मैं आपको पहले समझ नहीं पाया था। आपसे पराजित होकर मैं पिछली रात बिना पानी की मछली की भाँति तड़पता रहा हूँ। अभी थोड़ी देर पहले मुझे तनिक देर तक के लिए झपकी आई थो; मैंने स्वप्न में माता सरस्वती के दर्शन किये। उन्होंने झिड़ककर मुझसे कहा कि तुमने किससे शास्त्रार्थ करने का दुस्साहस किया था? उनसे तो स्वयं मैं भी नहीं जीत सकती। जानता है केशव वे कौन हैं? वे मेरे कांत हैं। जागो और उनके आगे नतमस्तक होकर क्षमा याचना करो।" बहुविधि निमाई के समझाने पर भी केशव ने संसार त्याग करने की ही ठान ली। उन्होंने अपना सब कुछ दान कर दिया और स्वयं दंड कमंडलु लेकर तथा कौपीन धारण करके वे चले गये।

इस घटना के बाद निमाई नदियावासियों के गले का हार बन गये। क्या छोटा क्या बड़ा हर एक यही कहता कि निमाई आयु में भले छोटे हों परन्तु विद्या में उनसे बड़ा कोई नहीं है।

शची माँ के आनन्द का तो ठिकाना ही न था। उनके सौभाग्य की समता भला और कौन सी माँ कर सकती थी। बस एक यही दुख उनके कलेजे को कचोटता था कि घर में पतोहू न थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात

कमासुत बेटे की माँ का दरबार टोले पड़ोस की स्त्रियों से प्रायः भरा ही रहता था, अब तो उनके यहाँ और अधिक भीड़भाड़ लगने लगी। दिग्विजयी पण्डित को हराकर आर्थिक दृष्टि से साधारण श्रीहट्टीय जगन्नाथ मिश्र का बेटा, शची माँ को आँखों का तारा निमाई नदिया का सबसे बड़ा हैसियतदार बन गया था।

नदिया में हैसियत विद्या से बनती थी। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार, धनी, राजे-महाराजे श्रेष्ठ विद्वानों को देखते ही अपनी गद्दी से उठ खड़े हुए थे। राह चलते हुए भी तपस्वियों और विद्वानों को देखकर वे अपनी नालकी पालकियों से तुरन्त ही उतर पड़ते थे। विद्वान् के मुख से निकला हुआ आदेश उनके लिए वेद वाक्य होता था। विधर्मियों के आक्रमणों और बर्बरतापूर्ण व्यवहार से अति कुंठित होकर भी इस देश में सदियों से जमी हुई मान्यताएँ जन साधारण के मन से निर्मूल न हो सकी थीं। फिर नदिया तो सनातन विद्याभूमि थी। वहाँ का जनसमाज अब भी अपने उत्तम संस्कारों को छोड़ने के लिए तैयार न था। विदेशी विधर्मी शासक और उनके टुकड़खोर कुछ ब्राह्मण, क्षत्रिय गण भले ही प्राचीन सामाजिक मान्यताओं की उपेक्षा करते रहे पर नदियावासी जनसमाज ऐसा नहीं कर सकता था इसलिए दिग्विजयी को हराते ही निमाई नदिया के कुंठित जनसाधारण के लिए आशा और उत्साह का मूर्तिमान प्रतीक बन गये थे। शास्त्रार्थ में इस विजय से नदिया का मनोबल इतना बढ़ा कि शची माँ के द्वार पर इन दिनों सदा भीड़ लगी रहती थी। सबका स्वागत सत्कार करते-करते माँ की बूढ़ी काया बिखर-बिखर जाती थी। जान-पहचान, रिश्ते-नाते की औरतों ने इन दिनों में माँ से न जाने कितनी बार कहा, अब तो बहू ले आओ, बहू ले आओ। शची माँ का मन भी बहू लाने के लिए मचल उठा। वैसे निमाई के लिए अनेक अच्छे-अच्छे घरों से प्रस्ताव आने लगे थे पर शची माँ ऐसी बहू चाहती थीं जो रूप और गुणों में उनके बेटे की खरी जोड़ीदार बन सके। रूप-गुण, दान-दहेज सभी तुलाओं पर अपनी भावी पुत्रवधू को तौलने की लगन में वे आने वाले रिश्तों पर रिश्ते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्वीकार करती चली गईं। कुछ बेटी के बाप बुरा भी मान गये, कुछ निन्दा करने पर उतारू हो गये, कहें कि बुढ़िया अपने घर में बहू लाना ही नहीं चाहती, कमासुत बेटे पर राज करना चाहती है। शची माँ के कानों में भी ऐसी भनकें पड़ ही जाती थीं परन्तु उन्होंने इन कटूक्तियों की परवाह न की।

सबेरे नहाने जाती तो वहाँ भी असंख्य स्त्रियाँ 'नदिया के गौरव' की जननी के पावन चरण स्पर्श करने में होड़ लगाने लगी। इन्हीं दिनों में जब नहा-धोकर वे घर लौटने लगतीं तो एक लड़की अपनी दासी के साथ शची माँ के पास आती, उनके चरणों में अपना प्रणाम निवेदन करती। शची माँ ने पहले कुछ दिनों तक उसे कुछ देखा कुछ न देखा और आदत के अनुसार अशीष कर उधर से ध्यान हटा लिया; बात आई गई हो गई। लेकिन हर दिन उस कन्या का यह नियम बन गया कि शची माँ के पैरों में ढोका देने के लिए वह अवश्य आती थी। एक दिन वह तब आई जब माँ नहाकर वस्त्र बदल रही थीं। वह चट से आगे बढ़कर उनकी धोती धोने लगी। खैर यह भी कोई असाधारण बात न थी, घाट पर आने वाली नगर की बहुत सी बहू-बेटियाँ शची माँ की यह सेवा करती ही रहती थीं, मगर आज इस लड़की पर माँ का ध्यान बार-बार जाने लगा। यह सच था कि गोराई में वह लड़की उनके लाडले की बराबरी नहीं कर सकती थी और शायद इसीलिए शची माँ ने अब तक उसे कभी आकर्षित होकर नहीं देखा था। लेकिन आज पहली बार उनका ध्यान गया कि लड़की का रंग उनके निमाई से दबता हुआ होने पर भी उसका नाक-नक्शा बहुत ही सुन्दर था। एक काया की सुन्दरता होती है और एक गुणों की। गुणों की सुन्दरता काया की सुन्दरता को एक ऐसी अनोखी आब दे देती है कि कोरी काया की सुन्दरता उस आभा को कभी पा ही नहीं सकती। इस लड़की में शची माँ को इस समय वही आभा दिखलाई पड़ी। माँ ने देखा कि लड़की की आँखें उनके बेटे जैसी बड़ी-बड़ी और मोहक हैं। उसका रूप, लावण्य माँ को पल-पल में नया लगने लगा। लड़की जब पास आई और नियमानुसार प्रणाम किया तो उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेर शची माँ ने पूछा—"तुम किसकी बेटी हो ?"

कन्या ने विनीत भाव से अपने पिता का नाम बतलाया, सनातन मिश्र। माँ ने फिर उसका नाम पूछा—लड़की ने सलज्ज भाव से बतलाया विष्णुप्रिया। यहाँ से भावी नाते में बंधी दो पीढ़ियों में संवादों का क्रम आरम्भ हुआ। अब तो विष्णुप्रिया शची माँ के नहाने के समय पर ही पहुँचने लगी। उनके पैर छूती, उनकी नहायी हुई धोती धोने की ऐसी ताक में रहती कि शची माँ के मुख से 'न' शब्द भी निकलने का अवसर ही न आ पाता था। क्रमशः 'न' कहने को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावना मन से निकल गई, उन्हें उसकी सेवा सुहाने लगी। विष्णुप्रिया उनके नहाये हुए वस्त्र को धोती, उनकी गंगाजली को माँज-धोकर तथा पानी भर कर रखती और इस तरह दिनों-दिन माँ का मन बराबर लूटती जाती थी। शची माँ सोचने लगीं कि यह लड़की भले ही पहली बहू जैसी सुन्दर न हो, गोराई में नगर की अन्य कन्याओं से भले ही दबती हुई हो पर नाक-नक्शे में ऐसी सिजल कन्या लाखों में एक ही दिखलाई देती है। आँखें तो हूबहू निमाई की आँखों जैसी बड़ी-बड़ी हैं। सब मिलाकर जोड़ी बहुत अच्छी है। इस लड़की में गुणों और श्रद्धा की इतनी प्रचुरता है कि उसके रूप लावण्य को चार चाँद लग जाते हैं। धीरे-धीरे शची माँ का मन विष्णुप्रिया में ऐसा बस गया कि वे उसे बहू बनाकर अपने घर लाने के लिए मन ही मन उतावली हो उठीं। पर रिश्ते के लिए सनातन मिश्र से बात चलाने में उनका हियाव नहीं पड़ता था। सनातन मिश्र राजपंडित थे, बड़े पैसे वाले थे, बड़े कुलीन भी थे। शची माँ को यह डर था कि वे उनके जैसे दरिद्र के घर अपनी कन्या न देंगे। दो-चार दिन इसी ऊहापोह में निकल गये। एक दिन अपने बेटे की महिमा का ध्यान करके, भगवान् का नाम लेकर उन्होंने काशी घटक को बुलवाया और कहा—"सनातन मिश्र के मन की थाह लो, वे मेरे निमाई से अपनी कन्या का विवाह करेंगे?"

काशी घटक अपने काम में बड़ा होशियार आदमी था। वह मिश्र जी के घर गया, इधर-उधर की चार बातें बनाईं, फिर धीरे से असली बात छेड़ी—"अब तो आपकी कन्या भी श्रीहरि की कृपा से हाथ पीले करने योग्य हो गई है। कहीं कोई लड़का-वड़का देखा है?"

राजपंडित बोले—"हाँ, यह चिन्ता अब मुझे भी कुछ-कुछ सताने लगी है। तुम तो घटक हो, तुम्हीं बताओ न कोई लड़का।"

काशी घटक ने खोपड़ी खुजलाई और कहा—"वैसे तो दादा आपके घर से संबंध जोड़ने योग्य कई लड़के हैं, पर आपके पूछते-पूछते जो नाम मेरे मन में अटका है वह लड़का तो बस अपूर्व ही है। हाँ-ऽ, उसमें यह कसर तो आप समझ लीजिये जरूर है कि लड़का दुहाजू और धन-सम्पत्ति में भी आपकी बराबरी नहीं करता; पर दादा, रूप, गुण, विद्या, यश और सुनहरे भविष्य को दृष्टि से देखेंगे तो कहेंगे कि काशी, जिस लड़के का ध्यान तेरे मन में इस समय आया है वैसा तो ढूंढ़ने पर भी त्रिलोक में भी नहीं मिलेगा।"

"अपनी घटकाली विद्या छोड़ो और सीधे-सीधे बतलाओ कि किस लड़के के सम्बन्ध में कहते हो।"

"अरे वही, दिग्विजयी को धूल चटाने वाला हमारी नदिया का गौरव, स्व०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगन्नाथ मिश्र का पुत्र विश्वम्भर।"

नाम सुनते ही राजपण्डित के चेहरे पर चमक आ गई, वे अपने आसन से उठे, काशी से कहा—"मैं अभी आता हूँ।" घर के भीतर जाकर वे पत्नी से बोले—"सुनती हो, विधाता आज हम पर विशेष प्रसन्न हुए हैं।" घरवाली तुरंत पति के पास आयी। पति-पत्नी दोनों ही आपस में बातें करने लगे। सनातन जी के एक बेटी और एक बेटा था। विष्णुप्रिया बड़ी थी और यादव छोटा। सनातन जी और उनकी पत्नी अपनी बेटी के लिए बहुत दिनों से संबंध की खोज कर रहे थे। वैदिक श्रेणी के ब्राह्मणों की संख्या नदिया और आस-पास के क्षेत्रों में कम थी। उनमें भी संबंध बाँधने योग्य घरों-वरों की संख्या और भी कम थी। इसलिए पति-पत्नी को जब अपने नगर के ही एक सर्वगुण सम्पन्न सुख्यात सुपात्र का नाम मिला तो वे फड़क उठे। यह ठीक है कि उनकी कन्या दुहाजू वर को व्याही जायगी, पर ऐसा लड़का दिया लेकर भी कहीं ढूंढ़ने को न मिलेगा। पत्नी की सहमति लेकर राजपण्डित बैठक में आये और काशी से बोले—"अरे भाई काशी, जब नाम सुझाया है तो संबंध की बात भी तुम्हीं आगे बढ़ाओ। क्या शची देवी हमारी बेटी को अपनी पतोहू बनाने के लिए राजी हो जायेंगी?"

"अवश्य होंगी दादा, और न होंगी तो मैं उन्हें राजी कर लूंगा। अरे, तुम्हारे ऐसा वड़ा घराना उन्हें सम्बन्ध जोड़ने के लिए मिलेगा, हमारी सर्वगुण सम्पन्ना विष्णुप्रिया जैसी पुत्रवधू मिलेगी, फिर भला वे राजी क्यों न होंगी। हाँ, इतनी कसर जरूर है कि निमाई पण्डित हमारी विष्णुप्रिया बेटी से अधिक गोरे हैं, उनकी पहली पत्नी भी बड़ी सुन्दर थी—इसलिए शची माँ का मान-मनावन मुझे कुछ अधिक करना पड़ेगा, सो जरा····।"

राजपण्डित बोले—"सो वो कुछ नहीं काशीनाथ, यह काम तुमको करना ही होगा। अपनी घटकाली विद्या का पूरा चमत्कार यह नाता जोड़ने में दिखलाओ। मैं तुम्हें संतुष्ट कर दूंगा।"

"हें-हें-हें, सो तो आप ही लोगों का दिया खाता हूँ दादा! देखिये भगवान् ने चाहा तो शीघ्र ही शुभ संवाद के साथ यहाँ आकर अपना मुँह मीठा करूँगा।"

राजपण्डित सनातन जी मिश्र की कन्या से आचार्य विश्वम्भर मिश्र का विवाह तय होने की खबर तेजी से चारों ओर फैल गई। सनातन जी और उनकी पत्नी बेहद प्रसन्न थीं लेकिन सबसे अधिक प्रसन्न तो स्वयं विष्णुप्रिया थी, उसने तो बहुत पहले से ही विश्वम्भर को अपने मन से वरण कर लिया था।

विष्णुप्रिया नियम से तीन बार गंगा स्नान के लिए प्रतिदिन जाती थी। कभी-कभी दूर मर्दाने घाट पर चंचल-शिरोमणि निमाई अपनी शिष्य मण्डली के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ उसे दिखाई पड़ जाते थे। कभी-कभार गंगा जी की राह पर आते-जाते भी वह उन्हें देख चुकी थी। मन उनसे गुप-चुप बँध चुका था। निमाई के दिग्विजयी होने का समाचार पाकर उसका गोपनमन सहसा उसके सामने प्रकट हो गया। अपने इच्छित वर को प्राप्त करने के लिए ही उसने शची माँ की शरण गही और गौरी भवानी की मनौतियाँ मानी थीं। विष्णुप्रिया परम निष्ठावान् थी। यों तो यह संस्कार उसके कुल ही का था किन्तु विष्णुप्रिया में औरों से कुछ अधिक ही था। माँ बड़ी कुशल गृहिणी थीं, उनकी निगरानी में विष्णुप्रिया बड़ी प्रबन्ध-पटु भी बन गई थी। प्रतिभा सम्पन्न होने के कारण पिता ने भी बड़े चाव से उसे विदुषी बनाया था। शची माँ से वरदान पाकर सब लोग परम संतुष्ट हुए। 'शुभस्य शीघ्रम्' कह कर सनातन जी ने चटपट ज्योतिषी को बुलवाया।

ज्योतिषी महाराज अपनी पोथी पत्रे लेकर घर से कुछ ही आगे बढ़े थे कि दूसरी गली से निमाई पण्डित आते हुए दिखलाई दिये। ज्योतिषी महोदय को उन्हें देखते ही उत्साह आ गया, लपककर बोले—"अरे बेटा निमाई, तुम खूब मिले, वाह-वाह।"

क्यों काका, कोई काम है ?"

"अरे अब तो काम ही काम है बेटा। जानते हो मैं इस समय कहाँ जा रहा हूँ !"

"काका, मैं ज्योतिषी तो हूँ नहीं जो बताऊँ।"

"राजपण्डित सनातन मिश्र के यहाँ से बुलावा आया है। उनकी कन्या के विवाह का मुहूर्त विचारना है।"

निमाई ने आँखें नचाकर कहा—"तब तो काका तुम्हारी पाँचों उँगलियाँ घी में और सिर कड़ाही में होगा। राजपण्डित की कन्या का विवाह कहाँ हो रहा है ?"

काका और अकड़ गये, मूँछों पर ताव देकर बोले, "केशव कश्मीरी को पछाड़ने वाले मेरे लाडले भतीजे से होगा, और किससे होगा।"

निमाई बोले—"ये तो नई खबर सुनाई तुमने। बस, अब तो झटपट मेरे ब्याह की तिथि निकाल दो काका। देर होने से तुम्हारी ही मिठाइयों का नुकसान होगा।"

ज्योतिषी काका आँखें नचाकर बोले—"कहने को तू इतना बड़ा विद्वान हो गया है, पर रहा नटखट का नटखट ही। अरे यह क्यों नहीं कहता कि घर में बहू लाने के लिए तेरा मन मचल रहा है।"

निमाई हंस पड़े, कहा—"वह भी तुम्हारे ही लाभ के लोभ से चाहता हूँ काका, घर में बहू आ जायगी तो तुम्हारा स्वागत-सत्कार अच्छा होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"भला रे भला, मेरे स्वागत-सत्कार के लिए ही तू ब्याह कर रहा है ?"

"और नहीं तो क्या, मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है।"

"सच निमाई, तू ब्याह नहीं करना चाहता ? पर शची भाभी तो राजपण्डित को वचन दे चुकी हैं।"

"बड़ों की बात वही जानें, मेरी इस विषय में अपनी कोई इच्छा नहीं है।" कहकर निमाई पण्डित तो अपनी राह लग गये पर ज्योतिषी महाराज की खोपड़ी उनकी बात से अपनी सनक में चढ़कर राजपण्डित के घर तक लगातार सनसनाती ही चली गयी। राजपण्डित के घर आकर उन्होंने कहा—"मुहर्त शोधन करवाने से पहले आप विवाह की बात अच्छी तरह से पक्की पोढ़ी कर लें महाराज।"

सनातन मिश्र सुनकर चौंक उठे, कहा—"बात तो पक्की हो चुकी है। काशी घटक मुझे वतला गया है कि शची माँ ने यह शादी तय कर ली है।"

"हाँ, पर लड़के का मन कुछ और है। यहाँ आते समय निमाई मुझे रास्ते में मिला था। उसने मुझसे साफ कहा कि बड़ों की बातें बड़े जानें, मेरी कोई इच्छा नहीं है। कालिदास के लड़के, तिसपर वह तो ठहरा दिग्विजयियों की चोटियाँ उखाड़ने वाला, अपने आगे किसी को कुछ समझता है भला।"

राजपण्डित की सारी खुशियों पर पाला पड़ गया। थोड़ी ही देर में घर में यह समाचार फैल गया कि स्वयं निमाई को यह संबंध पसंद नहीं है। विष्णुप्रिया के ऊपर तो मानो वज्रपात ही हो गया—'मुझे अस्वीकार किया ? हाय; मैं बड़ी अभागी हूँ, मेरा जीना ही वेकार है।' बड़ों की लाज, कुल की मान-मर्यादा सब कुछ सम्हालते-सम्हालते भी विष्णुप्रिया अपने को न सम्हाल पायी, वह वेहोश हो गयी। सनातन मिश्र ने अपने नातेदारों को बुलवाया और सलाह होने लगी कि आखिर इस अपमान को किस प्रकार से झेला जाय।

उड़ते-उड़ते खबर शची माँ के पास पहुँची, निमाई तक भी पहुँच गई। निमाई पण्डित तुरत चैतन्य हो गये। उन्होंने फुर्ती से काम किया; अपने भावी श्वसुर के पास यह सन्देश भिजवाया कि ज्योतिषी की भ्रमपूर्ण बातों पर ध्यान न दें; अपनी माता की इच्छा के विरुद्ध जाने की बात कभी उनकी कल्पना की कल्पना में भी नहीं आयी।

निमाई का संदेश क्या पहुँचा मानो ढाई घड़ी की भद्रा का संकट टला। उदासी के बादल देखते-देखते ही छँट गये, हँसी-खुशी छा गई। दोनों ओर से ब्याह की जोरदार तैयारियाँ होने लगीं।

नदिया में कायस्थ कुल के एक बड़े जमींदार बुद्धिमंत खाँ रहते थे। वे बड़े ही धर्मप्राण व्यक्ति थे। जब निमाई के ब्याह की बात तय हुई तब उन्होंने शची माँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को यह सन्देश भिजवाया कि आपके बेटे के विवाह का सारा व्ययभार उठाने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया जाय। शची माँ को भला इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी किन्तु पण्डित मुकुन्द संजय, जिनके चण्डीमण्डप में निमाई अपनी पाठशाला चलाते थे, यह समाचार पाकर भड़क उठे, बोले : "निमाई पर सबसे अधिक मेरा ही अधिकार है। इस विवाह का सारा खर्च मैं उठाऊंगा।" दो रईसों में इसी बात को लेकर खींचतान होने लगी। अन्त में समझावन बुझावन के बाद मामला इस तरह से रफा-दफा हुआ कि निमाई सबके हैं, उनके विवाह में जो जिसकी श्रद्धा हो वह खर्च करे। राजा बुद्धिमन्त कायस्थ जिनको शाही दरबार से 'खाँ का खिताब मिला था, बोले—"ठीक है, मुकुन्द जी जिस तरह से चाहें अपना भाव व्यक्त करें किन्तु इस विवाह का पूरा खर्च मैं ही उठाऊंगा।" राजा बुद्धि-मन्त खाँ ने ऐसे हौसले से बरात निकलवायी कि जान पड़ता था कोई बड़ा राज-कुमार दूल्हा बनके जा रहा है। नवद्वीप और उसके आस-पास के क्षेत्र के सभी कुलीन और प्रतिष्ठित ब्राह्मण क्षत्रिय, कायस्थ, वैश्य आदि बराती बनकर चल रहे थे। नचनियों गवैयों की टोलियां जुलूस के साथ थीं। बड़ा लाव-लश्कर चल रहा था। ऐसी बड़ी शोभायात्रा नदिया में पहले कभी किसी वर को नसीब नहीं हुई थी। राजपण्डित सनातन मिश्र अपने अतीव उत्साह में थोड़े-थोड़े हुए जा रहे थे। विवाह मण्डप में जब शुभ दृष्टि का समय आया तो उपाध्याय, पुरोहित तथा घरवालों के बार-बार कहने पर भी विष्णुप्रिया की आँखें अपने प्रिय को देखने के लिए लाज के मारे उठ ही न पायीं। बहुत कहने पर वधू ने अपना सिर तनिक उठाकर घूंघट की ओट से अपने प्राणनाथ को देखा। चार आँखें क्षणभर के लिए मिलीं। जन्म-जन्मान्तर की प्रीतिडोर एक-दूसरे को परस्पर खींचती ही चली गई। 'तू मेरी है, तू मेरा है, कौन कहे, वहाँ तो 'तू मैं है, मैं तू हूँ' वाली स्थिति हो गई थी। बड़े दान-दहेज के साथ राजपण्डित ने अपने बेटी-दामाद को विदा किया।

शची माँ के घर में अपार उल्लास छाया हुआ था। बड़े समारोह के साथ वधू का गृह प्रवेश हुआ। बड़ी हँसी-खुशी, खेल-तमाशे और ज्योनार हुई। रात में वर-वधू जब अपने वासगृह में पहुँचे तो अखण्ड सौभाग्यवती विष्णुप्रिया देवी अनजाने भय से काँप उठीं। कमरे की चौखट लाँघते हुए उन्हें ठोकर लगी और वे लड़खड़ा गईं। निमाई ने तुरन्त ही अपनी पत्नी को सम्हाल लिया। विष्णु-प्रिया के पैर के अंगूठे से लहू टपकने लगा था, निमाई ने उस पर अपना अंगूठा रख दिया। पति-पत्नी मन-वचन-काय से एक हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आठ

शची माँ के घर में बहू क्या आयी मानो सब सुख एक साथ आ गया। चारों ओर सम्पन्नता ही सम्पन्नता दिखलाई दे रही थी। रोज ही कहीं न कहीं से अन्नधन के भंडार उपहार स्वरूप आया करते थे। विष्णुप्रिया कुशल गृहिणी थीं, चीज वस्तुओं को सहेज कर रखना, आये गये का उचित स्वागत-सत्कार करना और बड़े-बूढ़ों को अपनी सेवा से रिझाना उन्हें खूब आता था। पति-पत्नी आपस में खूब घुल-मिल गये थे। शची माँ ने अपने जीवन में पहली बार ही इतना सुख अनुभव किया था। उनका घर स्वर्ग बन गया था।

दिन बीतने लगे। एक दिन निमाई ने कहा—"माँ, मेरी इच्छा है कि मैं पिता जी का गया-श्राद्ध कर आऊँ।" मैं भला इस काम के लिए अपने बेटे को कैसे मना करतीं। सारी तैयारी हुई, यात्रा का मुहूर्त निकाला गया और आचार्य विश्वम्भर मिश्र अपने शिष्यों और अनुचरों के साथ पिता का गया-श्राद्ध करने के लिए घर से चले। इन सबके होते हुए भी शची माँ का मन न माना, उन्होंने अपने बहनोई चन्द्रशेखर जी से आग्रह किया कि तुम भी चले जाओ, एक बड़े बूढ़े का साथ रहना उचित है।

क्वार का महीना था, मौसम हर तरह से सुखदायी था। गंगा के तीरे-तीरे चलते हुए यह लोग मन्दार पहुँचे। वहाँ निमाई को ज्वर चढ़ा। वे पहले दो-एक बार बेहोश और कुछ एक क्षणों के लिए प्रलापी अवश्य हो चुके थे लेकिन ज्वर या अन्य किसी प्रकार का रोग उन्हें कभी नहीं हुआ था। ज्वर बढ़ता ही गया। गाँव के वैद्य आये, बूढ़े सयानों ने झाड़-फूंक की पर ज्वर न उतरा। सब लोग चिन्ता के मारे फीके फक पड़ गये। गाँव वालों को भी बड़ी चिन्ता थी। साक्षात् भगवान् जैसे दिव्य रूप वाले नदिया के महान् पण्डित उनके गाँव में आकर यों चिंताकारक ज्वर से ग्रस्त हो गए हैं। ईश्वर न करे, कहीं कुछ हो जाय तो उनका गाँव सदा के लिए कलंकित हो जायगा। पर किया क्या जाय। उपाय केवल एक ही था, प्रार्थना सतत प्रार्थना। निमाई के मौसा बूढ़े चन्द्रशेखर जी एक लौ लगा-कर प्रभुपद-नत हो गये, 'हे दीनबंधु, संकटमोचन, मेरे निमाई का कष्ट निवारो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसकी माता ने कदाचित् इसी क्षण की पूर्वाशंका से बँधकर मुझे साथ आने के लिए प्रेरित किया था। हे प्रभु, मेरी लाज रखो, निमाई का रोग मुझे लग जाय किसी की आई मौत मुझे आ जाय। बुढ़ापे में मेरे मुख पर कालिख न लगे।'

राम-राम करके मूर्छा भंग हुई। लाल डोरे पड़े कमल नयन खुले, एक बार अपने दायें से बायें तक देखा। एक ओर मौसा जी बैठे थे और दूसरी ओर उसी गाँव के एक सौम्य मुख वयोवृद्ध तेजस्वी ब्राह्मण। पायताने और अगल-बगल शिष्य तथा अनुचरों की भीड़ खड़ी थी। निमाई पण्डित सब को देखने लगे। फिर खाट से उठने का उपक्रम किया। मौसा ने कहा, दूसरों ने समझाया पर हठीले निमाई के आगे किसी की न चली। वे सबके हाथ झटक कर बैठ गये, पूछा—"मैं यहाँ कब से ज्वरग्रस्त पड़ा हूँ ?"

एक शिष्य ने अवधि बताई। आप झुँझलाए, कहा—"मैं अपने पिता का गया-श्राद्ध करने जा रहा हूँ, शुभ काम में यह बाधा सहन न करूँगा।" फिर एक बार अपनी दाईं ओर मौसा जी की ओर बैठे धवलकेश शान्तिपुञ्ज ब्राह्मण को देखा, पूछा—"आप इसी गाँव में रहते हैं महाराज ?"

"हाँ, पण्डित जी।"

"आप मुझे नाम लेकर पुकारें। अपने ज्वर के उपचार के लिए आपसे एक भिक्षा माँगता हूँ।" निमाई ने जिस तरह अंजलि बाँधकर उनसे प्रार्थना की उसे देखकर वृद्ध ब्राह्मण बड़े भाव में आ गये। उनकी हथेलियों के ऊपर-नीचे अपनी हथेलियाँ रखकर बोले—"तुम्हारे लिए अपने प्राण तक सहर्ष दे सकता हूँ। बेटा विश्वम्भर, इस छोटी सी आयु में तुमने जैसी कीर्ति अर्जित की है उसके अनुरूप तुम्हारे सुनहरे भविष्य के लिए मैं एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों का सुखद मोह भी समर्पित कर सकता हूँ।" कहते-कहते वृद्ध ब्राह्मण की आँखें छलछला उठीं। निमाई उनकी आँखों में आँखें डालकर बोले—"मेरा यह विश्वास और भी प्रबल हो उठा है कि यह ज्वर साधारण नहीं है। मेरे जन्म-जन्मान्तर का कोई संस्कार इस ग्राम से जुड़कर मुझसे साधिकार श्रद्धा माँग रहा है। मेरा मन कहता है कि इस ग्राम के प्रतीक स्वरूप, आपके समान शांत तेजस्वी पितृ तुल्य गुरुजन के चरणोदक पान करके मैं निश्चित ही चंगा हो जाऊंगा। आप मेरी श्रद्धा और आत्म-विश्वास की परीक्षा ले लें।"

ब्राह्मण ने और भी गद्‌गद होकर बड़े भाव से निमाई पण्डित का कहा किया। चरणोदक पान करके उनके प्रति प्रणाम करके निमाई फिर लेट गये। घड़ी भर बाद ही उनका कहा सत्य सिद्ध होने लगा। ज्वर धीरे-धरे घटने लगा। निमाई पण्डित खूब सोये, रात भर सोये। सबेरे उठे तो चंगे थे केवल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमजोरी भर ही शेष रह गयी थी। सारा गाँव इस घटना से निमाई के प्रति श्रद्धाविभोर हो गया। वह बूढ़े विप्र तो स्वयं अपने गाँव के लिए जीते-जागते ठाकुर ही बन गये।

गयाधाम पहुँचते-पहुँचते तक निमाई के स्वभाव में एक स्पष्ट परिवर्तन आ गया था। उनके शिष्य और अनुचर सभी यह अनुभव करने लगे थे कि बुखार से अच्छे होने के बाद निमाई का नटखटपन एकदम से विलुप्त हो गया है। उनमें अब ऐसा गाम्भीर्य आ गया है जैसा पहले कभी नहीं था। उनकी चाल भी अब वैसी तेज नहीं रही थी, वह विचारों में खोये धीरे-धीरे चलते थे। जैसे ही गयाधाम के दर्शन होने लगे, वैसे ही उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया। और फिर तो यह क्रम हो गया था कि जिस किसी श्रद्धा प्रतीक को देखते उसे ही सादर नमन करते थे।

उन्होंने सविधि अपने पिता का गया-श्राद्ध किया, फिर सारे पवित्र मन्दिर घूमते-घामते जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने गयासुर के झुके मस्तक पर अपना पादपद्म रखा था वहाँ पहुँचे। अचानक किसी पंडे ने अपने दूकानदारी लटके के अनुसार यजमानों में भक्तिभाव का उद्रेक करने के लिए बड़े नाटकीय ढंग से हाथ बढ़ाकर ऊँची आवाज़ में कहा—"देखो, श्री भगवान् के पदचिह्न। दर्शन करो।"

निमाई को लगा कि कोई सीधे उनसे ही यह कह रहा है और वे पत्थर पर बने भगवान् के पदचिह्नों को एकटक देखने लगे। उनके अंदर एक दुनिया बदलने लगी थी। अब तक जो सब कुछ था वह अब कुछ भी नहीं रहा। कुछ नया फेर-बदल हो रहा है, ऐसा लगता है कि जल भरा समुद्र भाप बनकर उड़ता चला जा रहा है और दूसरा सागर कहीं सोते से उमड़ कर पुराने जल की जगह को भरता चला जा रहा है। काया का आभास ही विलुप्त हो गया था, केवल श्रीकृष्ण भगवान् के चरणचिह्न ही दिखाई पड़ रहे थे। विश्वम्भर पण्डित ने केवल काव्य और व्याकरण की दृष्टि से ही अब तक श्रीमद्भागवत को देखा था, उसी महाकाव्य के रसरूप नायक परम योगेश्वर गोपीजनवल्लभ राधारमण भगवान् श्रीकृष्ण के चरणचिह्न साक्षात् देख रहे हैं। कैसा अनहोना लग रहा है! जिससे भेंट करने की कल्पना भी कभी पागलपन मालूम होती थी उससे इस क्षण आमना-सामना हो रहा है। अति तीव्र संवेदनशील भाव-गरुड़ पर आरूढ़ होकर निमाई की प्रतिभा एक अनोखे सौन्दर्य से जा मिली। निमाई शुरू से ही इतने मेधावी रहे थे कि किसी ज्ञान या बात को एक बार मन में धारते ही वह सदा के लिए उनकी अपनी स्थायी निधि हो जाती थी। इसी अनोखी प्रतिभा और तीव्र मेधा शक्ति के कारण वे इतनी छोटी उमर में ऐसे प्रकाण्ड पण्डित बने थे। वही प्रतिभा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस समय ऐसे अनोखे सौन्दर्य बोध से जा जुड़ी कि निमाई चैतन्य हो गये। वह चेतना जो अब तक केवल शिष्यों को पढ़ाई जाने वाली वस्तु थी, चार पण्डितों के बीच में छिड़ जाने वाली गप-शप या किसी बड़ी नाक वाले पण्डित को छकाने भर के ही काम आती थी, वह जो कोरा शब्द तर्क मात्र थी, अब सहसा प्रत्यक्ष होकर उनके सामने एक ऐसे रूप में प्रकट थी जिसे देखकर फिर और कुछ देखने की चाह नहीं रहती। एकदम नया और अनोखा परिचय मिल रहा था। निमाई ध्यान-मग्न खड़े थे। धीरे-धीरे उनकी आँखें गंगा-जमुना बहाने लगीं, होंठों का कम्पन बढ़ा, सारा बदन एक आनन्द लहरी से लहरा उठा। उनके अङ्ग-अङ्ग में पुलक स्पन्दन इतने वेग से उभर रहा था कि पैर टिकाये नहीं टिकते थे। वे गिरने-गिरने को हुए पर गिरे नहीं। लोगों ने ऐसे धारोंधार आँसू और ऐसी परमानन्द छवि सुनी भले ही हो पर देखी नहीं थी। जो यात्री विष्णुपदी के दर्शन करने आए थे वे निमाई के साक्षात् भावरूप भगवान् को नयनभर निहारते ठगे से खड़े रह गये थे। किसी को उनके पास जाने का साहस नहीं होता था। गौरांग में आनन्द का वेग बढ़ता ही गया। दर्शकों को ऐसा लगता था कि उनकी काया मन की तरह ही थिरक रही है।

भीड़ में संयोग से ईश्वरपुरी जी भी आ मिले। नदिया में निमाई से उनका नेह-नाता बँध ही चुका था इसलिए वे उन्हें देखकर बड़े प्रसन्न हुए। पर उस समय निमाई ऐसी दिव्य मुद्रा में थे कि न उन्हें किसी ओर आँख उठाने की सुध थी और न इन्हें निमाई को एकटक निहारने से फ़ुरसत। सब आनन्द विभोर ठगे से खड़े रह गये। सबके देखते ही देखते आनन्द पुलक में झूमते-लड़खड़ाते निमाई की काया बेसुध होकर धरती पर गिर पड़ी। ईश्वरपुरी जी अब न रुक सके, तुरन्त आगे बढ़कर निमाई को सम्हाल लिया। शिष्यगण और चन्द्रशेखर जी आदि भी आगे बढ़ आये। ईश्वरपुरी जी ने अपनी जाँघ पर उनका सिर रखकर कमंडलु से जल के छींटे दिये। कपाल, मुँह और आँखों पर गीले हाथ बार-बार फेरे। भीड़ कौतूहल वश आगे बढ़ी आती थी, अनुचर और शिष्यगण उसे रोकने का जतन करने लगे। कुछ देर में निमाई पण्डित को होश आ गया। आँख खुलते ही ईश्वरपुरी जी को देखा, फिर पुलकित हो गये। बोले : "मेरी यात्रा सफल हो गई। यह जन्म सफल हो गया। आज मुझे श्रीकृष्ण के पादपद्मों की अनुरक्ति मिल गई। स्वामी जी, आज मुझे मेरा वह स्वरूप मिल गया जिसे पाये बिना जीव को जन्म-जन्मान्तरों तक अपने पूर्णत्व का बोध नहीं होता। स्वामी जी, अब मेरे पास मेरा कुछ भी नहीं रहा। माँ का निमाई, लोकविदित विश्वम्भर जो आपको नदिया में मिला था वह अब यहाँ नहीं है। अब तो इस काया में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्ण चैतन्य निवास कर रहे हैं।'' निमाई का स्वर न जाने किस गहराई से तपे निखरे तरल सोने सा निकल रहा था।

ईश्वरपुरी जी को लगा कि सचमुच निमाई के अन्दर अब कोई और ही व्यक्ति बोल रहा है। वे बोले—''पण्डित, तुम तो नवद्वीप में दर्शन मात्र से ही मेरे मन में बस गये थे। और तो तुम्हें देखकर मुझे लगता है कि मैं भी अपने वश में नहीं रहा। बोलो, मैं तुम्हारा क्या प्रिय करूँ ?''

''आपके दर्शन ही मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं।'' कहते हुए निमाई के नयन फिर अगम भावसिंधु की मीन बन गये। आँसुओं में डूबी आँखें केवल अपने प्रियतम श्रीकृष्ण को ही देखने लगीं। बाहर सूना हो गया।

किसी तरह स्वस्थ चित्त होकर निमाई अपनी टोली सहित घर पहुँचे। उन्होंने स्वयं ही रसोई राँधी। सब करके छुट्टी पायी भी न थी कि ईश्वरपुरी जी अपने डेरे से होकर वहाँ आ पहुँचे। कहने लगे—''पण्डित, सारे बन्धन तोड़ कर मैं संन्यासी बना था लेकिन अब तुम्हारे मोह में फिर से जकड़ गया हूँ।''

निमाई बोले—''आप अच्छे समय पर पधारे हैं। रसोई तैयार है, आरोगिये।''

''पण्डित, तुम्हारे पवित्र हाथों से बनाया हुआ भोजन पाकर मैं निश्चय ही बड़भागी हो जाऊँगा। लेकिन फिर तुम क्या खाओगे पण्डित ? अच्छा इसके दो भाग करके एक मुझे दे दो।''

निमाई साग्रह बोले —''स्वामी जी ननुनच न विचारें। कृपया आसन पर विराजें !''

बड़े भाव से उन्होंने ईश्वरपुरी जी को भोजन कराया। उनके शरीर भर में चन्दन का लेप किया। जब वे तृप्त होकर सुख से बैठ गए तब निमाई फिर से अपने लिए भोजन बनाने बैठे। दोनों के मन में अपार आनन्द उमड़ रहा था।

इसके दो एक दिन बाद ईश्वरपुरी जी ने निमाई को मंत्र-दीक्षा दी और कहा—''मेरे गोलोकवासी परमपूज्यपाद गुरु भगवान् माधवेन्द्रपुरी जी महाराज ने इस बंगभूमि में जो भक्ति-बीज बोया था, तुम उसी के अक्षयवट हो पण्डित। तुम्हें मंत्र देकर आज मेरे इस जन्म ही का नहीं, वरन् जन्म-जन्मांतरों का सौभाग्य उदय हुआ है।'' दोनों भक्त एक दूसरे में भगवान् को देखते हुए आलिगनवद्ध हो गये। आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे। निमाई के अन्तर में जाने कैसा अथाह अश्रु सागर भरा था कि जब उनके आँसू उमड़ते तो फिर उमड़ते ही चले जाते थे। ईश्वरपुरी जी के साथ निमाई का यही अंतिम दर्शन मेला था। ईश्वरपुरी जी चले गये। निमाई पण्डित अपनी टोली के साथ गया में ही रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका अब कहीं आने-जाने को मन ही न होता था। बैठे-बैठे प्रभु पदचिह्नों को निहारना और गुरु-मंत्र का जाप करना ही उनका एकमात्र काम हो गया था। मौसा चन्द्रशेखर जी को बड़ी चिन्ता हुई। निमाई घर लौटने का नाम ही न लेते थे। वे अपने में खोये गुम-सुम बैठे रहते थे। कोई घर लौटने की बात कहे तो जवाब तक न देते थे।

एक दिन बैठे-ही-बैठे वे एकाएक 'कृष्ण, मेरे पिता, तुम कहाँ हो।' कहकर मूर्च्छित हो गये। साथी लोग बड़े चिन्तित हुए। मूर्च्छित अवस्था में ही उनकी आँखों से अश्रुधार बहती रही। अनेक उपायों से वे होश में आये। चन्द्रशेखर जी को अब बड़ी चिन्ता लग गई थी, वे बोले—"निमाई बेटा, अब घर चल! आखिर यहाँ हम लोग कब तक पड़े रहेंगे। तुम्हारी यह दशा देख-देखकर तो मेरे प्राण सूख जाते हैं।"

"मैं अब कहीं नहीं जाऊंगा मौसा जी, मेरा तो यहीं घर है। आप लोग लौट जायँ। मैं जिस हालत में हूँ उसी में मस्त हूँ।"

"यदि तुम घर नहीं चलोगे निमाई, तो मैं यहीं के यहीं अपने प्राण त्याग करूँगा। तुम्हारी माँ ने मुझे तुम्हारे साथ भेजा था। अकेले लौटकर मैं भला उन्हें अपना मुंह क्योंकर दिखला पाऊँगा। हठ करके मेरे बुढ़ापे पर कालिख न लगाओ बेटा, मेरी बात मानो, घर लौट चलो।"

निमाई पण्डित थोड़ी देर तक चुपचाप विचार करते रहे फिर सविनय राजी हो गये। साथियों का संकट टला, मौसा जी की जान में जान आई। झटपट गठरी-मोठरी बाँधकर सब ने नदिया की ओर पयान किया। रास्ते भर वे प्रायः गुमसुम ही रहे। जब घर से चले तब चंचल उद्धत स्वभाव के प्रकांड पण्डित निमाई थे लेकिन लौटते हुए वे अब केवल कृष्णभक्त ही रह गये थे। उनके पुराने मनोव्यक्तित्व की छाया भी अब उनमें नहीं दिखलाई देती थी।

नदिया के निकट पहुँचते ही मौसा चन्द्रशेखर जी ने एक अनुचर को शुभ संवाद देने के लिए पहले ही घर भेज दिया। सुनकर शची माँ के सुख का पारावार न रहा। टोले पड़ोस वालों ने सुना, वे भी प्रसन्न हुए। लेकिन निमाई जब घर आए तो उन्हें देखकर सभी आश्चर्य-चकित रह गए। वही होते हुए भी वे पहचाने नहीं पड़ते थे। अपने में खाया हुआ, कभी आँसू बहाता, कभी मुस्कुराता और कभी अपने आपसे ही बतियाता हुआ नदिया का लाल नदियावालों के लिए एकदम नया हो गया था, औरतें मोह-मंडित माँ को समझायें कि इसे कोई छाया छू गई है। ईर्ष्यालु पण्डित कहें कि हम तो पहले ही से सोचते थे, निमाई एक दिन पागल हो जायगा। वैष्णवजन निमाई में आने वाले इस परिवर्तन के संबंध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में तरह-तरह की चर्चाएँ करने लगे। जो निमाई कभी वैष्णवों की खिल्ली उड़ाया करता था वह आज उन्हीं में से एक है।

निमाई कुछ लोगों को अपनी तीर्थ-यात्रा का वृत्तांत सुना रहे थे। जब विष्णुपदी का चर्चा आया तो वे करते-करते सहसा चुप हो गये। उनका मन तत्काल उड़कर फिर गया के उस पवित्र स्थल पर पहुँच गया था। आँखों से गंगा-जमुना वह चलीं। फिर प्रलाप शुरू हुआ, "कृष्ण ने यों कहा, राधा यह बोलीं, ललिता, विशाखा ने इस प्रकार अपना प्रणय निवेदन किया,' बस इसी तरह की बातें करने लगे।

सुनने वालों में मुरारि गुप्त नामक एक वैष्णव भी मौजूद थे। कभी निमाई पंडित उनके सामने वैष्णव भक्ति की नकलें उतार कर उन्हें छेड़ा करते थे। किन्तु आज वे स्वयं उसी रस में सराबोर थे। मुरारि गुप्त वहाँ से लौटने पर सबसे यही कहते फिरे, "मैं तो पहले से ही जानता था कि निमाई एक दिन परम वैष्णव सिद्ध होगा।"

शची माँ के मन में चिन्ता का पहाड़ उठ आया था। निमाई उनकी समस्त आशाओं, आकांक्षाओं और सुखों का केन्द्र बिन्दु था। उसी की बदौलत वे नगर में इतने मान-सम्मान और ऐश्वर्य की स्वामिनी थीं। यदि बेटा पागल हो गया तो फिर क्या होगा ? इन्हीं सब चिंताओं के मारे शची माँ अपने भीतर-ही-भीतर बहुत पीड़ा पा रही थीं। रात हुई उन्होंने विष्णुप्रिया से कहा—"बहू, इसका मन संसार की ओर फेरने का जतन करो। यदि यह कृष्ण का हो जायगा तो फिर हमारा नहीं रहेगा।" विष्णुप्रिया बेचारी क्या कहती। उसने रच-रच कर अपना शृङ्गार किया, पति शयन-कक्ष में आये तो बड़े भाव से उनका स्वागत किया। दोनों आलिंगनबद्ध हो गये। प्रेम उमड़ा तो निमाई के मन में उसने अपना ही रूप धारण कर लिया। विष्णुप्रिया अलग खड़ी रह गई और वे धीरे-धीरे चलकर खाट पर बैठ गये। न कोई बात न चीत, न विष्णुप्रिया का ध्यान न अपना ही। अपने में खोये गुम-सुम बैठे ही रह गये। बेचारी विष्णुप्रिया सकपका गई। पास जाकर उनका स्पर्श किया। उन्होंने उसे देखा, मुस्कुराये और फिर देखते ही देखते निमाई की आँखें फिर छलछला उठीं। आँसू उमड़े तो उमड़ते ही चले गये। विष्णुप्रिया घबरा गई। अपने कमरे से निकल कर वह भागी-भागी सास के पास गई, उन्होंने जगा कर कहा, "माँ उठो, शीघ्र उठो।"

शची माँ घबरा गईं ! उनका कलेजा धक से रह गया, पूछा : "क्या हुआ बिटिया ?"

"शीघ्र कमरे में चलो। उन्हें जाने क्या हो गया है माँ, रोते ही चले जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे हैं।" माँ ने कमरे में जाकर अपने पुत्र को रोते देखा तो चिपटा लिया। 'तुझे क्या हो गया है मेरे लालू, तू क्यों रो रहा है' शची माँ बार-बार पूछती रहीं पर निमाई ने कोई उत्तर न दिया, बल्कि माँ के इस प्रकार पूछने से उनके आँसुओं का वेग और बढ़ गया। ओट में खड़ी विष्णुप्रिया भी पति के साथ ही साथ मौन भाव से आँसू बहाने लगी।

माँ ने समझाया, "बेटा, तू तो महाज्ञानी है, इस छोटी सी आयु में ही नवद्वीप के पंडितों का सिरमौर बन गया है। तेरे इस प्रकार अधीर होने का कारण मेरी समझ में नहीं आता। तुझे रोते देखकर मेरा कलेजा डूबा जाता है मेरे लाल, रोना बन्द कर!" कहकर माँ स्वयं ही फूट-फूट कर रो पड़ीं।

माँ की दशा देखकर निमाई का मन कुछ-कुछ सम्हला। उनके हाथ पर हाथ रखकर वे बोले: "मेरे रोने से तुम तनिक भी चिंतित न हो माँ। मेरे यह आँसू दुःख से नहीं सुख से उपजे हैं। मन में मोर-मुकुट वनमालाधारी एक ऐसे दिव्य श्याम पुरुष की छवि अंकित हो गई है कि जिसे निहार-निहार कर मैं आनन्द-विह्वल हुआ चला जा रहा हूँ। माँ, ऐसा मनोहर रूप मैंने कहीं नहीं देखा है। वह रूप मेरे मन में इस तरह से प्रत्यक्ष हो गया है कि अब और कुछ देखते ही नहीं बनता है। मैं अपने आनन्द में लीन हूँ।"

माँ को समझाते हुए निमाई ने जो बातें कहीं उन्हें माँ भले ही सही ढङ्ग से समझी ना समझी हों, पर विन्णुप्रिया ने पहिचान लिया कि उनके पति अब तक उनके साथ जो प्रेम व्यवहार करते रहे वह वास्तव में इसी दिव्य और अलौकिक प्रेम की प्रतिच्छाया मात्र था। प्यार की वह नन्हीं सी बूंद ही अब समुद्र बनकर लहरा रही थी। अखंड सौभाग्यवती विश्वम्भर-वल्लभा इस समय उसी बूंद में समाकर सहसा लघु से विराट हो गई थी। शची माँ के मन में जहाँ अब भी भय था वहाँ विष्णुप्रिया का अंतर यह बोध पा रहा था कि वह और उनके पति अब अपने सूक्ष्म रूप से अनन्य और अविभाज्य हो गये हैं। पति का यह करुणानन्दी रूप ही पत्नी का अन्तः-सौन्दर्य भी है। दोनों का रसबोध एक है। शब्द और अर्थ के समान ऊपर से अलग-अलग दिखाई पड़ते हुए भी वस्तुतः वे अभिन्न हैं। जो भाव गौरांग के मन में किसी अलक्ष्य रूप के लिये समर्पित हो रहे हैं वही गौरप्रिया के मन में गौरांग के लिये उमड़ रहे हैं। अन्तर केवल इतना है कि पति के मन में जो भाव बाहरी रूप से मुखर हैं वही पत्नी के उर-अन्तर में निःशब्द होकर तरंगित हो रहे हैं। सास की उपस्थिति में बहू ने अपने पति को पलक उठाकर भी न देखा, पर अपने मन में वह उन्हीं को आँखों में आँखें डाले एकटक निहार रही थी। वह पति-पत्नी की अनोखी सुहागरात थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौ

दूसरे दिन पास-पड़ोस में बड़े भोरहरे से ही यह चर्चा फैल गयी कि निमाई को रात में फिर पागलपन का दौरा पड़ा था और वे सारी रात कृष्ण-कृष्ण करके रोते रहे। निमाई की त्रिलोक विजयिनी पाण्डित्य प्रतिभा से जो छुटभैये पंडित ईर्ष्या करते थे, यह सुनकर मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए। उन्हें लग रहा था कि जब निमाई अपने पागलपन के लिए बदनाम होंगे, तब उनमें से हर एक की विद्वत्ता फिर से सरनाम होकर पुजने लगेगी; जो धन-संपत्ति और मान-दान निमाई को मिल रहा है वह तब उन्हें मिलेगा। इसी उत्साह में उन छुटभैयों ने सबेरे गंगा-तट पर यह खबर फैलाने में कोई कसर न उठा रखी। गंगा-तट पर सारा नगर जुड़ता था, घाट से घाट तक, व्यक्तियों से व्यक्ति तक यह समाचार फैलने में देर न लगी। बहुतों को यह सुनकर दुःख हुआ। उन्हें लगा कि निमाई का पागल होना नवद्वीप के लिए परम दुर्भाग्य का विषय है। बहुतों को ईर्ष्या-वश आनन्द भी हुआ, लेकिन नगर में जो छोटा सा वैष्णव सम्प्रदाय था उसके लिए यह खबर परमानन्ददायक थी। उन्होंने यह न माना कि निमाई पागल हो गये हैं बल्कि यह जाना कि नवद्वीप के अनास्था भरे आकाश में उनके लिए आस्था का पूर्णचन्द्र उदय हुआ है। उसके शीतल प्रकाश में उन्हें वैष्णव मत का सुखद भविष्य दिखलाई दे रहा था।

नवद्वीप में श्रीवास नामक एक सम्पन्न और सरल हृदय के पंडित महाशय रहा करते थे। वे निमाई के पिता स्वर्गीय जगन्नाथ जी के परम बन्धु थे। उनकी गणना श्रेष्ठ वैष्णवों में होती थी।

पंडितवर श्रीवास जी महापंडित अद्वैताचार्य के साथ-साथ ही सिलहट से नदिया पढ़ने के लिए आये थे। बाद में वे वहीं बस भी गए। उनके श्रीकान्त, श्रीराम, और श्रीपति नामक तीन भाई थे। सारा परिवार एक बड़ी हवेली में रहता था। सम्पन्न घराना था। अनेक नौकर-चाकर थे, घर की ड्योढ़ी पर ही एक मुसलमान दर्जी बैठा घरवालों के लिए नित नये वस्त्र सिया करता था। मँगते भिखारी और गरीब-गुरबे सदा इस घर की ड्योढ़ी पर पलते थे। उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फुलवारी भी काफी बड़ी थी और सवेरे अनेक लोग वहाँ पूजा के लिए फूल चुनने जाते थे। पहले निमाई भी नेह-नाते के कारण वहाँ आया-जाया करते थे। वे अक्सर कहा करते कि यदि दुर्भाग्य से कभी स्वयं लक्ष्मी भिखारी वन जायँ तो भी पंडित श्रीवास के घर विपन्नता नहीं आ सकती।

श्रीवास जी आयु में निमाई से लगभग चालीस वर्ष बड़े थे और स्वर्गीय जगन्नाथ जी के मित्र होने के कारण वे निमाई को प्रेम भी करते थे, उन्हें उद्धत शिरोमणि कहा करते थे। अपनी नौजवानी में पडित श्रीवास भी खासे रसिया रहे थे लेकिन बाद में एक बार वीमार पड़ने पर उनमें ऐसा अद्भुत परिवर्तन आया कि पुराना राग-रंग भरा जीवन जादू की तरह से छू-मन्तर हो गया। कहते हैं कि बीमार पड़ने से पहले उन्हें स्वप्न में एक संन्यासी ने दर्शन दिए थे और कहा था कि, 'श्रीवास, एक वर्ष के भीतर ही तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। तुम्हें सजग हो जाना चाहिए। वह संन्यासी उनके बीमार पड़ने पर प्रत्यक्ष होकर सामने आया था। उसी ने श्रीवास को कोई औषधि देकर फिर से जीवनदान दिया था। इसी घटना के वाद श्रीवास परम वैष्णव हो गये। वे अक्सर निमाई से कहा करते : "बेटा, तुम यह कोरा शास्त्रार्थ भरा पाण्डित्य छोड़कर खरे वैष्णव वनो। कृष्ण नाम ही परम ज्ञान है।" यह सुनकर निमाई अक्सर हंस पड़ा करते थे। वे कहते : "काका, घवराइए मत, एक दिन मैं ऐसा वैष्णव वनूंगा कि आप लोग देखते ही रह जायँगे।"

उस दिन सवेरे श्रीवास पंडित के घर नित्य की भाँति भक्त मंडली पूजा के हेतु फूल चुनने आई। शुक्लाम्वर पंडित ने वात छेड़ी, कहा—"कल की घटना सुनी है आप लोगों ने? निमाई अव एकदम बदल गया है।"

वात से बातें निकलने लगीं। निमाई अब कृष्ण-कृष्ण कहकर वेसुध हो जाता है। उसे अव न तो अपने घुंघराले केशों को सँवारने में सुख मिलता है और न रेशमी कृष्ण-केलि वस्त्रों से आच्छादित होने में। रात भर धूल में लोटता रहा। उसकी माँ बेचारी हैरान है।

श्रीवास पंडित की फुलवारी में जुड़ी हुई भक्त मंडली निमाई के इस नव-परिर्वातित रूप की चर्चा करते-करते सुखद आश्चर्य में भर उठी।

हर एक यही कहने लगा कि अब वैष्णवों के लिए सुख के दिन आ गये। ज्ञानियों के बीच में यह भक्त मंडली अल्प और तिरस्कृत थी। नदिया के विद्वान् आमतौर से श्रीमद्भागवत के वड़े प्रशंसक थे। काव्य और दर्शन आदि की दृष्टियों से वे उस सौंदर्य सिन्धु में डुबकियाँ लगाकर अनमोल विचारों के मोती निरन्तर निकाला ही करते थे, किन्तु उसमें वर्णित भगवद् प्रेम को आचरण में उतारना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हें अपनी-अपनी बढ़ी-चढ़ी पंडिताई और मान-मर्यादा के खिलाफ़ लगता था। वे इनके गाने-बजाने का मखौल उड़ाते थे तथा इन्हें कुछ-कुछ ओछी दृष्टि से देखा करते थे। वैष्णवजन अब यह सोच-सोचकर दुखी होने लगे कि अब निमाई ऐसा दिग्विजयी पंडित मिथ्याभिमानी ब्राह्मणों की खोखली तार्किकता के जाल काटना शुरू करेंगे तो नदिया के एक-एक पंडित की हुलिया ही बदल जायगी। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी बोले : "निमाई आज मेरे यहाँ आएँगे। रात का हाल सुनकर आज मैं पहले वहीं गया था। उन्होंने मुझसे कहा कि दिन में सभी भक्त-जनों को अपने यहाँ एकत्र कीजिए।"

यह खबर सुनकर सभी भक्त उत्साह में भर उठे। गदाधर, मुरारिगुप्त, सदा-शिव आदि सभी भक्त भोजनोपरांत भक्तवर शुक्लांबर ब्रह्मचारी के यहाँ पहुँच गए। केवल श्रीवास जी ही कुछ सोचकर वहाँ न गए। निमाई पंडित के आग-मन की बाट देखी जाने लगी। सहसा एक ने कहा—"वो आ रहे हैं।"

लम्बे-चौड़े बलिष्ठ देहशाली गौरमोहन निमाई विश्वम्भर बेखुदी में झूमे झूमते-झामते चले आ रहे थे। उनका अजब हाल था। कोई अनजाना उनके लड़खड़ाते पैरों को देखे तो समझे कि मतवाला पियक्कड़ आ रहा है; सावन-भादों की झड़ी-सी लगाये उनकी आकर्षक आँखों और उनकी बड़बड़ाहट को देखे तो समझे कि दीवाना आ रहा है। उनका ऊपरी ज्ञान बस इतना ही था कि सड़क पर चल रहे हैं और शुक्लांबर ब्रह्मचारी के घर जा रहे हैं, इसके बाद और कुछ भी होश न था। सड़क पर चलते हुए प्रणाम करने वाले अनेक चिर-परिचितों को देखकर भी वे अनदेखा करते चले आ रहे थे। नदिया वालों के लिए निमाई का एक अनोखा रूप और भी आकर्षक था। आश्चर्य से स्तब्ध होकर बस यही कहके रह जाते कि क्या था और क्या हो गया।

शुक्लांबर ब्रह्मचारी के चबूतरे पर जुड़ी भक्त मण्डली आह्लाद में भर कर निमाई का स्वागत करने के लिए दौड़ पड़ी। सहसा कई लोगों के पास आने से निमाई की अध-बेहोशी चौंकी। लेकिन कृष्ण प्रेमी भक्त मंडली को पहचानते ही उनका रहा-सहा ऊपरी होश-हवास भी गुम हो गया। जिन वैष्णवों में कल तक निमाई को केवल विनोद का बहाना भर ही मिलता था उन्हीं में आज वे अपने कृष्ण को देखने लगे। उन्हें ऐसा लगा कि वे अपनों के बीच में आ गए हैं और अपनत्व का यही बोध बहिश्चेतना को लुप्त करके, उन्हें अन्तश्चेतना के विशाल द्वार से प्रवेश करा गया। पल भर में सारे चिर-परिचित चेहरे निमाई के लिए विलुप्त हो गए और सहसा एक नया परिचित स्वरूप उन्हें हर एक में दिखलाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ने लगा। निमाई को लगा कि कृष्ण एक साथ आनन्द गद्गद होकर उन की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। कल्पना का यह साक्षात्कार अति तीव्र संवेदनशील मन में सहसा ज्वार ले आया; आनन्द से आनन्द उमड़ा और फिर ऐसा उमड़ा कि काया उसके वेग को सम्हाल न पायी। "हा कृष्ण" कहते हुए कटे पेड़ की तरह से वे वहीं के वहीं गिर गए। उन्हें मूर्च्छा आ गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस

निमाई के स्वभाव परिवर्तन को लेकर नदिया में दो तरह की बातें फैलीं। पंडित कहते कि निमाई पागल हो गया है और आम जनता में यह चमत्कार-कथा फैली कि निमाई पंडित को गया में कृष्ण भगवान ने साक्षात् दर्शन दिये थे और जब वे अन्तर्ध्यान हो गये तो निमाई छटपटाने लगे। वे तभी से उनके विरह को नहीं सह पा रहे हैं, बार-बार 'हाय अभी तो यहीं थे, कहाँ चले गए' कहकर वे मूर्छित हो जाते हैं।

जनमानस के धुर निचले स्तर तक अनास्था का वातावरण व्याप्त था। हाथ में नंगी तलवार लेकर राजा निरंतर कहता रहता कि हे प्रजा, तेरा धर्म झूठा है। पराजित प्रजा का औसत जन अपने नैसर्गिक स्वाभिमानवश इसे माने या न माने पर गुलामी की प्रताड़नावश यह अवश्य बूझने लगा था कि हमारे धर्मगुरु झूठे हैं। यह अपने गुरु पंडितों के आचरण से मन ही मन में सन्तुष्ट नहीं था। कोरे शास्त्रार्थ से अब वह आस्थावश नहीं कोरी रूढ़िवश ही प्रभावित होता; जड़ संस्कारवश ही शास्त्रियों और उनके शास्त्र को नमन करता, किन्तु मन से विमुख था। उन्हीं शास्त्रियों, आचार्यों में सर्वश्रेष्ठ युवा निमाई के नवव्यक्तित्व के प्रति अब जन-मन में गहरा आकर्षण जाग रहा था। उनके आँसुओं की तो क्या पंडित क्या मूढ़ चारों ओर बड़ी चर्चा करते थे। लोग आश्चर्यचकित थे कि इस परम सुन्दर और बलिष्ठ काया में वह कौन-सा ऐसा अजस्र स्रोत छिपा है जिसके भीतर से आँसू ही आँसू उमड़ते चले आ रहे हैं। निमाई के आँसू देखने वाला का दिल बहा ले जाते थे। निमाई के आँसू एक ऐसा तमाशा बन गए कि खुद तमाशाइयों को भी तमाशा बन जाना पड़ा। हर नयन नीर बहाने लगा।

उस दिन नगर भर में यही चर्चा थी। लोग-बाग यत्र-तत्र यही चर्चा करते रहे कि शची माँ कैसे शुक्लाम्बर के द्वारे पर आईं और अपने लाल को समझा-बुझाकर घर ले गईं, उसे जतन से नहलाया-धुलाया, शान्त किया।

नदिया के हर मुख ने गौरांगमोहन निमाई की अलौकिक भक्ति को बखाना, उनके अपार आँसुओं को बखाना, शची माँ की पीड़ा को बखाना, पर किसी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह चिन्ता न की कि बेचारी विष्णुप्रिया के मन पर क्या बीत रही है। एक गूंगा दर्द घूंघट में छिपा ही रह गया।

दिन बीतने लगे। नित्य ही निमाई का यही हाल रहने लगा। शिष्यों में पंचायत पड़ी। वे सब तो उनसे व्याकरण, न्याय और अन्याय शास्त्र पढ़ने के लिए यहाँ आये थे, अब क्या करें। गुरु जी अपने भक्तों की भीड़ से घिरे रहते हैं, ज्यों-ज्यों भीड़ बढ़ती है त्यों-त्यों उनकी वेसुधी भी बढ़ती चली जाती है। फिर भला गुरु जी को कौन छेड़ सकता है। वे इस दुनिया को छोड़कर अपनी दुनिया में बस जाते हैं। एक दिन विद्यार्थियों ने तय किया कि आज सुबह की पहली भीड़ बनकर हमीं लोग पहुँचेंगे। हमें देखकर गुरु जी को निश्चय ही अपने कर्त्तव्य का स्मरण होगा। और सचमुच ऐसा ही हुआ भी। अपने विद्यार्थियों को देखकर निमाई का मन सावधान हुआ। उन्हें लगा कि वे अपने विद्यार्थियों को धोखा दे रहे हैं। पर अपने हरि उन्माद का वे क्या करें। क्या वे अपने वश में रह गये हैं?····रहे हों या न रहे हों किन्तु शिष्यों के प्रति उन्हें अपना कर्त्तव्य निभाना ही पड़ेगा। वे एक अलौकिक शक्ति के प्रेमी भले ही हों पर उनके कुछ लौकिक वन्धन भी हैं। यह सोचकर निमाई उठ खड़े हुए और अपने शिष्यों को लेकर वे मुकुन्द संजय के चण्डीमण्डप की ओर चल पड़े।

संजय वाड़ी की स्त्रियों ने सुना कि पंडित अपने शिष्यों के साथ आ रहे हैं तो उनमें आनन्द की एक-लहर-सी दौड़ गई। गया यात्रा के वाद पंडित के नये व्यक्तित्व का ऐसा चामत्कारिक यश फैला था कि उनसे पुराना लगाव होने के कारण संजय वाड़ी में आनंदोल्लास की बाढ़ आ जाना कोई आश्चर्यकारी बात न थी। नारियों ने शंख-ध्वनि की, दासियाँ मंगल-कलश लेकर खड़ी हुईं, घर के पुरुष हाथ जोड़े अगवानी के लिए बढ़े। निमाई सबसे बड़े प्रेम से मिले। दोनों ओर से कुशल क्षेम पूछी गई। कुछ समय इसी सब में बीता और फिर नवद्वीप-पंडित कुल-मुकुटमणि, विद्यासागर आचार्य विश्वम्भर मिश्र की पाठशाला में नये सिरे से जान पड़ गई। वस्तों में वन्द विद्यार्थियों की पोथियाँ वाहर निकल आईं पाठ आरम्भ होने से पहले शिष्यों ने नियमानुसार सामूहिक स्वर में 'हरि-हरि' कहा। हरि नाम सुनते ही आचार्य विश्वम्भर अपना आपा खो बैठे। आँखें मुंद गईं, मनपटल पर कृष्ण छवि अंकित हो गई। अंग-अंग आनन्द पुलक से भर उठा, कहने लगे: "कैसा मधुर नाम! श्रीकृष्ण तुम सबका मंगल करो। तुम लोग निरर्थक विद्या सीखने के लिए इतने प्रयत्नशील क्यों हो? सदा स्मरण रखो कि भगवच्चरण प्राप्ति ही जीवन का परम पुरुषार्थ है।"

छात्र-गण चकित होकर गुरु मुख को निहारने लगे। आचार्य निमाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वम्भर परमार्थ की व्याख्या करते-करते अपनी रौ में वह चले। काफ़ी देर तक यही उपदेश चलता रहा फिर कहते-कहते स्वर एकाएक झटका खाकर रुक गया। ध्यान आया कि मैं तो इन्हें पढ़ाने के लिए आया था, फिर यह क्या करने लगा। मन ही मन में लज्जा बोध भी जागा; बोले : "शिष्यो, मंगलाचरण पूरा हुआ। अब कल से विधिवत् पाठ आरम्भ होगा। गंगा स्नान की वेला हुई, चलो।"

दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे दिन, हर दिन यही हाल रहा। गुरु जी पढ़ाने का निश्चय करके चण्डीमण्डप में आते पर 'हरि हरि' शब्द सुनकर फिर जस के तस हरि बावले हो जाते थे। शिष्यों के लिए गुरुजी पहेली बन गए। इस समस्या को आखिर क्योंकर सुलझाया जाय ? सोच-विचार कर शिष्यों ने अपने गुरु के गुरु गंगादास जी की शरण में जाने का निश्चय किया। वृद्ध आचार्य के सिवा उनके गुरु को और कौन समझा सकता था।

छात्रों की समस्या सुनकर गंगादासजी हँसने लगे, फिर कहा : "भला भला, निमाई साधु हो गया है। कोई बात नहीं, कल तीसरे पहर तुम लोग अपने गुरु को मेरे पास ले आना। मैं उसे भली-भाँति समझा दूंगा।"

अगले दिन निमाई आचार्य ने अपने शिष्यों को फिर भगवन्नाम कीर्तन का उपदेश देना आरम्भ किया। श्रीकृष्ण की महिमा बखानते हुए वे आनन्द विभोर हो गये। कहते-कहते वड़ी देर बाद उन्हे होश आया कि विद्यार्थियों के मतलब की बातें न करके कुछ और ही पढ़ा रहे हैं। लज्जा का बोध हुआ। निमाई थोड़ी देर चुप रहे, फिर कहा : "शिष्यो, सच बतलाना, मेरी व्याख्या तुम्हें कैसी लग रही है ?"

शिष्य बेचारे क्या कहें, आँखें नीची करके चुप बैठे रहे। यह देखकर गुरुजी ने फिर कहा : "लगता है मैं तुम्हें भली-भाँति नहीं पढ़ा रहा।" विद्यार्थी चुप। एक शिष्य का नाम लेकर गुरु जी ने पूछा : "सच बतलाओ, तुम लोगों को मेरा पढ़ाना रुचिकर लगता है या नहीं।" अपना संकोच त्यागकर शिष्य ने कहा : "गुरुदेव, आपकी शक्ति असीम है। आप जो भी व्याख्या करेंगे वह नूतन अर्थ भरी विलक्षण ही होगी। शब्द आपकी इच्छानुसार ही अर्थ ग्रहण करते हैं, किन्तु हम जिस उद्देश्य से यहाँ पढ़ने आए हैं वह सिद्ध नहीं हो रहा है। गया यात्रा से आपके लौटकर आने के बाद से आज तक हम कुछ भी नहीं सीख पाए हैं।"

निमाई पण्डित ने सुनकर अपना सिर झुका लिया, कुछ देर मौन रहने के बाद उन्होंने फिर कहा : "सत्य कहता हूँ मैं तुम्हें पहले की भांति ही सरल सुबोध रीति से पढ़ाना चाहता हूँ। नित्य प्रति यही निश्चय करके घर से चलता हूँ किन्तु यहाँ आने पर एक परम सुन्दर कृष्णवर्ण शिशु मेरी आँखों के सामने आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता है। वह ऐसा मोहक वंशीवादन करता है कि सुन-सुनकर मेरी सारी मतिगति स्तब्ध हो जाती है। मुझे लगता है कि वह शिशु मोहन अब मुझे पढ़ाने न देगा। तुम लोग अपने लिए कोई दूसरी व्यवस्था कर लो।"

शिष्य यही नहीं चाहते थे। वे जानते थे कि नदिया में निमाई के समान दूसरा गुरु उन्हें उपलब्ध नहीं हो सकता। एक ने प्रसंग बदलकर उन्हें आचार्य गंगादास जी की आज्ञा सुनाई। निमाई ने वहाँ जाना स्वीकार किया।

तीसरे पहर वे शिष्यों को लेकर अपने गुरु के यहाँ गये। उनके चरणों में प्रमाण किया, आशीर्वाद पाया। गंगादास कहने लगे: "विश्वम्भर तुम्हारे नाना और पिता दोनों ही प्रकाण्ड पण्डित थे। मैंने भी तुम्हें उत्तमोत्तम विद्या दान देने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। उसी के कारण तुमने इस छोटी-सी आयु में भी अपूर्व यश अर्जित किया परन्तु अब न जाने तुम्हें क्या हो गया है कि अपना कर्तव्य भूलकर तुम बहकने लगे हो। क्या यह उचित है पुत्र? अध्यापक का पद अनेकानेक जन्मों की तपस्या के फलस्वरूप ही मनुष्य को मिलता है। अपने शिष्यों को विद्या दान देने से क्यों चूकते हो? तुम्हें मेरी शपथ है, इन्हें ठीक तरह से पढ़ाओ।"

गुरु की बातें सुनकर निमाई नतमस्तक हो गए। उन्होंने उनसे क्षमा माँगी और यह आश्वासन दिया कि भविष्य में वे अपने शिष्यों को निराश न करेंगे। गंगादास जी के यहाँ से लौटते समय उन्होंने अपनी शिष्य मण्डली को भी यही भरोसा दिलाया। वे उनके साथ ज्ञान चर्चा करते हुए चलने लगे। रास्ते में पण्डित रत्नगर्भ का घर पड़ा। रत्नगर्भ उन्हीं के पैतृक ग्राम के निवासी थे। आपस में प्रेम भाव भी था। उन्होंने आग्रहपूर्वक निमाई को बैठा लिया। शास्त्रालाप होने लगा। गुरु की बातें सुनते हुए शिष्यगण बड़े ही मगन हो रहे थे। बहुत दिनों के बाद उन्हें ऐसी शास्त्रचर्चा सुनने को मिल रही थी। रात क्रमशः चढ़ रही थी किन्तु किसी को भी इस बात का होश न था। शिष्यगण भिखारियों की तरह अपनी ध्यान झोली फैलाए हुए गुरु जी द्वारा लुटाई जाने वाली अनमोल ज्ञान मणियाँ संग्रह कर रहे थे। तभी प्रसंगवश रत्नगर्भ ने बड़े सुरीले कण्ठ से श्रीमद्‌भागवत के एक श्लोक का पाठ किया। श्रीकृष्ण के रूप का मनोहर वर्णन सुनते ही निमाई की ज्ञान प्रतिभा एकाएक लुप्त हो गई। सारा वातावरण मन से, आँखों के आगे से ओझल हो गया। उस मनमोहन छवि में रमकर निमाई अचेत हो गये। अनेक उपचारों से चैतन्य होकर निमाई फिर बैठ गये, खोई हुई दृष्टि से चारों ओर देखा; मनमोहन मुरली मनोहर अदृश्य हो चुके थे। आँखें भर आईं और फिर उमड़ती ही चली गईं। निमाई के आंसू चुम्बक बनकर दर्शकों के प्राणों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का लोहा अपनी ओर खींचने लगे। कोई तड़प-तड़पकर ही रह गया, किसी के आँसू बरसने लगे, कोई श्रद्धावश बार-बार निमाई को प्रणाम करने लगा। एकाएक भर्राये से कण्ठ से निमाई ने कहा : "श्लोक पढ़ो।" रत्नगर्भ श्लोक पढ़ने लगे :

श्यामं हिरण्यपरिधिं वनमाल्यवर्हं—
धातु [प्रवालटनवेश मनुव्रतां से।
विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जम्
कर्णोत्पलालकपोल मुखाजहासन ॥

मनभावन छवि मन में फिर लहरने लगी; प्राणों में आकर्षण का ज्वार उमड़ने लगा। निमाई फिर मूर्च्छित होकर गिर पड़े। चेतना लौटी तो कहा : "श्लोक बोल।" रत्नगर्भ ने फिर सुनाया। पाठ पूरा होने पर फिर—"बोल-बोल" पुकार उठे। निमाई के आग्रह के साथ ही रत्नगर्भ का उत्साह भी बढ़ता जाता था। वह श्लोक को जितना ही दोहराते गए उतना ही उनका स्वर भाव-भीना होता गया। निमाई एकाएक आनन्दातिरेक में उठ खड़े हुए; रस-डोर में बंधे रत्नगर्भ उनके साथ ही साथ श्लोक सुनाते हुए उठे। श्लोक पूरा होते न होते निमाई ने जोश में आकर उन्हें आलिंगन-बद्ध कर लिया। दोनों की आँखों से गंगा-जमुना बहने लगीं। दृश्य से एक ऐसी दीवानगी थी कि लोग अपना सयानापन खोकर दीवाने हो उठे।

दूसरे दिन सवेरे फिर पाठशाला लगी। गुरु जी आए और अपने आसन पर खोए से बैठ गए। शिष्यों ने आज जान-बूझकर 'हरि हरि' का सामूहिक नाद न किया, अपनी पोथियाँ खोल लीं और गुरु जी का मुँह ताकने बैठ गए। बड़ी देर के बाद निमाई का ध्यान भंग हुआ, उन्होंने एक बार अपने विद्यार्थियों के चेहरों पर नजरें घुमाईं फिर सिर झुका लिया। विचारलीन मुद्रा में बड़ी देर तक चुप-चाप बैठे रहे।

शिष्य अपने गुरु का चेहरा देख रहे थे। वह बलिष्ठ गौर और परमसुन्दर काया कुन्दन-सी दमक रही थी। मुख-मण्डल अन्तर्पीड़ा से मलिन होते हुए भी दिव्य आनन्द प्रभा से मण्डित था। शिष्यों ने तपस्वी तथा चिरमननशील विद्वानों के मुख-मण्डल पर विद्या का तेज देखा है, उन्होंने धनी-मानियों और राजपुरुषों के चेहरों पर लक्ष्मी और प्रभुत्ता की आभा भी बहुत बार देखी है, उन्होंने स्वयं अपने गुरु का पूर्व तेज भी देखा है पर आज तो वे अनोखे लग रहे हैं। वे मनुष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होकर भी मनुष्येतर प्राणी लग रहे हैं। पूर्ण आत्मलीनता पाने पर मनुष्य अपनी मनुष्यता की सीमा से बंधा होने पर भी असीम आभासित होने लगता है, वह लघु से विराट हो जाता है। शिष्यों को गुरु विराट पुरुष लग रहे थे। उनकी गम्भीर मौन मुद्रा में नाद गूंज रहा था। ऊँचे पर्वत से गिरने वाले झरने की धुआँधार बूंदों की तरह इतने शब्द गूंज रहे थे कि उन्हें आत्मसात् कर पाना कठिन था। वे इस समय कोरी सांस्कारिक श्रद्धावश ही अपने गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर नहीं मान रहे थे, वरन् सचमुच ही यह अनुभव कर रहे थे कि वे साक्षात् परब्रह्म को देख रहे हैं। कल शाम से ही उन्हें लग रहा था कि उनके विश्वम्भर गुरु एक छोटी-सी पाठशाला और सीमित शिष्य-समूह के ही नहीं वरन् विश्वगुरु हैं। वे साक्षात् विश्वम्भर हैं।

गुरु अपने शिष्यों को सम्बोधित करते हुए मानो सबसे कहने लगे—"मैं तुम सबसे एक भिक्षा माँगता हूँ। मुझे मेरे कर्त्तव्यभार से मुक्ति दो। अब मैं अध्यापन कार्य के योग्य नहीं रहा। कई दिनों से तुम्हें और अपने आपको धोखा देते-देते मैं यह भली-भाँति समझ गया हूँ कि समस्त लोक व्यवहार के कर्म अब मेरे लिए करणीय नहीं रहे। मैं जब-जब तुम्हें पढ़ाने बैठता हूँ तब-तब एक अनन्य सुन्दर, मनमोहन बालक मेरी आँखों के सामने आकर खड़ा हो जाता है। मैं उसे अन-देखा करके तुम्हें पढ़ाना चाहता हूँ परन्तु वह हठीला मुझे सम्मोहित करने के लिए मुरली बजाने लगता है। वह वंशीवादन ऐसा दिव्य होता है शिष्यो, कि मैं फिर अपने आपे में नहीं रह पाता। मैं अब किसी भी काम का नहीं रहा भाई, मुझे मुक्ति दो, तुम्हारी जहाँ इच्छा हो वहाँ जाकर पढ़ो।"

शिष्य मण्डली यह सुनकर स्तब्ध रह गई। गुरु जी जब नहीं पढ़ाते थे तब कुछ शिष्यों को मन ही मन में शिकायत भी रहती थी परन्तु इस समय वे सब तरह से हतप्रभ होकर दिग्विमूढ़ होकर रह गये थे। वह गुरु जिसका नाम सुन-कर वे लोग दूर-दूर से यहाँ पढ़ने के लिए आए थे, जिसका विद्वत्ता और अध्ययन कुशलता के कारण वे नवद्वीप के सभी गुरुकुलों की शिष्य मण्डली से अपने आप-को अधिक भाग्यशाली मानते थे वे अब उन्हें नहीं पढ़ायेंगे। यह बात उन्हें बेहद खल रही थी। गुरु की बात सुनकर सभी शिष्य विह्वल हो उठे। कइयों ने आगे बढ़कर उनके चरण पकड़ लिये और अश्रुधार बहाते हुए उनसे यह कहने लगे कि गुरु जी, हमें मँझधार में न छोड़िए। आपके सिवा हमारी और कोई गति नहीं। आपसे पढ़ने के बाद अब हम किसी अन्य गुरु को वह श्रद्धा नहीं दे सकेंगे जो हमें देनी चाहिए। हम पर कृपा कीजिए, हमें यों असहाय न छोड़िए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्यों की यह दशा देखकर निमाई पंडित द्रवीभूत हो उठे, आँखों में आँसू भर कर वे बोले—"भाई, मैं यदि तनिक भी अपने वश में होता तो तुम लोगों से कभी यह न कहता। किन्तु अब तुम लोगों को अपने आपसे बाँधे रख कर मैं निश्चय ही पाप का भागी बनूँगा। मैं यह भली भाँति जान गया हूँ कि अब तुम्हें वह ज्ञान कदापि न दे पाऊँगा जो लोक दृष्टि से तुम्हारे लिए उपयोगी है। मैं श्रीकृष्ण के ध्यान से विमुख होकर तब एक क्षण के लिए भी जीवित नहीं बच सकता। श्रीकृष्ण के बिना अब मेरी दूसरी गति नहीं रही। तुमसे भी मैं यही कहूँगा कि सब तजो और हरि भजो। श्रीकृष्ण की शरण गहो, उन्हीं का गुणगान करो और सुनो। समस्त ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य यही है।"

विद्यार्थी सुनते रहे, रोते रहे। गुरुदव कुछ क्षणों के लिए आत्मलीन हो गये। फिर अचानक उत्साह में भरकर वे बोल उठे—"आओ, सब जने मिलकर मेरे साथ कृष्ण कीर्तन करो। कृष्ण नाम ही परम ज्ञान है, वही परम मोक्षकारी है। जो व्यक्ति एक बार भी सच्चे हृदय से पुकार लेता है, वह क्षण मात्र में ही अपने जन्मजन्मान्तर के पापों से मुक्त हो जाता है। आपको हम सब मिलकर उसी परम गुरु का कीर्तन करें—

हरि हरये नमः
कृष्ण यादवाय नमः"

ताली बजाते हुए गुरु निमाई मिश्र नाम संकीर्तन करने लगे। शिष्य मंडली भी उनके साथ ही ताली बजा-बजा कर उनके स्वर में स्वर मिलाने लगी। थोड़ी ही देर में वातावरण अनुराग रंजित हो उठा। हर एक के मन में प्रेम तरंगें हिलोरें लेने लगीं। कई शिष्य जोश में आकर नाचने लगे। नदिया की किसी भी पाठशाला में आज तक किसी शिष्य को ऐसी शिक्षा नहीं मिली थी। किसी व्यक्ति ने किसी भी पाठशाला में ऐसा आनंद कलख नहीं सुना था। जो देखता वही थोड़ी देर तक तो आश्चर्य से स्तब्ध रह जाता था किन्तु बाद में वह भी गुरु और उनके शिष्यों की तरह ही आनन्दोन्मत्त हो उठता था। जैसे-जैसे हरि नाम का शोर बढ़ता जाता था वैसे-वैसे ही निमाई रसमग्न होकर देखने वालों के लिए अलौकिक तेजधारी बनते चले जाते थे। वह रूप, वह सौंदर्य, वह आत्मलीनता किसी ने आज तक नहीं देखी थी। गुरु जी कीर्तन करते-करते भावावेश में आकर उठ-खड़े हुए और अपने शिष्यों के साथ नाचने लगे। इससे उनके शिष्यों में और भी जाश आ गया निमाई और उनकी शिष्य मण्डली कीर्तन करते-करते पाठशाला से बाहर चली आई। नदिया की गलियों में पहली बार कृष्ण कीर्तन की अनोखी गूंज भर उठी। आबालवृद्ध नरनारीगण जो भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस दृश्य को देखते, अपना आपा खोकर कृष्ण रंग में रंग जाते थे। अपनी शिष्य मण्डली के लिए आचार्य विश्वम्भर का यही अन्तिम और समस्त लोक के लिए कृष्णप्रेम का प्रथम पाठ था। मुकुन्द संजय के चण्डीमण्डप की चारदीवारी की संकुचित सीमाएँ तोड़कर निमाई की पाठशाला अब सारी दुनिया में फैलने के लिए आगे बढ़ चुकी थी। उनके अनेक शिष्य उसी दिन से संसार त्याग कर हरिभक्त हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्यारह

निमाई नवद्वीप के गौरव थे। इस छोटी-सी आयु में उन्होंने जैसी ख्याति पायी थी वैसी नगर की कई पीढ़ियों के लोगों ने न तो कहीं देखी थी न सुनी थी। बड़ी-बड़ी पाठशालाओं के विद्यार्थी विश्वम्भर मिश्र की पाठशाला में पढ़ने वाले लड़कों से तनिक सम्हल कर ही बोला करते थे। कुछ वर्षों में देखते ही देखते निमाई ने नदिया के बड़े से बड़े आचार्यों की पीढ़ियों से चली आती हुई प्रतिष्ठा को फलांग कर अपने लिए, नदिया के लिए एक अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया था। दिग्विजयी केशव कश्मीरी को हराकर निमाई ने नगर के जनसाधारण का दिल लूट लिया था। उनके इस नये परिवर्तन से तो लोग चमत्कार में बँध गये थे। गली-गली नरनारी यही कहते डोलते कि पण्डितों में सच्चा यही निकला तभी तो भगवान् ने इसे अपनी भक्ति प्रदान की है। यह बात स्वाभाविक रूप से बड़े-बड़े पण्डित कुलों के लिए बड़ी कचोट की बात बन गयी। बुरे, भले या भले-बुरे मिश्रित स्वभाव के गुरुओं ने मानो निमाई को पागल प्रचारित करने का षड्यन्त्र रच लिया था। कोई अभिनयपूर्ण मुद्रा में निसाँसें ढाल कर, घड़ियाली आँसू बहाते हुए कहता कि हाय बेचारा पागल हो गया है। कोई कटु निन्दा करते हुए कहता कि तंत्र-मंत्र या भूतविद्या के जोर से बेटा दिग्विजयी बनकर हम पीढ़ियों से पूजित गुरुओं को पछाड़ने चले थे, अब चार दिन की चाँदनी के बाद उन्हीं के लिए अँधेरा पाख हो गया।

लेकिन नदिया में एक ऐसा छोटा-सा वर्ग भी रहता था जो निमाई विश्वम्भर की परिवर्तित मनःस्थिति को गम्भीरतापूर्वक पहचानने का प्रयत्न कर रहा था। यह सम्प्रदाय वैष्णवों का था। भगवद्भक्ति प्राप्त होने के जो लक्षण ग्रंथों में बखाने गये हैं अथवा थोड़े बहुत एकाध व्यक्ति में कभी-कभी झलक उठते हैं, वे सभी तो निमाई में प्रकट हो रहे हैं। यह कैसा आश्चर्य है कि घोर कलिकाल में साक्षात् सतयुग का दृश्य दिखाई दे रहा है। नदिया में श्रीवास पंडित की बगिया में प्रतिदिन सबेरे फूल चुनने के लिए भक्तों की भीड़ जुटती थी। अच्छे-अच्छे वैष्णव विद्वान् वहाँ उपस्थित होते थे। सभी के लिए निमाई की चर्चा ही मानो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्म चर्चा बन गयी थी। छोटे-मोटे कई लोग निमाई को देख आये थे लेकिन पंडित श्रीवास अभी तक उन्हें देखने के लिए नहीं आये थे। स्व० जगन्नाथ जी से उनका घना नेह नाता था। शायद इसीलिए उनकी बगिया में जुड़ने वाले भावुक भक्तगण जब कभी उनसे आग्रह करते कि आप स्वयं जाकर निमाई को देख आइए और हमें बतलाइए कि उनसे प्रकट होने वाले यह लक्षण सच्चे हैं या बनावटी, तो श्रीवास चुप हो जाते थे। लेकिन एक दिन जब शची माँ ने उन्हें बुलवा भेजा तो वे अपने आपको क्षणमात्र के लिये भी वहाँ जाने से रोक न सके।

बेचारी शची माँ का तो भाग्य ही फूट गया था। बड़ा बेटा विश्वरूप नौजवान होते न होते संन्यासी होकर घर से निकल गया था, पति भी नहीं रहे थे। और अब उनके एकमात्र आधार लाड़ले निमाई की यह दशा हो गई थी। शची माँ के जीवन में केवल कुछ ही वर्ष परम संतोषकारी बनकर आये थे। छोटी-सी आयु में जब निमाई ने बड़ा नाम कमाया तब शची माँ के हर्ष का वारापार न रहा था। दिग्विजयी पण्डित की माँ के चरण ऐसी श्रद्धा के साथ छुए जाते थे कि माँ का हृदय अपने बेटे के लिये गर्व से भर उठता था। जिसकी बदौलत घर में सोना बरसने लगा था; चार में, हजार में इतना मान-सम्मान बढ़ा था उनका वही कल्पवृक्ष आज यों कटा पड़ा था। उनका निमाई अब धूल में लोटता है। न उसे खाने का होश है; न नहाने का। आँसू उमड़ते ही चले आते हैं। होंठों की बुदबुदाहट चलती ही रहती है, पुकारो तो भी नहीं सुनता। हाय, उसे क्या हो गया है राम! कोई कहता है बाँध के रखो, कोई कहता है किसी ने इस पर तंत्र-मंत्र का प्रयोग किया है, किसी ओझे सयाने से झाड़ फूंक कराओ। कोई किसी वैद्य से इलाज कराने की सलाह देता और कोई बुढ़ियों के टोटके बतलाता था। शची माँ बेचारी सब कुछ करतीं पर उनका निमाई किसी भी तरह अच्छा नहीं हो पा रहा था। जो भगवान् औरों के सहारे बनते हैं वही उनकी आँखों के तारे को अपनी भक्ति प्रदान करके उनके सबसे बड़े दुश्मन बन गये थे। किसी तरह निमाई का मन ईश्वर से उचाट हो और दुनिया में लगे, इस चाहना के साथ शची माँ अपनी बहू को बार-बार अपने बेटे के पास भेजा करती थीं। वे उसे बराबर यही सिखाती रहती कि 'उसके सामने सदा सजी-सँवरी, हंसती-खिलती ही जाना। उसे मीठी-मीठी बातों से रिझाना, किसी जुगत से उसे श्रीकृष्ण की बाँहों से छुड़ाकर अपनी बाँहों में बाँध लेना।' बेचारी विष्णुप्रिया सास की आज्ञानुसार यथासाध्य बड़े जतन करती पर कोई सफलता हाथ न लगी। बावले निमाई को होश में आना और उससे बात करना बैसाखियों के सहारे पहाड़ की सीधी चोटी पर चढ़ने के समान ही था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"निमाई ओ रे निमाई !"

"हाँ', माँ ।"

"अरे तू इतना क्यों रोता है मेरे लाल ?"

"राधा-कृष्ण जाने ।"

"भूल राधा-कृष्ण को, यह बता कि आज तूने क्या पढ़ा-पढ़ाया ?"

"राधा-कृष्ण ।"

"अरे तू कुछ खाये-पियेगा कि नहीं ?"

"राधा-कृष्ण ।" राधा-कृष्ण से चिढ़ी हुई माँ से बेटा बराबर यही कहता था कि राधा-कृष्ण को छोड़कर और मुझे कुछ नहीं चाहिए । श्रीकृष्ण ही मेरी गति-मति, दीन-दुनिया है । जब तनिक होश में आते तब कभी-कभी यह भी कह दिया करते कि मैं तुम सबको बड़ा तंग करता हूँ, मुझे क्षमा करो माँ····क्या करूँ, मुझे श्रीकृष्ण ने ही ऐसा बना दिया है । यही सब सुनते-सुनते शची माँ के मन में आया कि न हो तो श्रीवास पण्डित को ही बुलाया जाय । वे भी श्रीहट्ट के ही निवासी हैं, भक्त हैं । उनके घर से पुराना नेह-नाता है, शायद उनके समझाने से निमाई को मनोशान्ति और बुद्धि संतुलन प्राप्त हो जाय । इसी लालच से उन्होंने पं० श्रीवास को बड़े आग्रह से बुलवाया था ।

जिस समय श्रीवास निमाई के घर पहुँचे उस समय वे अपने में तन्मय, हाथ जोड़े हुए तुलसी-वृन्दावन की प्रदक्षिणा कर रहे थे । श्रीवास खड़े होकर उन्हें देखने लगे । वे स्वयं बड़े भावुक और भक्त हृदय थे । उन्होंने वर्षों तक संत समागम करते हुए उन लक्षणों को पहचाना था जो खरे हरि तल्लीन भक्तों में देखे जाते हैं । तुलसी प्रदक्षिणा के उपरांत जब निमाई ने नजरें घुमाईं तो श्रीवास जी दिखलाई दिये । श्रीवास उनके लिए सदा से ही भक्ति के प्रतीक रहे थे इसलिए उनके दर्शन मात्र से निमाई के मन में तरंगित भाव एकाएक जोर से उमड़ पड़ा । 'हा कृष्ण' कहते हुए वे कटे पेड़ से धरती पर गिरने लगे । लोगों ने झटपट आगे बढ़कर उन्हें सम्हाला परन्तु तब तक वे मूर्च्छित हो चुके थे ।

थोड़ी देर बाद उपचार से वे होश में आये । भक्तवर श्रीवास जी को देखते ही उठने का प्रयत्न किया । लोगों ने उन्हें सम्हाल कर बिठला दिया । वे श्रीवास जी से कहने लगे : "काका, आप ही बतलाइये, मैं क्या करूँ ? मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आता है । पल-पल में आँसू बहने लगते हैं । बार-बार मूर्च्छा आ जाती है, मैं अपने वश में नहीं रह पाता । लोग-बाग कहते हैं कि मुझे वायु रोग हो गया है । कभी-कभी मूर्च्छा भंग होने पर लोगों की ऐसी बातें भी मेरे कानों में पड़ जाती हैं कि मेरे भावावेशों को संतुलित रखने के लिए मेरे हाथ-पाँव बाँध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिये जायँ, शिवादिघृत से मालिश की जाय। और जाने क्या-क्या उपाय लोग बतलाया करते हैं। माँ बेचारी एक तो मेरी इन मानसिक दशा से ही दुखी हैं, दूसरे, लोगों की ऐसी-ऐसी बातों से वे और भी अधिक विचलित हो उठती हैं। यह देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। आप बड़े हैं, हमारे आत्मीय हैं, आप ही बतलाइये मैं क्या करूँ जिससे मेरा बावलापन काबू में आये।"

श्रीवास हँसे और उनके हाथ पर हाथ फेरते हुए कहा : "तुम्हारे इस बावलेपन को पाने के लिए ब्रह्मा और महेश जैसे देवगण भी तरसते हैं। प्रभु करे कि तुम्हारा यह वायु रोग छूत की तरह मुझे भी लग जाय। तुम सचमुच ही बड़े भाग्यवान हो। भक्ति के जिस रूप को अब तक केवल पुस्तकों में ही जाना था, उसे आज प्रत्यक्ष देखकर मुझे क्या मिला है यह मैं शब्दों में नहीं बतला सकता। तुम धन्य हो निमाई, धन्य हो।"

यह सुनकर निमाई बड़े ही आनंदित हुए। पितृ तुल्य श्रीवास से लिपट कर वे बोले—"आपने मुझे बचा लिया काका, सचमुच बचा लिया। यदि आप भी मेरे बावलेपन के लिये मुझे रस्सियों से बाँधने अथवा मेरे शरीर को नाना औषधियों का भाण्डार बनाने की सलाह देते तो सच कहता हूँ आज ही जाकर गंगा में डूब मरता। अपनी माँ का यह दुःख मुझसे देखा नही जाता है।"

श्रीवास जी ने शची माँ की ओर देखकर कहा—"भाभी, लोगों के बहकावे में न आओ। मैं सब कुछ देखकर आश्वस्त हो गया हूँ। तुम्हारा बेटा बावला नहीं, परम चैतन्य है। ऐसा चैतन्य लाखों करोड़ों में किसी एक को अनेक जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचय होने पर ही मिलता है।"

निमाई यह सुन कर आवेश में श्रीवास से लिपट गये। श्रीवास को लगा कि निमाई के इस आलिंगन से उनके रोम-रोम में आनन्द की विद्युत् तरंगें दौड़ने लगी हैं। निमाई के आलिंगन में श्रीवास अपना आपा खोते चले जा रहे थे। वे स्वयं निमाई से लिपट गए। पल दो पल यों ही मौन बीते, फिर उन्होंने निमाई से कहा—"उठो भैया, मेरे घर चलो। यहाँ तमाशे में बैठे रहोगे, वहाँ तुम्हारे सत्संग से चार प्रेमीजन मिलकर हरिनाम कीर्तन करेंगे।"

"कीर्तन ? हाँ, अब नाम संकीर्तन का समय आ गया। मनुष्य के विश्वास मूल की रक्षा का यही एकमात्र उपाय रह गया है। मैं आपका प्रस्ताव सुनकर परम आनंदित हुआ काका, बस, मुझे शीघ्र ही अपने यहाँ ले चलिए।" निमाई बच्चे की तरह से मचल उठे। शची माँ यों तो अपने बावले लाल को पल भर के लिए भी नजर ओट नहीं कर पाती थीं परन्तु श्रीवास जी यहाँ जाने के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने कोई विशेष आपत्ति न की। श्रीवास जी की बातों से उन्हें यह भरोसा भी हुआ था कि उनका पुत्र साधारण बावला नहीं, हरि बावला है। यद्यपि भक्ति और धर्म भावयुक्त परम पवित्र ब्राह्मणी के लिए भगवान् उस समय कुछ-कुछ शत्रुवत् बन गये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बारह

माँ की विपदा सहृदय पास-पड़ोसियों और नाते के बीच में बड़ी सहानुभूति के साथ बड़ी चर्चा का विषय बनती थी लेकिन बेचारी बहू के मन को पहचानने की चिन्ता किसी को भी न थी। सौभाग्यवती विष्णुप्रिया के मैके वाले अवश्य ही उसके लिए किसी हद तक दुखी थे पर अधिकतर अपनी लोक-लाज के मारे अधिक व्यथित थे। राजपण्डित का दामाद पागल हो गया है बड़े-बड़ों के बीच में उन्हें जवाबदेही करनी पड़ती है। विश्वम्भर मिश्र जब दिग्विजयी पंडित थे, हर ओर उनके अगाध पाण्डित्य और प्रतिभा का गुणगान होता था, तब राजपण्डित के कुल वालों को अपने जामाता पर गौरव का बोध होता था। विष्णुप्रिया अनेक सौभाग्यवतियों अथवा सौभाग्यकांक्षिणियों के लिये ईर्ष्या का कारण बनी थी, आज उन सभी सौभाग्यवती पंडितानियों के कलेजे में ठंडक पड़ी। अनेक शास्त्रों में पारंगत प्रकांड पंडित जिनके पति गण नवद्वीप के आकाश में सहसा विश्वम्भर रूपी सूर्य के उदय हो जाने से चाँद तारों की तरह अस्त हो गये थे, वे अब अपने-अपने कलेजों में चैन की तरी में तैरने लगे। उन्हें अब विष्णुप्रिया के सौभाग्य से ईर्ष्या करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। यह होने पर भी प्रायः कोई भी छोटी या बड़ी आयु वाली पण्डितानी सहानुभूति की मुद्रा में न थी। इसका कारण यह था कि पागल होकर भी विष्णुप्रिया का पति सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्ति था। यही नहीं, घाट-बाट में जनसाधारण के बहुत से लोग मुखर होकर यह कहने लगे कि पंडितों में सर्वश्रेष्ठ मानकर ही भगवान् ने निमाई को ऐसी अपूर्व भक्ति प्रदान की है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में हर समृद्ध पण्डितानी का राजवैभवशाली पति जनसाधारण की इन बातों से लांछित हो जाता था, और यही कुढ़न का कारण था। सारी कुढ़न सिमट-सिमटाकर बेचारी विष्णुप्रिया की उपेक्षा का कारण बन जाती थी। सौभाग्यवती विष्णुप्रिया एकदम अकेली थी। सबके लिए दुख था, सुख था किन्तु उसके नसीब में कुछ भी न था, एकदम सूना।

भोर से लेकर रात तक गृहस्थी का सारा काम करना ही मानो उसका जीवन था। अपने हरि-बावले बेटे को नारी सौन्दर्य से लुभाकर संसारी बनाने के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब सास कहतीं तो वह वैसे ही सोलहो सिंगार कर लेती जैसे वह भी उसकी गृहस्थी का एक कार्य हो। न उमंग न रस, विष्णुप्रिया अभी सोच भी न पाती थी कि हो क्या गया है। विवाह के बाद पति-पत्नी ने अपने रात के एकान्त में ऐसे काव्य भरे प्यार भरी घड़ियाँ बिताई थीं कि विष्णुप्रिया जादू में बँध गई थी। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के जादू में बँधे हुए थे। दोनों एक-दूसरे के गुणों पर अनन्य भाव से मुग्ध थे। वह मुग्धता दोनों के बीच में अब भी विद्यमान है। घूंघट की ओट कभी आँखों में आँखें पड़ जाती हैं तो विष्णुप्रिया को अब भी उससे अपने अटूट नाते का बोध होता है, पति की आँखों में उसके प्रति अब भी वही आकर्षण भाव आता है, पर ऐसा लगता है कि वह आकर्षण किसी और बड़े आकर्षण का निमित्त मात्र बन कर रह जाता है। नवयुवती वधू को ऐसा लगता है कि हर बार दृष्टि मिलने पर वे अपने होते ही पराये भी बन जाते हैं। वह पराया-पन, 'कृष्ण', जिससे कि पति का मन लग गया है, क्या विष्णुप्रिया भी उसी से अपना मन लगाये ? नहीं, कदापि नहीं, विष्णुप्रिया अपने विश्वम्भर पति को छोड़कर और किसे पूजेगी। दिन में सारे काम की व्यस्तता में अनेक बार वह पति के अविरल अश्रुधार बहाने की बात सुनती, कभी-कभी उनकी करुण कराह, उनका विलाप अन्तःपुर में उसके कानों में भी पहुँच ही जाता था। काम करते-करते हाथ थम जाते, पति-हृदय की सारी पीड़ा दौड़कर पत्नी के हृदय में समा जाती थी। वह बेचारी अपने पति की तरह आँसू भी नहीं बहा सकती। वह कुलवधू है। आठों पहर रोने की मनहूसियत फैलाना उसके लिए वर्जित है। पति की अश्रु गंगा पत्नी के हृदय की अन्तःसलिला बनकर आठों पहर बहती ही रहती है। पति का रोना चुक भी जाता है पर विष्णुप्रिया के मन का रुदन कभी नहीं थमता। पति के सारे बावलेपन को अपने भीतर बवण्डर सा झेलती हुई विष्णु-प्रिया अडिग है। भोर से लेकर रात तक बड़े घर की गृहस्थी सम्हालती है। पहले कभी-कभी अपने मन से घबराकर यह पूछ बैठती थी कि ये कब अच्छे होंगे। अब कुछ नहीं सूझता। सब कुछ नियति पर छोड़ दिया है।

नदिया नगर से थोड़े ही दूर शांतिपुर ग्राम में एक और भी ऐसी ही विरहा-कुल पवित्र आत्मा निमाई के निमित्त से नाना प्रकार की चिन्ताओं में लीन रहता है। उनका नाम है अद्वैताचार्य कमलाकर भट्टाचार्य। आयु में वे निमाई से बावन वर्ष बड़े थे। उनका सम्बन्ध एक बड़े प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित कुल से था। स्वयं भी वेदान्त उपनिषद् आदि के महापण्डित माने जाते थे। अपने सुनाम से अधिक वे अद्वैताचार्य के नाम से ही लोक विख्यात थे। अद्वैताचार्य अपने अगाध ज्ञान के लिए दूर-दूर तक सुविख्यात थे, उनसे वेदान्त की शिक्षा ग्रहण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने के लिए सूदूर गुजरात के दो नागर ब्राह्मण भी आये थे। उनके एक शिष्य का नाम कामदेव नागर था। जब वेदान्त के परमगुरु अद्वैताचार्य अपने ज्ञान की चरम परिणति को भगवत् भक्ति के रूप में पाने लगे तो जिन शिष्यों ने गुरु की इस नयी उपजी भावुकता के कारण उन्हें त्यागा था उनमें कामदेव सरनाम है। दूसरे शिष्य शंकर थे। किन्तु एक अन्य नागर शिष्य ने अपने परम गुरु की यह लीला समाप्त हो जाने के बाद 'अद्वैत प्रकाश' नामक उनका जीवन-चरित भी लिखा। यह गुरुभक्त ईशान नागर थे।

अद्वैताचार्य ने लगभग तीन-चौथाई शताब्दी तक अँधेरे और बड़े-बड़े तूफानों के बीच अपने आस्था के दीप को बाल रखा था! नदिया में शास्त्र-पुराण, भागवत, महाभारत, ईश्वर का नाम, सब कुछ केवल व्याख्यामात्र था। पण्डितगण उन पर लम्बी-लम्बी बहसें करते, एक-दूसरे को हराते जिताते थे। ज्ञान अपने भीतर से खोखला हो गया था। अब तक जिस विश्वास के ऊपर उनका ज्ञान टिका हुआ था वह विश्वास विधर्मी विजेताओं ने खण्डित ही नहीं, धूलि-धूसरित तक कर दिया, अब तो पाण्डित्य चर्चा केवल लकीर पीटने जैसी बात ही रह गई है। दुनियादारी की चढ़त-लड़त के लिए वह अब भी आवश्यक है किन्तु ज्ञान से जिस परम बोध की प्राप्ति होती है वह अब उसका लक्ष्य नहीं रहा। अद्वैताचार्य जी अपने समय के अनुसार अपने साथ ऐसा ढोंग न साध सके, उनके लिए ज्ञान ईश्वर प्राप्ति का साधन था। इसीलिए लोगों की पीठ-पीछे की जाने वाली टीका टिप्पणियों की भनक से दूर रह कर वे क्रमशः भगवद्भक्ति में विह्वल होते गये। बचपन में निमाई के बड़े भाई विश्वरूप ने भी अद्वैताचार्य जी के साथ रह कर ही वैराग्य कामना पायी थी। उनसे महान् व्यक्तित्व के कारण नदिया के इने-गिने वैष्णवों की महत्ता बढ़ गई थी, अन्यथा इन हरि विह्वलों का वर्ग पण्डित समाज में हँसी का पात्र था। अद्वैताचार्य वर्षों से यही एक कामना करते चले आ रहे थे कि आर्य जन की खण्डित आस्था को पुर्निर्मित करने के लिए भगवान् पृथ्वी पर अवतार लेंगे। उनकी यह कामना वैष्णव जनों में बहु विदित थी। इसलिए जब निमाई का नवरूप चामत्कारिक ढङ्ग से निखरा तो बहुत से भक्त उत्साह में अद्वैताचार्य जी से जा-जा कर कहने लगे कि आपकी मनोकांक्षा पूरी हुई, अवतार आ गया है। लेकिन उन्हें विश्वास नहीं होता था। कल का छोकरा, महा चंचल, महा उद्धत लड़का, लाख प्रतिभाशाली हो पर वह अवतार कदापि नहीं हो सकता। यों भी इस ग्यारहवें अवतार की बात तो किसी पोथी में लिखी नहीं थी फिर भला अद्वैताचार्य जी उस पर कैसे विश्वास कर लेते। उन्होंने कामना की थी आर्तजन की तरह, किन्तु उसके प्रतिफलित होने की बात—वह भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निमाई के रूप में—अद्वैताचार्य कैसे मान लें…………

छोटे-मोटे भक्तों की बातें तो इस कान से सुनी और उस कान से निकाल दीं पर जब श्रीवास जी के समान प्रौढ़ सुविचारक और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी यही कहने आया तो अद्वैताचार्य जी कुछ-कुछ झुंझला उठे। मन में सोचा, निमाई ने ऐसा क्या जादू कर दिया है इन सबके ऊपर ? ऊपर से कहा : "तुम लोग कीर्तन आरंभ करो, उचित समय पर मैं भी आ जाऊंगा।"

एक दिन निमाई पण्डित गदाधर नामक एक वैष्णव को साथ लेकर अचानक अद्वैताचार्य जी के घर पहुँच गये। आचार्य जी उस समय तुलसी-पूजन कर रहे थे। उनकी तल्लीनता निमाई को छू गयी। एकाएक हुङ्कार भरी और मूर्च्छित हो गये। अद्वैताचार्य जी का ध्यान तुरंत ही उस ओर गया। वे मूर्च्छित निमाई के पास आये और झुककर उन्हें देखने लगे। मूर्च्छित मुख-मंडल पर ऐसी दिव्य शांति विराज रही थी, ऐसी प्रभा चमक रही थी कि अद्वैताचार्य जी देखते ही रह गये। ऐसी कांति उन्होंने आज तक किसी चेहरे पर नहीं देखी थी। वे हैरत में थे, उनके परिचित स्व० जगन्नाथ मिश्र का बेटा, किसी समय उद्धत शिरोमणि कहलाने वाला यह युवक क्या सचमुच ही श्रीकृष्ण का अवतार है ?……… जिस भगवान् की चिरौरी कर-करके बुला रहे थे वह क्या इसी चिर-परिचित युवक के रूप में उनके सामने आया है ! यह अवतार हो भी सकता है—नहीं हो सकता—कदाचित् हो !……नहीं-हाँ-नहीं-हाँ-नहीं-न-न………

कुछ देर ऊहापोह में रहने के बाद अद्वैताचार्य जी एकाएक निश्चयात्मक मुद्रा में उठे; घर के भीतर गये। गंगा-जल और चन्दन लाये तथा मूर्च्छित निमाई के चरण पखारने लगे। गदाधर जो निमाई के साथ आये थे, उन्हें भगवान् मानते हुए भी अद्वैताचार्य जी के द्वारा उनकी पद सेवा होते देखकर सहसा व्यग्र हो गये, हड़बड़ाकर कहा—"यह आप क्या कर रहे हैं आचार्यपद ? निमाई पण्डित ने आपका ऐसा क्या बिगाड़ा है कि परम-पूज्य होकर भी आप एक बालक के चरण पखार रहे हैं ?"

अद्वैताचार्य जी ने तनिक हँस भर दिए, उत्तर न दिया। थोड़ी देर के बाद निमाई होश में आये। वयोवृद्ध आचार्य जी को अपने पैरों के पास बैठे देखकर वे बड़े परेशान हो गये। आवेश में एकाएक उठ कर वे कहने लगे : "गोसाईं, आप कहाँ बैठे हैं। मेरा मन यों ही बड़ी उथल-पुथल में है, उसे और अधिक पहेलियों भरा न बनाएँ।" कहते हुए उन्होंने आचार्य जी के चरणों पर अपना मस्तक नवा दिया और कहने लगे : "दयामय, मेरा उद्धार कर दें, मैं बड़ी आस लेकर आपके पास आया हूँ।" उनकी आँखें छलछला उठीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वैताचार्य जी का मन फिर ऊहापोह में पड़ गया। क्या निमाई सचमुच ही भगवान् के अवतार हैं ? यदि ऐसा है तो फिर इनमें इतना अधिक दैन्य भाव क्यों है ? यह मुझसे अपने आपको छिपा क्यों रहे हैं ? वयोवृद्ध आचार्य का तपोपूत शान्त मानस फिर हाँ-ना की गहरी हलचलों से भर गया। निमाई बड़ी देर तक अद्वैताचार्य जी के साथ रहे; वह समय आचार्य जी के लिए आँखमिचौनी के खेल जैसा था। घड़ी में लगता कि परम भक्ति के यह लक्षण किसी साधारण व्यक्ति में परिलक्षित हो ही नहीं सकते, निमाई निश्चय ही भगवान् के अवतार हैं। फिर दूसरी दृष्टि उन्हें बार-बार शंका में डाल देती थी। जो हो, वयोवृद्ध पूज्यपाद आचार्य महोदय आज निमाई को लेकर एक ऐसी आध्यात्मिक हलचल से भर उठे जिसे अपने हृदय में धारण करना और साधना अपने आप में एक अद्‌भुत अनुभव था। अव्यक्त व्यक्त हो रहा था। एक सत्यनिष्ठ साधक बूढ़ा-महापण्डित अपनी मनःप्रतीति से साक्षात्कार का क्षण पाकर सहसा पाँच बरस के अबोध शिशु जैसा हो गया।

श्रीवास पण्डित के घर निमाई अब प्रायः नित्य ही आने लगे। वहाँ उपस्थित होने वाली वैष्णव मण्डली के लिए तो पृथ्वी पर साक्षात् स्वर्ग ही उतर आया था। हरिमदमत्त भावविभोर निमाई को देखना ही अपने आप में एक ऐसा अनुभव था जिससे क्षण प्रतिक्षण उनकी मनोवृत्तियाँ स्वतः उदात्त होती रहती थीं। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर आनंद तरंगों का वह संस्पर्श सहज रूप में पाया था तो साधकों को बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है।

एक दिन निमाई पण्डित अपने घर में बैठे हुए थे, सहसा रोना आरंभ कर दिया। पूछने पर विरहाकुल स्वर में बोले—"मेरे कृष्ण कहाँ गये ?" कौन उत्तर दे। कृष्ण तो केवल निमाई को ही दिखलाई देते हैं। वे कब आये और कब गये इसे कोई कैसे बतलाये। निमाई का विरह विलाप बढ़ता गया। गदाधर वैष्णव के हाथ पर हाथ रख कर उन्होंने फिर पूछा—"गदाधर बोलो न, कहाँ गये मेरे कृष्ण ?"

गदाधर ने भाव भरे स्वर में उत्तर दिया—"आप को छोड़कर वे कहाँ जा सकते हैं। आप ही के हृदय में विराज रहे हैं कृष्ण।"

"मेरे हृदय में हैं ? हृदय में ?" कहकर श्री निमाई आवेश में भर कर अपनी छाती पर जोर से अपने नख गड़ाने लगे। उनका आवेश इतना प्रबल था कि यदि उन्हे रोका न जाता तो वे निश्चय ही अपने कलेजे को चीरने का कोई न कोई और भी उपाय करने लगते। गदाधर ने उन्हें बड़ी मुश्किल से रोका। शची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माँ गदाधर को आशीर्वाद देने लगीं : "तुम न होते बेटा, तो मेरा निमाई इस समय जाने क्या कर लेता। भगवान् तुम्हारा मंगल करें।"

निमाई का यह बावलापन नित्य प्रति बढ़ता ही जाता था। कभी घंटों गुम-सुम बैठे टकटकी लगाये कहीं देखा करते। उन्हें देखने वालों को लगता कि वे किसी अद्भुत रूप से सुन्दर वस्तु को अपलक होकर निहार रहे हैं निमाई की टकटकी से वह भाव दृश्य जब ओझल हो जाता तो वे सहसा अति व्याकुल हो उठते थे; रोते प्रलाप करते, मूर्च्छित हो जाते थे। मनुष्य पशु-पक्षी, घर की दीवालें, आकाश के चाँद-तारे—इस भूलोक में दिखलाई पड़ने वाली किसी भी वस्तु में कृष्ण का मनोहर रूप सहसा प्रकट हो जाता, निमाई उस रूप को देखते ही मगन हो जाते, नाचने लगते, नाम संकीर्तन करने लगते और यह करते हुए वे अपने चारों ओर ऐसा आनंद बिखेरने लगते थे कि देखने वाले, चाहे पण्डित हों या निर्वुद्धि, एक समान ही सुखद रूप से प्रेरित हो उठते थे। वह आर्त जन जो आततायी शासक दल के अतिशय अत्याचारों से सहम-सहम कर अब हँसना ही भूल गया था, निमाई को देख-देख कर फिर से रसबोध पाने लगा। निमाई आनंद विन्दु थे और लोक मन उस बिन्दु के प्रसार से आनंद सागर बनता जाता था। सचमुच ही लोगों को यह लगता था कि वे निमाई के रूप में किसी मनुष्य को नहीं वरन् साक्षात् श्रीकृष्ण को ही देख रहे हैं। श्याम मोहन उनके सामने गौर मोहन होकर उपस्थित है। भाव लीन हो जाने पर निमाई के शरीर से ऐसी कान्ति फूटने लगती थी कि देखने वालों की आँखें एक अनोखे चमत्कार से भर-भर जाती थीं।

वैष्णव समुदाय ने निमाई जैसे व्यक्तित्व के प्रभाव से नगर में अब एक नई हैसियत पा ली थी। वे अब पहले की तरह से पंडितों के विनोद और चुहल के पात्र नहीं रहे थे। सयाने पंडित अब यह समझने लगे थे कि उनके खोखले रोब दाब के दिन बीत गये। वे देख रहे थे कि लोक मानस इस समय निमाई रूपी बाढ़ में ऐसा बह रहा है कि उसे छेड़ना अपनी मौत बुलाना है। आपकी शामत आने पर यदि कोई दम्भी पंडित कहीं जन समाज में निमाई के विरुद्ध कभी कुछ कह देता तो लोगबाग अपने तीखे शब्दों से उसकी खाल खींचने लगते थे। ब्राह्मणत्व और पांडित्य के रोब की विजेता मुसलमान एक तो पहले ही चौपट कर चुके थे, दूसरे निमाई के व्यक्तित्व के आगे उनका खोखलापन बार-बार परि-लक्षित होता ही रहता था, यह पण्डित वर्ग जो रात-दिन धरम-करम, वेद-पुराण और अपने महान् होने का डंका पीटा करता था, और लोग रूढ़ संस्कार वश कान दबाकर सुन भी लेते थे, अब जन दृष्टि में खुले आम कानी कौड़ी मोल

६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो गया था। लोग बाग कहते : "कहाँ के बड़े हैं यह लोग। विधर्मी हाकिमों के अपने मन-मन भर के मूँड़ छटाँक भर के बनाकर झुका देते हैं, उनकी चिरौरियाँ करते हैं, उनसे अपने धर्म की बुराइयाँ सुनकर भी कुछ नहीं बोलते। विलासिनियों, वारवधुओं और शूद्रा दासियों से छिप कर अथवा कभी-कभी दम्भवश निर्लज्ज होकर नैन लड़ाते हैं और तिसपर भी जनसाधारण से अपने लिए पूजा चाहते हैं। यह लोग भला कहीं श्रीनिमाई के व्यक्तित्व के आगे क्षण भर को भी ठहर सकते हैं ? गरुड़ के आगे भुनगों की बिसात ही क्या।" श्रीवास जी के घर अब नित्य संकीर्तन होने लगा। कीर्तन में निमाई के चमत्कारों की चर्चा नित्य नगर भर में फैल जाती थी। निमाई के कारण मुर्दा जन मानस में एक नया उत्साह जागा था।

एक दिन निमाई ने श्रीवास जी से कहा कि मेरा अभिषेक करो। एक दिन वे उनके ठाकुर मण्डप की देवमूर्तियों को हटाकर स्वयं उस स्थान पर जा बैठे। उन्हें कभी वराह अवतार का आवेश आता, कभी नृसिंह का, कभी किसी और अवतार का। भगवान् के पढ़े सुने रूपों का ध्यान करते-करते निमाई अपने तीव्र संवेद के कारण भावना में इतने एकरस हो जाते थे कि उनमें और उनके महत् भाव में कोई अन्तर ही नहीं रहता था। वे अपनी बेहोशी में वही बन जाते थे जो उनका इष्ट था। श्रीवास जी उनके घर के सारे लोग और नित्य जुड़ने वाली वैष्णव मंडली अब निमाई का नाम न लेकर उन्हें प्रभु कहने लगी थी। यह लोग उन्हें निष्ठापूर्वक साक्षात् श्रीकृष्ण का अवतार मानने लगे थे।

वैष्णवों में वयोवृद्ध अद्वैताचार्य जी को छोड़कर अब किसी को भी उनके भगवान् होने में तनिक भी शंका न रही थी। अद्वैताचार्य जी का शंकालु चित्त अब भी यह विश्वास नहीं कर पाता था कि निमाई सचमुच भगवान् ही हैं। निमाई जब आवेश में आते तो अपने आपको भगवान् घोषित करते थे और जब उनका वह आवेश भाव समाप्त हो जाता था तो निर्बुद्धि बावले की तरह विलाप करने लगते थे। वे सबसे विनयपूर्वक कहते कि 'यदि बेहोशी में मुझसे काई चूक हो गई हो तो क्षमा करना। मैं न जाने क्या-क्या कर जाता हूँ, क्या-क्या बक जाता हूँ, विश्वास कीजिए, मैं जो कुछ भी करता हूँ वह अपने में रहकर नहीं करता।' श्रीनिमाई की ऐसी ही बातें अद्वैताचार्य जी के मन को भ्रम में डाल देती थीं; फिर आयु की छोटाई बड़ाई का प्रश्न भी था, जन्म भर का मान प्रतिष्ठा युक्त छद्म अहम् भी वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध महापुरुष को अपनी सीमा में बाँध लेता था।

जब किसी की सुकीर्ति फैलने लगती है तो उसके प्रति ईर्ष्या भी उसी अनुपात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में बढ़ती है। निमाई और श्रीवास के घर होने वाला हरि संकीर्तन सरकार के टुकड़खोर 'बड़े लोगों' और खास तौर से ज्ञान की सौदागरी में लिप्त रहने वाले स्वयं प्रतिष्ठित पण्डितों की दृष्टि में एक गहरा षड्यंत्र बन गया था। निमाई के जन्म से पूर्व एक बार जैसे यह खबर उड़ी थी कि नदिया के पण्डित तांत्रिक अनुष्ठान करके हुसैनशाह का तख्ता पलटने वाले हैं, वैसे ही अब फिर से गली-गली में यह अफवाह फैलने लगी कि बादशाह निमाई और उनके भक्तों को पकड़ने के लिये सेना भेज रहा है। पिछली बार जैसे ब्राह्मणों के गाँव के गाँव बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये थे, वैसे ही यदि निमाई और उनकी मण्डली को न दबाया गया तो प्रजा इनके प्रभाव में आकर एक दिन निश्चय ही भड़क उठेगी; फिर प्रचण्ड दमन होगा और गेहूँ के साथ बेचारे भद्रवर्गीय घुन बेगुनाह पीसे जायेंगे। बड़े लोग इस तरह की बातें फैलाने में बड़ा उत्साह दिखला रहे थे।

ऊपर निमाई अपनी मंडली में बार-बार यह कहने लगे थे कि इस नगर में शीघ्र ही एक महापुरुष आने वाला है। अपनी बेहोशी में निमाई अब कभी-कभी ऐसी रहस्यमयी बातें कह दिया करते थे। एक दिन श्रीवास के घर बैठे-बैठे एकाएक बोले—"जल्दी फाटक पर जाओ, महापुरुष आ गये हैं, उन्हें सादर लिवा लाओ।"

यह नित्यानंद थे। आगे चलकर निमाई के आदेशानुसार दलितों-गलितों को वैष्णव बनाकर बंगदेश को नवप्राण देने वाले परम भक्त निताई।

अनंत सौन्दर्य के ध्यान में निमग्न होते-होते निमाई का चित्त अब इतना निर्मल हो गया था कि उनके मन में विचार लहरियाँ ही नहीं, बल्कि दृष्टि तरंगें भी स्पष्ट लहराने लगी थीं। प्रायः उनकी मनोदृष्टि आनेवाली घटनाओं को उसी तरह देख लिया करती थी जैसे कोई अपने सामने की दुनिया को देखता है। जो व्यक्ति स्वयं उनके शब्दों में महापुरुष, आने वाला था वह आ गया। निताई जब वृन्दावन से नदिया की ओर चले थे तभी से श्री निमाई की हरि ध्यान रमी निर्मल भाव धारा में, भिन्न न होकर भी एक तरंग प्रायः उठने लगी थी। इससे श्री निमाई का विचलित हो उठना स्वाभाविक ही था किन्तु यह विचलन उन्हें उनकी मूल भावधारा से कभी काटता नहीं—अन्तर आवेश उतना ही प्रबल रहता है। जो व्यक्ति, महापुरुष, आया है वह उन्हीं को भजेगा, उन्हें ही खोज रहा है यह वे समझ गये थे। उन्हें लगता था कि आराध्य के लिये भक्त की खोज अब बन्द होनी चाहिये। जीव को जीव से तुरन्त ही जुड़ जाना चाहिये। अपनी इस व्यग्रता से आये हुए महापुरुष की खोज में अपने भक्तों को नगर में चारों ओर भेज दिया गया। ढूंढ़ने वाले जिन्हें बाहर ढूंढ़ रहे थे वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीवास की ड्योढ़ी पर स्वयं आ पहुँचे थे। निमाई प्रभु का आदेश पाते ही श्रीवास पण्डित स्वयं अपनी ड्योढ़ी पर गये। सचमुच एक तेजस्वी संन्यासी द्वारे खड़ा था। गद्‌गद होकर कहा : "मेरा नाम श्रीवास है। प्रभु ने आपका स्वागत करने के लिये यहाँ भेजा है।"

नित्यानन्द मुस्कुराये और श्रीवास जी के घर में प्रवेश कर गये।

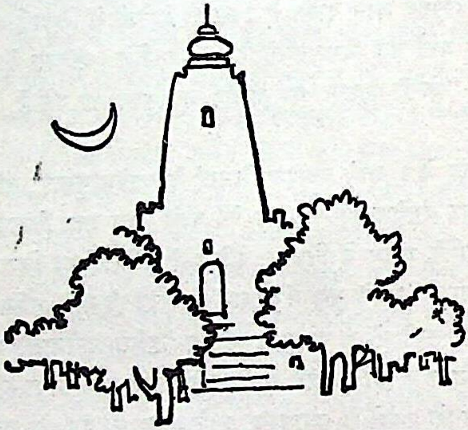

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरह

श्री निमाई की वैणव मंडली के इतिहास में निताई (नित्यानंद) का अनन्य स्थान है। निमाई निताई नाम जुड़कर जनता के हृदय में एक हो गये हैं। वैसे भक्त मंडली में निमाई प्रभु, साक्षात् श्रीकृष्ण का अवतार होने के कारण अलग थे और भक्तों में अद्वैताचार्य जी के बाद उनका स्थान दूसरा माना जाता था। नित्यानन्द ने चार वर्णों वाले सनातन समाज के द्वारा त्याज्य विगत बौद्धधर्मियों और शूद्रों को वैष्णव बनाकर, असंख्य पददलितों को उठाकर अपने कलेजे से लगाया था। निताई को न पाकर मानो निमाई की बाँहें निकल आई थीं। निमाई जो स्वप्प देखते थे, निताई उसे साकार कर दिखलाते थे।

लेकिन जब पहली बार निताई ने निमाई को देखा तो उन्हें कुछ-कुछ निराशा हुई। 'यह वही व्यक्ति है जिसके लिए वृन्दावन में सिद्ध योगी ईश्वरपुरी जी ने मुझसे कहा था—श्रीकृष्ण अब यहाँ नहीं हैं, वे नदिया में रहते हैं। यही हैं श्रीकृष्ण ? यह विरह बावला व्यक्ति जो रेशमी वस्त्रों और इतर-फुलेल, फूल-माला से सुसज्जित नागर वेश में यहाँ बैठा है, क्या सचमुच ही श्रीकृष्ण का अवतार है ?' संन्यासी नित्यानन्द को परम उन्मत्त भक्त आचार्य विश्वम्भर मिश्र का यह रूप गहरा झटका दे गया। जैसे अद्वैताचार्य जी के मन में शंकायें थीं वैसे ही नित्यानन्द के मन में भी जागीं। लेकिन जब-जब उनसे आँख मिल जाती थीं तब-तब नित्यानन्द अपने आपसे बेबस होने लगते थे। निमाई निताई को अपने भीतर खींचने लगते थे। निताई को लगता कि उनके प्राण काया से अलग होकर निमाई के प्राणों में जा समाते हैं। उनके अन्तःकरण का एक-एक अणु अजीब सनसनाहट से भर उठता था। उनकी सारी शंकाएँ सहसा विलीन हो जाती थीं। निमाई का पागलपन धीरे-धीरे निताई को अपने साथ जकड़ने लगा। कभी-कभी आवेश में आकर श्रीनिमाई श्रीनिताई को बलराम का अवतार बताया करते थे। जब पहले दिन उन्हें लेकर घर पहुँचे थे तो माँ से कहा था कि मैं अपने भाई विश्वरूप को फिर से तुम्हारे पास लाया हूँ। शची माँ के मन में भी नित्यानन्द को देखकर यही भाव आया। और निताई ने भी माँ के प्रति ऐसा ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मल प्रेम दर्शाया कि मानो वह उनका सगा बेटा हो जो वर्षों बाद फिर अपनी माँ से फिर आ मिला हो।

नित्यानन्द के आगमन के कुछ ही दिनों बाद व्यास पूर्णिमा का पर्व पड़ा। निमाई ने श्रीवास जी से कहा : "पंडित जी, व्यास पूजा यदि तुम्हारे ही घर में हो तो अच्छा होगा, परन्तु तुम पर कदाचित् बोझ बहुत पड़ जायगा इसीलिये कहने में संकोच भी कर रहा हूँ।"

श्रीवास हाथ जोड़कर बोले—"प्रभु, आपकी कृपा से इस घर में सब कुछ है। मुझे किसी प्रकार का विशेष प्रबंध नहीं करना पड़ेगा, केवल पूजा पद्धति की पुस्तक ही घर में नहीं है सो कहीं से ले आऊँगा। यह मेरा सौभाग्य है कि व्यास पूजा के लिये आपने इस अकिंचन के घर को ही चुना।"

व्यास पूजा सविधि हुई। श्रीनिमाई भगवद्भाव के आवेश में आ गये। निताई को लगा कि उनके सामने साक्षात् श्रीकृष्ण परमात्मा ही खड़े हैं। देखते-देखते भावावेश में आकर नित्यानन्द मूर्च्छित हो गए। श्रीनिमाई ने उनके शरीर पर हाथ फेर कर कहा : 'श्री नित्यानन्द उठो, संकीर्तन करो। जीव को प्रेमदान देकर उसका उद्धार करो। तुम्हारी समुदाय वासनापूर्ण होने का समय आ गया।"

नित्यानन्द इतनी उच्चकोटि की आत्मा थे कि उन्होंने अब तक अनेक बार ईश्वर से केवल अपने ही नहीं वरन् जीव-मात्र के उद्धार के लिए ही प्रार्थना की थी। श्रीनिमाई ने 'समुदाय वासना' शब्द कहकर मानो नित्यानंद की इसी इच्छा पूर्ति के लिए वरदान दिया था। व्यास पूजा की इस घटना के कुछ दिनों बाद ही जीवोद्धार की वह घड़ी आ गयी। श्रीवास पंडित की ड्योढ़ी पर हरिदास नामक एक दर्जी नित्य बैठता था। हरिदास यों तो मुसलमान माने जाते थे परंतु किसी-किसी का यह भी कहना था कि वे वस्तुतः जन्म से मुसलमान न होकर अनाथ ब्राह्मण बालक थे। बचपन में उनकी अनाथावस्था पर दया करके एक मुसलमान परिवार ने उन्हें आश्रय दिया था और इसीलिए वे विधर्मी कहलाने लगे। श्रीवास के समान उच्चकोटि के वैष्णव भक्त की नौकरी में आकर, कुछ तो भावुक प्रकृति के होने के कारण और कुछ वातावरण के प्रभाव से वे परम कृष्ण भक्त बने बिना न रह सके। कपड़े सीते रहते और उच्च स्वर में बराबर हरि नाम जपते रहते। एक मुसलमान का इस प्रकार कृष्णभक्त हो जाना सभी वैष्णवों के लिए आह्लाद-कारक था। स्वाभाविक रूप से हरिदास की भक्ति महिमा फैलने लगी, और यही उनकी विपत्तियों का कारण भी बन गयी। लोगों ने काजी से जाकर कहा कि यह दर्जी अपना धर्म त्यागकर काफिर हो गया है। देश-काल के अनुसार किसी मुसलमान के लिए अपना धर्म त्यागकर हिन्दू हो जाना सबसे बड़ा अपराध था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोराई खाँ क़ाज़ी ने क्रुद्ध होकर हरिदास को पकड़ मंगवाया। उन्होंने हरिदास को बहुत डाँटा-डपटा और कृष्ण नाम का जप न करने की आज्ञा दी। हरिदास उसी के सामने हरि-हरि करने लगे। गोराई क़ाजी ने क्रुद्ध होकर उनके प्राण-वध की आज्ञा दी। यह प्राण-वध की प्रणाली भी बड़ी ही निर्गम होती थी। अपराधी को नगर भर में बेंत मारते हुए घुमाया जाता था। यह दण्ड इतना कठोर था कि दो-तीन बाजारों में घूमते-घूमते क्रूर सिपाहियों की बेंत मारने से अपराधी के प्राण निकल जाते थे। दण्ड की आज्ञा देने के बाद गोराई क़ाज़ी ने दर्जी से एक बार फिर कहा—"अब भी वक्त है, अगर तुम इस हिन्दुआनी हरि-नाम का जप करना छोड़कर कलमा पढ़ो तो मैं तुम्हें बाइज्जत रिहा ही नहीं करूंगा बल्कि सरकार में नौकरी भी दे दूंगा।" लेकिन हरिदास बोले—"यदि यह देह-प्राण खण्ड-खण्ड हो जायँ तो भी मैं हरि नाम लेना कदापि नहीं छोड़ूंगा।"

बेंत पड़ने शुरू हो गये। हर बार बेंत खाकर भी हरिदास ऊँचे स्वर में हरि नाम का उच्चारण करते थे। काया की सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है। हरिदास बेंतों की मार खाते-खाते अचेतन हो गये। देखने वालों के मन पर गहरा आतंक छा गया। किसी की हिम्मत नहीं थी कि हरिदास को बचा सके। मूर्छित हरिदास को मृत मानकर सिपाहियों ने उन्हें गङ्गा में फेंक दिया और चले गये।

पानी का स्पर्श पाकर थोड़ी देर में हरिदास की चेतना लौट गयी। उसी समय संयोग से अद्वैताचार्य जी की दृष्टि उन पर पड़ी। वे उन्हें दया करके अपने घर उठा लाये।

हरिदास के बच जाने से श्रीनिमाई का प्रताप बढ़ा। विरोधियों ने कहना शुरू किया कि इस अपराध के कारण गोराई क़ाज़ी इस बार स्वयं निमाई, श्रीवास और नित्यानन्द जैसे वैष्णवों को भी निश्चय ही बेंत लगवायेगा। किंतु विरोधियों के द्वारा फैलाई गई यह अफवाहें फलीभूत न हुई। उल्टे श्रीनिमाई ने नित्यानन्द और हरिदास को नाम प्रचार करने का आदेश दिया। गली-गली घर-घर डोलकर हरिदास और नित्यानन्द कहते : "भाई रे, कृष्ण, कृष्ण भजो, हम तुमसे यही भिक्षा माँगते हैं।" इस नयी प्रकार की शिक्षा ने लोगों में चमत्कार फैला दिया। तेज-पुंज संन्यासी नित्यानन्द और भक्तवर हरिदास, जन-समुदाय के लिये आस्था के स्तम्भ बन गए। उनका 'नाम वितरण यज्ञ' धीरे-धीरे अपना पुण्य प्रभाव फैलाने लगा।

इसी समय एक घटना घटी। एक बड़े जमींदारी कुल के दो ब्राह्मण कुमार, जगाई और माधाई, उन दिनों नगर के प्रबन्धक थे। दोनों भाई बड़े ही क्रूर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कठोर और विलासी वृत्ति के थे। उन्हें धर्माधर्म का तनिक भी विवेक न था। वे बहुत शराब पीते थे। किसी का धन लूट लेना अथवा सुन्दर कन्या का शील-हरण करना उनके लिये आये दिन मामूली खेल था। सरकारी सिपाहियों का एक बहुत बड़ा दल उनके साथ रहता था। अपने हाकिमों की तरह वे भी आए दिन प्रजाजनों को तरह-तरह से पीड़ित किया करते थे। नदिया के जनसाधारण वर्ग के लोग जगाई, माधाई, और उनके सैनिकों से बड़े ही भयभीत और संत्रस्त रहते थे। एक दिन हरिनाम वितरण करते हुए निताई और हरिदास ने नगर में किसी जगह इन दुष्ट हाकिमों के अत्याचारों की कोई ताजी कलंक गाथा सुनी। नित्यानन्द का दिल भर आया। उन्हें इनके क्रूर स्वभाव पर दया उपजी; निताई का पुण्य जगाई-माधाई के पास से टक्कर लेने के लिये प्रस्तुत हो गया। तभी उन्होंने इनके वंश का इतिहास भी सुना।

शुभानन्द राय नामक एक कुलीन ब्राह्मण सौभाग्य से बड़े धनी और शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति बन गये थे। पैसा प्रायः सीधी राहों से तो अधिक जमा होता नहीं इसलिये वह टेढ़ी-मेढ़ी छिपी राहों से ही बड़े आदमी बने थे। अपने से अधिक सम्पन्न और शक्तिशाली लोगों की खुशामदें करना तथा अपने से कमजोर लोगों को दबाना और चूसना ही ऐसे धन संग्रह कर्त्ताओं का परम धर्म होता है। शुभा-नन्द राय गौड़ के बादशाह को अपनी नज़र-भेंटों और खुशामदों से प्रसन्न करके अपने वास्ते 'नदिया के राजा' का खिताब ले आया। लेकिन सब मिलाकर शुभा-नन्द राय बहुत बुरा आदमी नहीं था। वह एक जगह पर उदार और धर्मनिष्ठ भी था। उसके दोनों बेटे रघुनाथ और जनार्दन अपने पाण्डित्य और कायिक सौंदर्य के लिये दूर-दूर तक विख्यात थे। रघुनाथ के बेटे का नाम जगन्नाथ और जनार्दन-तनय का नाम माधव था। यही दोनों जगाई-माधाई के नाम से लोक में विख्यात थे। बचपन ही से यह लोग कुसंगति में पड़कर लूटपाट मचाने लगे थे। धीरे-धीरे नदिया और उसके दूर पास के गाँवों और कस्बों तक इन दोनों भाइयों के नाम देशकाल के पाप समान ही छा गये थे। किसी संस्कारी कुल का व्यक्ति यदि लम्पट और कुचाली बनता है तो प्रतिक्रिया वश स्वयं अपने सुसं-स्कारों के विद्रोहवश होकर वह पाप की हर सीमा को फलाँगता चला जाता है। जगाई माधाई के साथ भी यही हुआ। ब्राह्मण होकर भी गो-मांस तक खाते थे। मद पीना उनके लिये अत्यन्त साधारण-सी बात थी।

दोनों भाइयों की इस पृष्ठभूमि पर कुछ देर तक विचार करके नित्यानन्द ने हरिदास से कहा : "चलो भाई हम लोग इन दोनों को भी अपने गुरु का आदेश सुनाएँ।" हरिदास को राजी होते भला क्या देर लगती। दोनों भक्त उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान पर पहुँचे जहाँ उन्होंने जगाई-माधाई के उपस्थिति होने और गुण्डागर्दी करने की बात सुनी थी। जगाई-माधई एक धनी व्यापारी के चबूतरे पर बैठे हुए मद्य-पान कर रहे थे। उनके गुण्डे उसके घर से लूट का सामान निकाल-निकाल कर ला रहे थे। निताई और हरिदास सीधे उस चबूतरे के पास जाकर खड़े हो गए और हरि कीर्तन करने लगे।

अपनी सत्ता और शराब के नशे में राजा जगन्नाथ और राजा माधवनाथ को परमात्मा का नाम सुनना भला न लगा। क्रोध में भर कर जगाई बोला—"अरे भण्ड साधुओ, तुम्हें हमारे सामने तक आने का साहस क्योंकर हुआ?"

हरिदास गिड़गिड़ा कर बोले—"हम तो आप से केवल कृष्ण नाम की भीख माँगने आए हैं। हम आपसे और कुछ नहीं चाहते। बस, कृष्ण-कृष्ण भजिए।" दारू का कुज्जा गटगट हलक में उड़ेल कर माधव उठा—"ठहर तो सही कृष्ण के बच्चे, अभी तेरी हड्डी-पसलियाँ एक करता हूँ।"

निताई और हरिदास जान लेकर भागे। माधाई नशे की झोंक में थोड़ी देर तक उनके पीछे भागा। भक्तवर हरिदास जी बेचारे शरीर से स्थूल थे। उन्हें दौड़ने में कठिनाई होती थी। परंतु माधाई को अपने पीछे दौड़ते देख कर निताई ने हरिदास का हाथ झट से पकड़ लिया और उन्हें घसीटते हुए भागे। सौभाग्य-वश राजा माधवनाथ उर्फ माधाई नशे के कारण लड़खड़ा कर गिर गये और दोनों भक्तों को इस तरह अपनी जान बचाने का अवसर मिल गया।

दोनों जब श्री निमाई के पास पहुँचे तो उन्होंने हरिदास जी के हाँफने तथा लस्त-पस्त दिखलाई पड़ने का कारण पूछा। नित्यानन्द ने भक्तवर हरिदास जी की दौड़ाई पर हँसते और मीठी चुटकियाँ लेते हुए सारी घटना का आद्योपान्त विवरण प्रस्तुत किया।

हरिदास जी बोले—"देखिये प्रभु, ऐसे दुष्टों पर दयालु होकर यह हरिनाम प्रचार करने के लिए गये थे। इनकी चंचलता के कारण मुझे भी आज यह दुर्गति सहनी पड़ी।"

नित्यानन्द बोले—"गालियाँ खाने का यह कोई पहला अवसर तो हमें मिला नहीं था भक्तवर। जब से निमाई की आज्ञा से हम लोग नाम प्रचार करते डोल रहे हैं तब से ऐसे न जाने कितने लोगों से हमारी भेंट हो चुकी है। मुझे तो सच-मुच क्रूर और कुकर्मी लोगों पर बड़ी दया आती है निमाई। बेचारे न जाने अपने किस कुसंस्कार या पूर्व जन्म के पाप की छायावश होकर दूसरों को पीड़ित करने की पीड़ा भोगते हैं। इसे औसत लोग नहीं समझ पाते। बल्कि मैं तो कहता हूँ निमाई, तुम स्वयं इन दोनों भाइयों को नया जीवन प्रदान करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन प्रभावशाली बन्धुओं का हृदय परिवर्तन से लोक का निश्चय ही बड़ा मंगल होगा।''

श्री निमाई सुनकर मुस्कुराए और कहा—''श्रीपाद, जिसका तुम जैसा मंगलाकांक्षी हो उसका उद्धार भला क्यों न होगा। समय आने दो तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।''

कुछ ही दिनों बाद संयोग से जगाई-माधाई की शनि दृष्टि उस मुहल्ले पर पड़ी जिसमें श्रीवास जी की हवेली थी। जगाई-माधाई अपने गुण्डा सैनिक दल को लेकर उस दिन उस मुहल्ले के किसी रईस की हवेली में अपना डेरा जमाकर उसके खर्चे पर अपने भोग विलास में रत हुए। जगाई-माधाई जिस मुहल्ले में जितने दिनों तक रहते थे उतने दिनों तक वहाँ के लोगों को आठों पहर मानों साँप ही सूंघते रहते थे। घरों के द्वार बन्द हो जाते, गलियों में आवा-जाही भी थम जाती थी। श्रीवास जी के मुहल्ले में भी ऐसी ही मनहूसियत फैल गई। लोगों का भय था कि आज श्री निमाई की संकीर्तन मंडली पर आफत आएगी। संध्या के समय रोज की तरह श्रीवास जी की हवेली में संकीर्तन आरंभ हुआ। संगीत की ध्वनि सुनकर शराब के नशे में धुत्त दोनों भाई अपने डेरे से चल कर श्रीवास जी की ड्योढ़ी तक आ पहुँचे। फाटक भीतर से बन्द था। लेकिन झाँझ करतालों की तेज ध्वनि निर्बाध गति से बाहर जा रही थी 'हरि बोलो हरि' की गूंज भी निरंतर बढ़ती जा रही थी। संगीत ने शराबी भाइयों को नृत्य करने के लिए उकसाया। भीतर भक्त नाच रहे थे और बाहर शराबी। नाच और नशे के आनंद में कीर्तन के बोल उनके मन में रम गए। पहले तो नशा उन्हें नचाता रहा फिर बोल झुमाते रहे। श्रीवास जी के घर उस दिन सारी रात संकीर्तन होता रहा और बाहर जगाई-माधाई भी वैसे ही उन्मत्त होकर पीते, नाचते और गाते रहे। सबेरे कीर्तन समाप्त करके जब सब लोग गंगा-स्नान करने के लिए घर से बाहर निकले तब सामने देखा तो जगाई-माधाई खड़े मिले। उन्हें देखकर सभी के कलेजे धकधक करने लगे। लेकिन श्री निमाई आगे बढ़ने के कारण किसी के पाँव पीछे न लौट सके। श्री निमाई जब इन दोनों भाइयों के पास से गुजरे तो जगाई ने उन्हें रोककर पूछा—''निमाई पंडित, यह तुम्हारा सम्प्रदाय कैसा है? और क्या तुम लोग मंगलचंडी का गीत गा रहे थे? हम लोगों ने बड़ा आनंद पाया। किसी दिन हमारे यहाँ आकर क्या तुम अपना नाच-गाना नहीं करोगे?''

''भला-भला भगवान् तुम्हारा मंगल करे।'' मुस्कराते हुए श्री निमाई ने उत्तर दिया और आगे बढ़ गए।

जगाई-माधाई से श्री निमाई की इस भेंट और उनके रात भर नृत्य करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहने की चर्चा आनन-फानन ही नदिया की गली-गली में फैल गयी। निमाई के भक्त और प्रशंसक कहने लगे कि यह दुष्टजन अब सुधर गये किन्तु श्री निमाई केवल मुस्कुराकर रह गये। बात बदलते हुए उन्होंने कहा—"भक्तों को अब एकत्र होकर नगर कीर्तन करना चाहिये। अब जगत् को हरिनाम भक्ति दिखाने का अवसर आ गया है।"

'प्रभु' का आदेश पाते ही भक्तों ने नगर संकीर्तन करने की तैयारियाँ आरंभ कर दीं। किसी ने खोल लिया, किसी ने करताल; कोई शंख उठाकर चले और कोई भेरी बजाने लगा। सभी भक्तों ने अपने-अपने पैरों में घुंघरू बाँध लिये और इस प्रकार देशव्यापी अनास्था से लड़ने के लिये प्रेमी भक्तों की सेना सजकर श्री-वास पंडित की हवेली से वाहर निकली। नित्यानंद, अद्वैताचार्य, श्रीवास, गदाधर हरिदास, मुरारि, मुकुन्द, नरहरि आदि भक्तजन प्रेम के प्रचारक वनकर निकल पड़े। चारों ओर 'हरि-हरि' के बोल गूँजने लगे। गौरांग सुन्दर श्री निमाई आनंद के आवेश में नाचते हुए चले जा रहे थे। सारा नगर आनंद और आश्चर्य से चकित होकर इस कीर्तन मंडली को देख रहा था। घूमते-घूमते वे लोग जगाई-माधाई के डेरे के सामने पहुँच गये। दोनों भाई सारी रात ऐश आराम में बिताकर दिन में सो रहे थे। शोर से उनकी निद्रा भंग हुई। उन्होंने क्रुद्ध होकर अपने सेवकों को यह शोर बन्द कराने का आदेश दिया। नौकरों ने तुरन्त ही वाहर जाकर कीर्तन करने वालों को अपने मालिक का हुकुम सुनाया, किन्तु हरि उन्मत्त प्रेमी जन अपने हृदयासन पर विराजमान परमप्रभु की आज्ञा के अलावा भला जिस तिस के आदेश क्योंकर सुन सकते थे। वे लोग वैसे ही हरि-हरि करते हुए आगे बढ़ते रहे। जगाई-माधाई की आज्ञा पाते ही पेड़ों के पत्ते तक थरथराना बंद कर देते थे क्रिन्तु हरिनाम की गूँज समाप्त न हो सकी। वह शोर और भी जोर पकड़ता हुआ पास आने लगा। दुष्ट भाइयों ने फिर अपने नौकरों को डाँटा किन्तु जब उन्हें यह मालूम हुआ कि निमाई पंडित की टोली ने उनका आदेश मानने से इन्कार कर दिया है तो वे क्रोध से बावले होकर स्वयं बाहर निकल आये।

इस समय श्री निमाई अपने कीर्तनानन्द में रमकर पीछे वाले भक्तों के बीच में हो गये थे और निमाई कीर्तन मंडली में सबसे आगे थे। इन दोनों भाइयों को देखते ही वे भाव भरे शब्दों में बोले : "जगाई, हरि-हरि बोलो और हमें खरीद लो।" नित्यानंद के अश्रुपूरित नयन और गद्गद स्वर देख सुनकर जगाई के मन में कहीं चेतना का संचार हुआ, उसका क्रोध ठिठका किन्तु माधाई यह सुनकर और भी अधिक भड़क उठा। सामने एक दास पीतल की कलसी लिये खड़ा था। उसने वह कलसी उसके हाथ से झटक ली और खींच कर नित्यानंद के मुख पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारी। निताई का सिर फट गया, खून बहने लगा। इस आघात को खाकर नित्यानंद और भी अधिक उन्मत्त हो उठे। वे 'बोल गौर हरि' कहते हुए और भी अधिक उन्मत्त होकर नाचने लगे। माधाई का क्रोध अब तूफान बनकर निताई की ओर झपटा किन्तु जगाई ने तुरंत ही उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—"क्या करते हो माधाई, विदेशी संन्यासी को मारना मरदानगी नहीं है।" उसी समय निताई भी बोल उठे : "मेरे भइया तेरी इस कलसी की मार को तो मैं हँसी खुशी से सह सकता हूँ किन्तु तेरे अन्तःकरण की दुर्गति को तनिक भी नहीं सह पाता। एक बार मेरे कहने से हरिनाम उचार ले।"

सहसा शोर सुनकर श्री निमाई का ध्यान भंग हुआ। वे झपट कर आगे आ गये। रक्त से नहाए हुए नित्यानंद महाप्रभु को देखते ही निमाई आनंदावेश में आ गये। श्री निमाई ने तुरंत ही उन्हें अपने कलेजे से चिपका लिया और दुपट्टे से उनका घाव पोंछने लगे। उन्होंने कहा : "मेरे प्राणों के प्राण, श्रीपाद, आपको किसने मारा ?" और यह कहते हुए उनकी आँखें सहसा जगाई-माधाई की ओर घूम गईं। देखते ही क्रोध आया। एक बार जोश में हुङ्कार भर कर उधर झपटे किन्तु वैसे ही नित्यानन्द ने अपने स्पर्श मात्र से उन्हें भाव विगलित कर दिया। क्रोध के तनाव में खड़े माधाई की ओर दृष्टि गई फिर अपने श्रीपाद (निताई) को देखा। आँखों से झर-झर आँसू बह निकले। आगे की ओर झपटते हुए कातर वाणी में उन्होंने कहना शुरू किया : "अरे माधाई, तुमने यह क्या किया ? मारना है तो मुझे मार भाई। जिस परम पवित्र चन्द्रवदन श्री नित्यानन्द को देखकर जीवन के सारे पाप शांत हो जाते हैं, उन्हें मारने का साहस तुम्हें कैसे हुआ ? यह देव स्वरूप सौन्दर्य और कहीं भी देखा है तुमने ? इन्हें मारते तुम्हें दया न आई ! देख मेरे श्रीपाद के शरीर पर घाव से बहते इस रुधिर की बूंद-बूंद तुझे क्षमा दान करते हुए निर्मल गंगा सी बह रही है। त्रिलोक मे ऐसे दयालु महात्मा भला और कहीं देखे हैं तुमने ? मैंने तो कहीं नहीं देखे हैं। ऐसे अपने परम कृपालु को तुमने मारा माधाई ? स्वयं सोचो, यह तुमने क्या किया ?"

कीर्तन मण्डली तो खैर चली गई परन्तु जगाई और माधाई पश्चात्ताप के मारे एक पल चैन न पा सके। रात में नींद न आई। अपने महल के विशाल आँगन में टहलते रोते एक-दूसरे के आगे अपने अपराध कबूलते ही उनकी पूरी रात बीती। ब्राह्म-मुहूर्त का गंगा-स्नान, शीतल मन्द सुगन्धित समीर भी उन्हें तरावट न दे सका। मुँह-अँधेरे ही वह दोनों श्री निमाई के घर पहुँचे। कुण्डा खटखटाया। भीतर से कौन है पूछे जाने पर जगाई ने कहा—"प्रभु से कहो कि उनके अपराधी उनसे शरण माँगने आये हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानकारी पाते ही श्री निमाई तुरन्त बाहर आ गये। दोनों भाई उनके चरणों पर लोट गये और फूट-फूट कर रोने लगे। उन्हें उठाते हुए प्यार से झिड़क कर उन्होंने कहा—"अरे-अरे, तुम दोनों अपने को कहते तो हो कि नवद्वीप के राजा, और रो रहे हो औरतों की तरह से। छि: छि:। अपराध भी मनुष्य ही करता है और वही उस हीन भावना से उबरता भी है। मैं तो तुम्हें पहले ही क्षमा कर चुका हूँ। फिर भी जिन श्रीपाद को तुमने इतनी निर्ममता से घायल किया है उन्हीं से जाकर क्षमा माँगो।"

जब दोनों भाई रोते हुए नित्यानन्द के पास गये तो उन्होंने बड़े प्यार से हँसकर कहा—"शिशु जब अबोधावस्था में किसी बात पर बिगड़ कर अपने माता-पिता को मारते हैं तो क्या वे उनसे बदला लेते हैं, या क्रोध करते हैं? मैंने भी उस घटना को उसी भाव से देखा और माना है।"

फिर भी अपराधी माधाई उनसे बराबर यह आग्रह करता ही रहा कि वे उसे अवश्य ही कोई दण्ड देंगे जिससे कि उसका प्रायश्चित्त पूरा हो सके। श्री निताई बोले—"तुम्हारा प्रायश्चित्त तभी पूरा होगा जब तुम भविष्य में कभी कोई पाप नहीं करोगे।"

दोनों भाई चुपचाप आँसू बहाते हुए सुनते रहे। नित्यानंद ने फिर कहा—"अपनी ओर से मैंने तुम्हें केवल क्षमा ही नहीं किया वरन् भगवान् से यह प्रार्थना भी करता हूँ कि यदि मैंने किसी जन्म में कोई सुकर्म किया हो जिससे कि प्रभु प्रसन्न हुए हों तो उसका सुफल वे कृपापूर्वक तुम दोनों को प्रदान करें।" यह प्रार्थना करके उन्होंने दोनों भाइयों की ओर देखा। वे लोग अब भी गहरे पछतावे में थे। निताई ने हँस कर कहा—"अरे भाई अब तो झगड़ा खत्म करो। तुमने मुझे मारा और मैंने उसे संहर्ष स्वीकार किया, अब मैं तुम्हें हरि नाम देता हूँ तुम उसे स्वीकार करो। लेन-देन बराबर हो जायगा।"

जगाई-माधाई उसे और तुलसी-दल लेकर नित्यानन्द को अर्पित करते हुए बोले—"प्रभु, अपने पापों का बोझ हम आपके चरणों में डालते हैं। कृपा करके हमारा उद्धार करें।"

नवद्वीप के राजा जगाई-माधाई फिर अपने महलों में न गये। वे सब कुछ त्याग कर निताई के शिष्य बन गये और आठों पहर हरि ध्यान ने लीन रहने लगे। जगाई तो क्रमशः शांति लाभ करके अपने ऊपर काबू पा गये किन्तु माधाई के मन का पश्चात्ताप न मिटा। उसे जैसे-जैसे निताई की कृपालुता की थाह मिलती जाती थी वैसे-वैसे ही उसकी अपराध को कचोट भी बढ़ती जाती थी। निताई ने बार-बार समझाया। एक दिन ऐसे ही अवसर पर माधाई ने उनसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा—"प्रभु, आप तो करुणा-सागर हैं, आपने क्षमा कर दिया, किन्तु जिन सैकड़ों हजारों दुर्बल और असहाय जनों को मैंने तरह-तरह से सताया है उनकी तड़प भरी कराहों से मैं कैसे मुक्ति पाऊँगा। रात-दिन मुझे अपने अपराध ही अपराध दिखाई देते हैं। मैं ऐसा क्या प्रायश्चित करूँ कि जिससे मेरे समस्त पाप धुल जायें। ऐसा प्रायश्चित किये बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा प्रभु।"

नित्यानन्द बोले : "यदि ऐसा प्रायश्चित करना है तो गङ्गा-तट के किसी घाट पर बैठ जाओ और सब स्नानार्थियों के चरण छूकर सबसे अपने पापों के लिये क्षमा माँगो।"

माधाई ने ऐसा ही किया। उन्होंने स्वयं अपने श्रम और धन से गङ्गा-तट पर घाट बनवाया जहाँ रे सारे दिन, देर रात गये तक बैठे रहते थे। ये हरेक से अपने जान-अनाजन में किये हुए अपराधों के लिये क्षमा माँगते और जब सन्नाटा हो जाता तो नाम जप में लीन हो जाते थे। अपने धन, वैभव, सत्ता और कुल गर्व छोड़कर दोनों भाई दीन होकर दीनदयाल के ध्यान में रम गये।

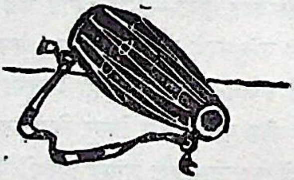

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौदह

जगाई माधाई के स्वभावों में इस आमूल परिवर्तन होने के कारण एक ओर जहाँ नदियावासी जन साधारण के मन में आस्था का फरहरा ऊँचा फहराया वहाँ ही सत्ताधारी, दम्भी और दुष्ट प्रकृति के स्वयं प्रतिष्ठित समाज में बेढब खलबली भी मच उठी। जगाई-माधाई उन सबके रोब-दाब और आतंक का प्रतीक थे। पापवृत्ति की यह विशेषता होती है कि जब वह पुण्यवृत्ति में पराजित होती है तो अपने पूरे आसुरी बल के साथ वह पुण्यवृत्ति पर अति भयंकर आक्रमण करती है। भट्टाचार्य जैसे दो-चार राज-सम्मानित श्रेष्ठ पण्डित कुल के हीन-कर्मा लोगों ने खीझ कर अपने 'गोसैंयां' क़ाज़ी चाँद खाँ की सेवा में पहुँच कर सलामें झुकाईं और कहा कि सरकार माई-बाप, बड़ा अनर्थ हो रहा है। इन दुष्ट वैष्णवों के 'हरि-हरि' के हुल्लड़ से सारे नगर की नींद हराम हो गई है। और निमाई की तंत्र शक्ति के प्रभाव से हमारा पवित्र हिन्दू धर्म तो लोप होता ही जा रहा है, आपके पवित्र धर्म पर भी बड़ा कठिन कुठाराघात हो रहा है। आपके धर्म में गाना-बजाना वर्जित है और यह दुष्ट निमाई हरिदास जैसे भोले-भाले मुसलमानों को फंसा कर उनके द्वारा अब आपके धर्म वालों को भी फुसला रहा है। इस संकीर्तन को बन्द करवाइए नहीं तो प्रजा में बड़ी अनुशासनहीनता फैल जायगी। बादशाह नाराज़ होंगे। क़ाज़ी चाँद खाँ ने शिकायती पण्डितों की बातों का मर्म समझ गया। निजी तौर से शायद उसे निमाई और उनके हरि संकीर्तन से आपत्ति न थी। उसके गोयन्दों ने इस बात की खूब जाँच-पड़ताल कर ली थी कि इसके पीछे कोई राजनीति षड्यन्त्र नहीं है, मगर वह जानता था कि अगर इन पंडितों की न सुनी गई तो यह लोग बादशाह के पास जाकर झूठ-सच लगायेंगे। नदिया की तंत्र-शक्ति से बादशाह पहले से ही आतंकित है इसलिए वह इन चाटुकार पडितों की बात मान लेगा। यह सब सोच कर क़ाज़ी चाँद खाँ ने यह डुग्गी पिटवा दी कि अब से शहर में कोई ऊँचे स्वरों में हरिकीर्तन न कर सकेगा।

दुष्टों के कलेजों में ठंडक पड़ी। चाँद खाँ के इस आदेश की आड़ में उन्होंने हिन्दू प्रजा को निमाई के विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया। बेचारे वैष्णवों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राण सिसकने लगे। वे दुखी होकर श्री चैतन्य की शरण में पहुँचे। उन्होंने राजाज्ञा और शासन द्वारा वैष्णवों के सामूहिक हत्याकांड की सम्भावना से सम्बन्धित अफ़वाहें सुनीं और कहा : "हरि को भजने वाला भयमुक्त होता है। तुम लोग डरो मत। नगर भर में जितनी कीर्तन-मंडलियाँ हैं। उन सबको एकत्र करो। आज संध्या को हम सब भक्त मिलकर नगर-संकीर्तन दल निकालेंगे। हम सब सीधे क़ाज़ी चाँद खाँ के द्वारे पर ही जम कर कीर्तन करेंगे। देखें, क़ाज़ी हमारा क्या करता है।"

उस शाम भारत में कदाचित् पहली बार सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। भयाक्रान्त प्रजाजन श्री निमाई के अभय-मंत्र से कवच-मंडित होकर सैकड़ों हज़ारों की संख्या में जुलूस बनाकर खोल, झांझ, मृदंग आदि वाद्यों के साथ हरि बोल, हरि बोल, करते नाचते-गाते नगर की प्रमुख सड़कों पर घूमते हुए क़ाज़ी चाँद खाँ के द्वार पहुँचा। क़ाज़ी ने सेना भेजी पर श्री निमाई ने उनके दो-चार ओहदेदारों को ज्योंही कलेजे से लगाकर अपना प्रेम दिया त्योंही सेना भी उल्लसित होकर नृत्य कीर्तन में शामिल हो गई। अब तो क़ाज़ी के भय का वारा-पार न रहा। उसने स्वयं आकर श्री निमाई से क्षमा माँगी और अपनी आज्ञा वापस ले ली।

इस घटना के बाद नदियावासियों की भक्ति निमाई के प्रति अत्यधिक बढ़ गयी थी। अब केवल श्रीवास पण्डित के घर जुड़ने वाली वैष्णव मण्डली ही नहीं वरन् सारा नगर एक मुख से यही कहता था कि श्री निकाई विश्वम्भर वास्तव में श्रीकृष्ण के अवतार हैं। यह बात नहीं कि श्री निमाई को ढोंगी अथवा पागल मानने वाले नगर में रह न ही गए हों किन्तु उनके आक्षेपों का प्रभाव अब जन मन पर नहीं पड़ता था। श्रीवास पंडित के घर का तो बच्चा-बच्चा चैतन्य को साक्षात् परमात्मा मानकर ही उनकी पूजा करता था। किसी अन्य देवी या देवता में अब उनकी श्रद्धा नहीं रही थी। श्रीवास के घर का आँगन श्री निमाई की अनेक लीलाओं का केन्द्र बन गया था। इसी आँगन में श्रीमद्भागवत्, गीत गोविन्द आदि पुस्तकों की व्याख्याएँ भी नित्यप्रति हुआ करती थीं। सूरज ढलते न ढलते श्री निभाई वहाँ पहुँच जाते और सारी रात हरिनाम कीर्तन तथा भागवत आदि पुराणों में उल्लिखित भगवान् के रूप और गुणों की व्याख्याएँ हुआ करती थीं। कभी-कभी श्रीवास पंडित के द्वारा की जाने वाली इन सूक्ष्म व्याख्याओं को सुनते-सुनते मुग्ध होकर निमाई कह उठते : "पण्डित, एक बार फिर से कहो, तुम्हारे शब्द अमृत के समान जीवनदायी हैं।" कभी-कभी किसी बात पर भाव-विभोर होकर उनसे बच्चे की तरह बार-बार यह माँग दोहराते और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनकर मूर्च्छित हो जाया करते थे। एक बार ऐसे ही अवसर पर बूढ़े अद्वैताचार्य जी ने श्री निमाई के चरण स्पर्श करके उन्हें बड़े भक्तिभाव से प्रणाम किया। श्रीं निमाई के अवतार होने के सम्बन्ध में उन्हें अब तनिक भी शंका नहीं रह गयी थी। पददलित दमित दुखी और आस्थाहीन प्रजा को आस्था और नवजीवन प्रदान करने के लिए भगवान् इस बार स्वयं भक्त बनकर पधारे हैं—इस बात में अब उन्हें तनिक भी शंका नहीं रह गई थी। मूर्छा भंग होने पर निमाई को जब अद्वैताचार्य जी के द्वारा अपने चरण स्पर्श किये जाने का समाचार मिला तो वे हाथ जोड़कर बोले : "आचार्य, आप आस्था और भक्ति के महासागर हैं, मैं तो एक क्षुब्ध तलैया जैसा हूँ। आप मेरे पैर छूकर मुझे पाप का भागी न बनाएं।" चैतन्य निमाई का यह दीनभाव उनके भक्तों के लिए आदर्श बन गया था।

कीर्तन के साथ ही साथ कभी-कभी लीलाएँ भी होती थीं। नगर के और भी अनेक बड़े प्रतिष्ठित और श्रीमन्त लोग भी कभी-कभी श्री निमाई की वैष्णव-मंडली को साग्रह अपने यहाँ बुलाते थे। नदिया में एक बड़े सम्पन्न और प्रभाव-शाली कायस्थ सज्जन रहा करते थे। बादशाह से उन्हें 'खान' का खिताब मिला था, इसलिए लोग उन्हें बुद्धिमन्त खाँ कहा करते थे। यह बुद्धिमन्त खाँ निमाई के परम भक्त हो गये थे। उनके अनेक अनुनय विनय करने पर श्री निमाई अपनी मंडली को लेकर उनके यहाँ कीर्तन अथवा लीला प्रदर्शन करने के लिए जाने लगे। ऐसे ही एक बार बुद्धिमन्त खाँ के घर पर लीला का आयोजन हुआ। श्रीवास पण्डित ने नारद का अभिनय किया था, और श्री निमाई ने देवी रुक्मिणी का। नारी वेश में निमाई को देखकर स्वयं उनकी माता भी उन्हें न पहचान पाईं। निमाई को अपने भावों का प्रदर्शन करने के लिए कोई न कोई बहाना भर मिलना चाहिए, वे उसमें अपने आपको डुबो देते थे। रुक्मिणी के रूप में श्री निमाई ने ऐसे तन्मय होकर प्रेम लीला दिखलाई कि हर देखने वाले उनकी वाह वाह कर उठे। भट्टाचार्य आदि विरोधियों ने यह सुन कर चहुँ ओर यह शोर मचाना शुरू किया कि औरतों को फाँसने के लिए निमाई यह नया जाल फैला रहे हैं। किन्तु निमाई से प्रति लोगों का विश्वास अब इतना बढ़ गया था कि कोई भी इस प्रकार की कुत्साभरी बातों में रस ही नहीं लेते थे। विरोधियों को जब इस दिशा में गति न मिल सकी तो उन्होंने विधर्मी शासकों के कान भरने आरम्भ कर दिये। नदिया में इस चैतन्य लीला के सबसे बड़े विरोधी भट्टाचार्य वंश के लोग थे। उनके यहाँ कई पीढ़ियों से लक्ष्मी और सरस्वती समान रूप से कृपाशील थीं अतः भट्टाचार्यों का घमण्ड बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ था। जब तक विश्वम्भर मिश्र आचार्यपद पर विराजमान होकर नदिया के वयोवृद्ध और प्राचीन वंशों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्यों के ज्ञान गौरव को अपने प्रखर पाण्डित्य से निस्तेज कर रहे थे तब तक किसी को उनके विरुद्ध चूं तक करने का साहस नहीं होता था, किन्तु अब बहुत से लोग उनको साख उखाड़ने के लिए प्रयत्नशील हो गये थे। भट्टाचार्यों ने श्री निमाई के वैष्णव चक्र में सम्मिलित होने वालों को यह कहकर धिक्कारना आरंभ किया कि पगले निमाई की अश्लील लीलाओं में रस लेते थे। विरोधियों के इस खोखले झूठ का भण्डाफोड़ भी वैष्णवों के द्वारा वैसी ही तत्परता से किया गया। श्री निमाई ने कृष्ण-रुक्मिणी की प्रेम लीला का भावाभिनय रचने से पहले ही अपने साथियों से बड़े स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया था कि उनकी इस लीला को केवल वे लोग देख सकेंगे जो अपनी वासनाओं से ऊपर उठ चुके हैं। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि राधा किंवा रुक्मिणी और कृष्ण के प्रेम को भौतिक दृष्टि से न देखा और न ग्रहण किया जाय।

वैष्णव साहित्य और दर्शन के गगनचुम्बी भवन की नींव ही प्रेमतत्त्व के ऊपर रखी गई है। चैतन्य श्री निमाई ने एक ही तत्त्व के भौतिक पहलू को 'काम' और आध्यात्मिक पहलू को 'प्रेम' की संज्ञा दी है, लेकिन दोनों के लक्षण एक जगह पर एकदम भिन्न हैं—

'काम, प्रेम, दोहाकार विभिन्न लक्षण।
लौह आर हेम जेछे स्वरूपे विलक्षण॥'

लोहे और सोने का वर्ण अलग-अलग है। काम हमारी चेतना को अत्यन्त संसुचित परिधि में बाँध देती है। काम ऐसी तंग, अँधेर भरी कालकोठरी है जहाँ चेतना आँखें रहते हुए भी कुछ नहीं देख पाती और प्रेम सूर्य से समान हैं जिसके प्रकाश में हमारी चेतना को दशों दिशाओं में दूर-दूर तक अपनी दृष्टि दौड़ाने की खुली छूट मिलती है। प्रेम काम से विकसित हो सकता है, पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बन सकता है, यह असम्भव नहीं है, किन्तु सोना बनने पर लोहा अपने पूर्व रूप-वर्ण और गुणों से फिर तनिक भी मेल नहीं खाता। कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है किन्तु उसमें कीचड़ की गंदगी का लेशमात्र भी नहीं रहता; कीचड़ कमल के रूप में दिव्य सौन्दर्य बन जाती है। राधा-कृष्ण अथवा रुक्मिणी-कृष्ण प्रेम वैष्णव भक्ति में शीर्षस्थ स्थान पर प्रतिष्ठित है जिसे अनुभव करने का अधिकार प्रारम्भिक साधकों को भी नहीं है। साध्य भक्ति के द्वारा सध कर वैष्णव जब सेवा भाव में आता है तभी उसकी वास्तविक साधना आरम्भ होती है। वैष्णव जगत् को ईश्वर मान कर मात्र कर्तव्यवश नहीं वरन् प्रेम से कृष्णमय जगत् की सेवा करता है। फिर वह सख्य भाव धारण करता है, ईश्वर अब उसे आज्ञा नहीं देता वरन् हर काम में भक्त के साथ रहता है। यह साधना पूरी होने के उपरांत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह वात्सल्य भाव में प्रवेश करता है। भक्त के आगे दुनिया बच्चे सी खेलती है। दुनिया ईश्वर है—भक्त उसकी भलाई-बुराई नहीं देखता केवल उसी तरह प्रेम करता है जैसे माँ अपने बच्चे से करती है। यह वात्सल्य भाव सिद्ध होने के बाद ही भक्त गोपी भाव पाता है और राधा भाव तो सर्वोच्च है। इसीलिए श्री निमाई का यह स्पष्ट आदेश था कि जो व्यक्ति अपने मानस में इतना पवित्र न हो चुका हो वह इस लीला में भाग न ले।

गौरांग के इस कथन पर श्रीवास और अद्वैताचार्य जी ने कहा था कि हमें इस लीला में सम्मिलित न किया जाय। क्योंकि हम लोग अभी इस योग्य नहीं हुए। इस पर गौरांग निमाई ने वासनाओं से लड़ने वाले महान आत्मवीरों के रूप में उनकी वन्दना की थी।

इस घटना का बखान होने के कारण जब भट्टाचार्य घराने के लोग निमाई को अपनी इच्छा अनुसार बदनाम न कर पाये तो उन्होंने चाँद खाँ क़ाज़ी का सहारा लिया। उनके कान भरे : "हुज़ूर इन पगलों ने तो शहर की नींद हराम कर रखी है। शंख, मृदंग, ढोल, करताल के शोर के कारण पण्डितों के ज्ञान-ध्यान में बड़ा विघ्न पड़ता है।" परंतु ऐसी शिकायतों का भी कुछ खास प्रभाव न पड़ा। जंगाई-माधाई के हृदय परिवर्त्तन की घटना के बाद नगर का समझदार मुसलमान क़ाज़ी निमाई और उनकी टोली के विरुद्ध सहसा कोई सीधी कार्यवाही करने से मन ही मन में हिचकता था। किन्तु भट्टाचार्यों और उनके जैसे लोगों ने इस बात का प्रचार करने में कोई कसर न उठा रखी कि बादशाही सेना शीघ्र ही नदियावासियों को दण्ड देने के लिए आ रही है। इस बार गली-गली में कत्ले आम मचेगा, औरतों की बेइज़्ज़ती होगी, निरपराध बूढ़े और बच्चे मौत के घाट उतारे जायँगे। यह अफ़वाह इतनी तेजी से फैलाई गई कि अनेक नागरिकों के कलेजे भय से सनसना उठे। जहाँ-तहाँ कुछ लोग खुले आम यह कहने लगे कि थोड़े से लोगों के पाप के कारण हम सारे नगर पर तबाही न आने देंगे। चलो, हम सब मिलकर पहले ही पाप के प्रधान अड्डे, श्रीवास पण्डित के घर को खोद कर मिट्टी में मिला दें। आश्चर्य की बात यह थी कि इतना भयातंक फैलाने पर भी विपक्षीगण जनमानस से श्री निमाई के प्रति श्रद्धाभाव को न हटा सके। जब जनबल संगठित न हो सका तो विरोधियों में से कुछ लोग अपने तंत्रबल का सहारा लेने लगे। गोपाल चापल नामक एक ब्राह्मण ने श्रीवास पण्डित की हवेली के फाटक पर एक रात कुछ तांत्रिक अनुष्ठान किया। सबेरे-सबेरे वैष्णवों ने फाटक पर जब दारू, बकरे का मांस-पिण्ड तथा इस प्रकार की गन्दी सामग्री देखी तो वे बहुत ही दुखी हुए। किन्तु श्री निमाई ने इस संबंध में भी लोगों का मन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुसंस्कारों से मुक्त करके निर्भय बना दिया। ज्यों-ज्यों नगरवासी श्री निमाई और उनके साथियों के प्रति अपनी अधिकाधिक श्रद्धा व्यक्त करते जाते थे त्यों-त्यों उनके विरोधी खिसिया-खिसिया कर गंदी से गंदी बातें बकने लगे थे। और इस दौर में श्री निमाई का मन संन्यास लेने के लिए दिनों-दिन पोढ़ा होने लगा। उन्होंने अपने समर्थकों के आगे जब यह निश्चय घोषित किया तो वे सब के सब व्याकुल हो उठे। श्री निमाई से ऐसा न करने के लिए बहुत आग्रह किया गया। परन्तु कोई भी उनके इस निश्चय में परिवर्त्तन न ला सका। शची माँ भीतर ही भीतर कुछ समझ तो अवश्य गई थीं कि उनका पुत्र अब संन्यासी हुए बिना न मानेगा। उस माँ का दुख भला कैसे बखाना जाय जिसके दो बेटे घर संसार से विरक्त होकर संन्यासी बने।

शक सम्वत् १४२१ में पौष पूर्णिमा को श्री निमाई अपने एक भक्त सेवक गोविन्द के साथ नदिया से काटवा ग्राम चले गये। उन्होंने पूज्य संन्यासो केशव भारती से दीक्षा देने का आग्रह किया। एक बेल के वृक्ष के नीचे 'देव' नामक नाई ने उनका सिर मुण्डन किया और गुरु ने उन्हें संन्यासी बना दिया।

श्री निमाई के संन्यासी बनने का समाचार फैलते देर न लगी। नदिया में उनके शत्रु तक यह सुनकर स्तब्ध हो गये। शची माता ने जब यह सूचना पायी तो उनसे मिलने के लिए दौड़ी-दौड़ी शान्तिपुर पहुँचीं। संन्यासी होने के बाद व्यक्ति अपने घर गाँव में लौट कर नहीं आता। इसीलिए शची माँ अपने संन्यासी पुत्र से स्वयं मिलने के लिए गयी थीं। माँ बेटे का मिलन बड़ा ही मार्मिक था किन्तु माँ के सारे आँसू भी बेटे के कृष्णानुराग को कम न कर सके। सूर्य को कोठरी में बन्द नहीं किया जा सकता, वह सारे संसार को प्रकाश देने के लिए उगता है।

अपने भक्त और अनुचर गोविन्द को लेकर श्री निमाई हाज़ीपुर, मिदनापुर, होते हुए नयनगढ़ पहुँचे। रास्ते में तरह-तरह के लोग मिलते थे। कोई उनके अनूप रूप और नौजवानी को देखकर उनके संन्यास धारण करने को बुराई करता और कोई उनका भक्त बन जाता था। नयनगढ़ के पास ही ढलेश्वर नामक शिवजी का मन्दिर था। चैतन्य उनके पूजनार्थ मन्दिर में गये। मन्दिर अनेक भक्तों और साधुओं से भरा हुआ था। श्री निमाई मूर्ति को देखते ही भाव-विह्वल हो उठे। शिवजी की वन्दना करते-करते वे ध्यान-मग्न हो गये। जो भी उनके दर्शन करता वही उनका भक्त बन जाता था। थोड़ी ही देर में सारी बस्ती के इस संन्यासी के आगमन की धूम मच गई। वीरेश्वर सेन और भवानी शंकर सेन जैसे बड़े सम्पन्न व्यक्तियों से लेकर साधारण से साधारण व्यक्ति तक उनके पास आने लगे। श्री चैतन्य के उपदेश, उनका अलौकिक प्रेम-भाव, उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीर्तन नर्तन देखकर सभी के मन एक अलौकिक और अपूर्व आनंद से भर जाते थे। शासकों और उनसे भी अधिक उनका सहारा पाये हुए दुष्ट लोगों के अत्याचारों से त्रस्त जनमानस अपने सारे विश्वास प्रायः खो बैठा था। पण्डित पुजारी संन्यासी आदि कोई भी जनता के मन में श्रद्धाभाव को सही तौर पर उठा न पाते थे। मजबूरी में मनुष्य जी भर रहा था किन्तु उसके मन में कोई उल्लास न था। श्री निमाई के दर्शन मात्र से रेगिस्तान के समान सूखे जनमानस में श्रद्धा का सोता फूट पड़ता था और फिर उनकी वाणी, उनकी भक्ति देखकर तो अधिकांश लोगों के मन उनके ऊपर निछावर हो-हो जाते थे। 'जीवन में केवल कुण्ठाएँ, उदासी और अनास्था ही नहीं है वरन् उसमें शुभ परिवर्त्तन भी आ सकता है। हमें केवल आज की जड़ता को ही जीवन की शाश्वत जड़ता नहीं मान लेना चाहिए। जीवन गतिशील है, परिवर्त्तनशील है। ईश्वर पर भरोसा रखो, उसके बन्दे भ्रमवश उसका घिनौना और अतिक्रूर रूप भले ही प्रदर्शित करें किन्तु ईश्वर साक्षात् प्रेममय है। प्रभु को केवल प्रेम ही प्यारा है।' चैतन्य के प्रभाव से लोक-चेतना उत्साह के साथ फिर से जाग उठी। ढकेश्वर से जलेश्वर, हरिहर बलशोर होते हुए वे नीलगढ़ पहुँचे। वहाँ से महानदी पार कर गोपीनाथ भगवान् के दर्शन किये, फिर साक्षीगोपाल के मंदिर में पहुँचे। यहाँ वे पूरे एक दिन ऐसे कृष्णोन्मत्त रहे कि देखने वालों की भीड़ लग गई। वे सारे दिन रोते रहे, जिस-तिस को गले लगा-लगाकर रोया किये, जिसे छू लेते उसी का अंतर उनकी आनंद तरंगों से भर-भर उठता था। एक दीवाने ने पचासों को दीवाना बना दिया। अब तो यह नौवत आ गई थी कि चैतन्य से पहले उनके यश की चमत्कारी कथाएँ और दर्शनार्थियों की भीड़ ही गाँव-गाँव में वरावर वढ़ती चली जाती थी। लिंगराज मन्दिर के दर्शन करके श्रीनिमाई आथरनला नामक स्थान पर पहुँचे। श्रीजगन्नाथ मन्दिर के शिखर पर फहराता हुआ ध्वज यहाँ से प्रत्यक्ष दृश्यमान था। उसे देखते ही कृष्ण-बावले निमाई महाराज अपने आपे में न रह सके—"वह रहे मेरे नाथ मेरे प्राणाधार!' और फिर तो उनके बावलेपन को कोई रोक न सका। हिरन छलांगों को मात करने वाली तेजी से वे दौड़ चले। कोई उनका साथ न दे सका। फरहरे पर टकटकी लगाकर सीधी दौड़ लगाते हुए वे जगन्नाथ जी के मन्दिर में प्रवेश कर गये। अपने आनन्द के चरम विंदु पर पहुँचकर जगदीश की मूर्ति के सामने पहुँचते न पहुँचते वे सुधि खोकर गिर पड़े। पंडे-पुजारियों ने समझा कि कोई पागल घुस आया है और मट्ठर होकर पड़ रहा है। उन्होंने मारना शुरू किया। दुष्ट और अविचारी पंडों ने यह न समझा कि जिस परमप्रभु की सेवा में नियुक्त होकर वे यहाँ नित्य गुलछर्रे उठाते हैं उन्हीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को अपने बेंतों से मार रहे हैं। निमाई अपने उर अन्तर में जगन्नाथ से मिलकर स्वयं जगन्नाथ हो गये थे। भक्त और भगवान् में कोई अन्तर नहीं रह गया था। वे अपने योगानंद में थे, काया की मार उन पर तनिक भी प्रभाव न डाल सकी। पंडे हारकर अलग हट गये। वड़ी देर तक मंदिर में वैसे ही अचेत पड़े रहे, बंद आँखों से आँसुओं की अविरल धार वहती रही। बीच-बीच में स्फुट स्वर में कुछ बुदबुदा भी लेते थे, वाकी सारा शरीर निश्चेष्ट पड़ा था। भीड़ लग गयी। अनोखा दृश्य था। मारपीट करने के कारण पंडों की इतनी निन्दा फैली कि वासुदेव सार्वभौम नामक महान् विद्वान् जो उड़ीसा के राजा और प्रजा के समान रूप से पूज्य थे और उस समय संयोग से मंदिर के किसी कक्ष में विराजमान थे, यह सुनकर निमाई को देखने के लिए बाहर आये। तब तक निमाई के संगी-साथी भी वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने श्रीकृष्ण कीर्तन करके निमाई को फिर से चैतन्य करना आरम्भ कर दिया। राजपण्डित वासुदेव सार्वभौम ने निमाई के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की और जब उन्हें उनके पुरखों के नाम मालूम हुए तो तुरन्त ही उन्हें अपने घर लिवा ले गये। निमाई के नाना नीलाम्बर चक्रवर्ती सार्वभौम के पिता माहेश्वर विशारद के परम मित्र थे। नदिया और उसके आस-पास के स्थानों में कुछ लोग निमाई के संन्यासी हो जाने का समाचार सुनकर भक्ति भाव वश उनके पीछे अपने-अपने घर छोड़कर चले आए थे। उन्हीं में गोपीनाथ नामक एक सज्जन भी थे जो संयोग ने वासुदेव सार्वभौम के साले लगते थे। सार्वभौम महाराज ने उनसे पूछा : "यह लड़का किस वर्ग का संन्यासी है ?"

"इन्होंने केशव भारती से शिक्षा ली है।"

"अरे पर संन्यासियों की इससे भी उत्तम कोटियाँ हैं, उनमें क्यों नहीं दीक्षित हुआ ?—परन्तु यह इतना सुदर्शन और जवान है कि इससे अभी संन्यासी धर्म का ठीक-ठीक पालन न हो सकेगा। जो हो, जब एक प्रकार से यह घर ही का लड़का है तो मैं इसे उत्तम ज्ञान दान दूंगा। अब यह संन्यासी बना है तो ऊँचे दर्जे का ही बने।" ज्ञानगौरव मण्डित वयोवृद्ध राजपण्डित ने तब यह न समझा था कि यह लड़का ही उनका शिक्षक बन जायगा।

दूसरे दिन श्री निमाई का मन लोकाचार के लिए व्यवस्थित था। वे अपने गुरुजन सार्वभौम महाशय के प्रति प्रणाम निवेदन करने के लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुए। वयोवृद्ध राजपण्डित ने बड़ी अनुनयो के साथ कहा : "तुम्हारे संन्यासी वेष को देखते हुए मुझे तुम्हारा पूरा आदर करना चाहिये। फिर भी मुझसे यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि इतनी छोटी आयु में तुम्हें संन्यास लेने का अधिकार क्या था ? आयुष्य के अंतिम चरण में ही मनुष्य को शास्त्रानुसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यास लेना चाहिए।"

श्री निमाई अति विनम्र होकर बोले : "आचार्यवर, इस वेषभूषा के कारण आप मुझे सचमुच संन्यासी न समझ लें। मैं तो कृष्ण के पीछे पागल हो गया हूँ, और इसीलिए यह वेष धारण करके घर से निकल पड़ा हूँ। आपके सम्मुख मैं बच्चा हूँ, मुझे अपने भले-बुरे का ज्ञान नहीं है। जैसे आपके पंडों के प्रहारों से मेरी प्राण-रक्षा की वैसे ही उचित शिक्षा देकर आत्मा की रक्षा भी करें।"

राजपण्डित बड़े प्रेम से एक समय नियत करके श्री निमाई को नित्य प्रति शिक्षा देने लगे। सार्वभौम निस्संदेह महापण्डित थे। उनके व्याख्या करने का ढंग भी मौलिक और अनोखा था। श्री निमाई एकाग्र होकर उनके शब्दों को सुनते थे और शिक्षा का समय पूरा हो जाने पर वयोवृद्ध महापण्डित के चरणों में प्रणाम करके चले जाते थे। आठवें दिन जब नियत समय पर वे राजपण्डित सार्वभौम के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा : "पुत्र, तुमने लगातार सात दिनों तक मुझसे उपनिषदों की व्याख्याएँ सुनीं, किन्तु तुमने एक बार भी मुझसे कोई प्रश्न न किया। तुम अब तक मौन ही रहे हो इसका क्या कारण है?"

श्री निमाई बोले : "आचार्य जी, मैं विद्वान् नहीं हूँ, विद्या में अपनी सूक्ष्म गति का अनुसरण कर पाना मेरे वश की बात नहीं। मैं केवल दो कारणों से अब तक सुनता रहा। एक तो आपने आज्ञा दी थी और दूसरे परम-पावन धर्म-ग्रन्थों को ध्यान से सुनना संन्यासी का कर्त्तव्य है।"

सार्वभौम बोले : "तुम्हें मैंने इस तरह से ज्ञान दिया है जैसे माता अपने पुत्र को पयपान कराती है। तुम्हें भी उसी भाव से मेरे सामने अपनी शंकाएँ रखनी चाहिये थीं। तुम्हारा यह व्यवहार मुझे बड़ा रहस्यमय लग रहा है।" राज-पण्डित के स्वर में कुछ खिन्नता आ गई थी।

श्री निमाई दीन भाव से बोले : "पूज्यवर, आपसे मैं कोई रहस्य छिपाना नहीं चाहता, आप मेरे गुरुजन, आत्मीयजन और लोकबन्द्य महापण्डित हैं। मैं उपनिषदों के मर्म को भली-भाँति समझ चुका था, मेरे मन में कोई शंका न थी, परंतु आपकी व्याख्याओं ने मुझे इतनी बार भ्रम में डाला कि कहाँ तक पूछता।"

राजपण्डित के तेजस्वी मुख पर तेहे की एक तमक और चढ़ गई, किन्तु निमाई वैसे ही सरल स्पष्ट और विनम्र भाव से अपनी बात कहते रहे। उनके अनुसार महापण्डित सार्वभौम सूत्रों के ऐसे अनोखे-अनोखे अर्थ निकालते थे कि उपनिषदकारों का दिया हुआ अर्थ बिलकुल गायब हो जाता था। चैतन्य ने श्रीमद्भागवत के दशम-स्कंध के चौदहवें अध्याय के इकतीसवें श्लोक का हवाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया, फिर गीता के सातवें अध्याय का पाँचवाँ श्लोक बखाना, फिर सार्वभौम की व्याख्याओं से उनकी भ्रांतियों को बखाना और इस प्रकार उनकी बातों को सुनते हुए सार्वभौम पहले तो ठगे से रह गये फिर सावधान होकर उन्होंने निमाई के द्वारा स्थापित द्वैतवाद की आलोचना करना आरम्भ किया। निमाई उनके प्रत्येक प्रश्न और प्रत्येक शंका का ऐसा सुन्दर समाधान करते चलते थे कि सार्वभौम जी के बैठके में बैठे हुए सारे लोग मंत्र-मुग्ध होकर उनका मुख निहारते ही रह गए उन्होंने महापण्डित वासुदेव सार्वभौम जी के द्वारा स्थापित अद्वैतवाद की धज्जियाँ बिखेर कर रख दीं। अन्त में पद्मपुराण के बासठवें अध्याय का इकतीसवाँ श्लोक सुनाते-सुनाते वे सहसा भावावेश में आ गये, 'अये दीन दयार्द्र नाथ'—कहते-कहते उनकी आँखें सावन-भादों सी बरस पड़ीं। कंठ अवरुद्ध हो गया। रोयी हुई आँखें आँसुओं के झरनों के पार कहीं बहुत दूर जा लगीं। उनके शरीर से एक ऐसी कान्ति फूटने लगी कि देखने वाले को लगता था कि वह मनुष्य होते हुए भी मनुष्यों से ऊपर उठे हुए हैं। ऐसा लगता था कि उनकी काया में मानो कोई दैवी शक्ति उतर आयी है। अस्सी वर्ष के बूढ़े महापण्डित वासुदेव सार्वभौम थोड़ी देर तक टकटकी लगाकर श्रीनिमाई को देखते रहे।—"नहीं, उनकी आँखें धोखा नहीं दे रही हैं। यह वही है जिसे वेद, उपनिषद, पुराण, सारा ज्ञान बखानता है।' अब पर्दा कैसा! सार्वभौम उठे और श्रीनिमाई के चरणों में अपना मस्तक नवाकर बड़े भक्तिभाव से उन्हें प्रणाम किया। इसी भक्तिभाव में काव्य की स्फूर्ति पाकर उन्होंने नदिया के अवतार की स्तुति में तुरन्त ही परम सुन्दर गौरांगाष्टक रचकर सुनाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पन्द्रह

वासुदेव सार्वभौम जी के मुख से चैतन्य के गुणगान सुनकर उड़ीसा के परम प्रतापी महाराज प्रताप रुद्र देव उनके दर्शन लाभ करने के लिए व्याकुल हो गये। महाराज प्रताप रुद्र अपने समय के बड़े ही चमत्कारी पुरुष थे। जैसा उनका नाम था वैसा ही उनमें गुण भी थे। सन् १४७८ ई० में प्रताप रुद्र के पिता पुरुषोत्तम देव ने उड़ीसा की राजगद्दी पायी। कांचीपुरम् की एक राजकन्या उनके मन बस गयी थी। उन्होंने महाराज कांचीपुरम् की सेवा में विवाह का प्रस्ताव भेजा किन्तु महाराज ने उसे अस्वीकार कर दिया। कांचीपुरम् के महाराज ने यह कहा कि जगन्नाथ जी के मन्दिर के भंगी से मैं अपनी कन्या का विवाह नहीं करूँगा। बात यह थी कि अपने कुल के रिवाज के अनुसार उड़ीसा के नाथ वर्ष में एक दिन जगन्नाथ के मन्दिर में झाड़ू लगाया करते थे। इस बड़ी बात को छोटी बनाकर लांछित करने वाले कांचीपुरम् नरेश के प्रति महाराज पुरुषोत्तम देव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं अब इसी दम्भी को हराकर इसकी कन्या का विवाह किसी भंगी से ही करूँगा। उन्होंने तुरन्त ही धावा बोल दिया। भीषण युद्ध करने पर भी कांची-पुरम् के लड़वैये पुरुषोत्तम देव की सेना के आगे ठहर न सके। राजकन्या बन्दी बना ली गयी। उसे उड़ीसा की राजधानी जगन्नाथपुरी में लाया गया। महाराज अपनी मनचाही युवती को पाकर भी अपनी उस प्रतिज्ञा से बँध गए थे जो उन्होंने क्रोध में आकर कर डाली थी। बड़े दुःख के साथ उन्होंने अपने मन्त्री से कहा : "इस राजकन्या का विवाह किसी भंगी से करके मेरी प्रतिज्ञा पूरी करो।"

दरबार में मन्त्री समेत सभी को राजकन्या के इस दुर्भाग्य पर दया आ रही थी; साथ ही साथ उन्हें महाराज से भी सहानुभूति थी जो स्वयं अपनी ही प्रतिज्ञा से आबद्ध हो कर अपना दिल तोड़ रहे थे। सब की सलाह से मन्त्री ने राजकन्या को पूरे मान-सम्मान के साथ एक सुरक्षित स्थान में ठहरा दिया। जब रथयात्रा का पावन दिन आया और महाराज पुरुषोत्तम देव सोने की सींकों वाली झाड़ू लेकर मन्दिर बुहारने के लिए गए तो वृद्ध मन्त्री उस राजकन्या को लेकर वहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा पहुँचे। उन्होंने कहा : "आप ही वह भंगी हैं जिन्हें उड़ीसा नरेश की प्रतिज्ञानुसार मैंने इस राजकन्या का पति बनाने का निश्चय किया है।"

सारे पुजारी दरबारी एक मुख होकर मन्त्री की बात का समर्थन करने लगे। महाराज पुरुषोत्तम देव ने सब का कहना स्वीकार किया। ऐसा करके स्वयं उनके मन का एक बहुत भारी बोझ उतर गया। कांचीपुरम् की राजकन्या पद्मावती उनकी वामांगिनी होकर कटक के राजमहलों में पधारीं। राजा प्रताप रुद्र ऐसे अनोखे प्रेमी युगल की एकलौती सन्तान थी। प्रताप रुद्र अनोखे व्यक्तित्वशाली थे। सन् १५०३ ई० में उन्होंने उड़ीसा की राजगद्दी पायी। वे जैसे वीर थे वैसे ही विद्वान्, कुशल प्रशासक और कला मर्मज्ञ भी थे। प्रताप रुद्र कभी तो पण्डितों का मेला लगाकर उनसे शास्त्रालाप किया करते थे और कभी अपने कुशल सेनापतियों के साथ युद्ध की योजनाएं बनाकर दूर-दूर तक धावे मारा करते थे। महाराज प्रताप रुद्र ने सेतु-बन्ध रामेश्वर तक अनेक किलों को मिट्टी के खिलौने साबित करके उजाड़ दिया था। उन्होंने विजयनगर पर भी विजय पायी। दक्षिण के मुसलमानों को भी उन्होंने बार-बार टक्कर देकर ठिकाने से बैठा दिया। बंगाल के पठान सत्ताधीशों ने एक बार अवसर देकर उड़ीसा पर छापा मारा। बेचारा सूबेदार उस मुकाबले में पीछे हटकर भागा और सारंगगढ़ के किले में जाकर शरण ली। आक्रमणकारियों ने बड़े-बड़े अत्याचार किए; बड़े मन्दिर तोड़े। प्रताप रुद्र उस समय दक्षिण में थे। ज्योंही उन्हें यह सूचना मिली त्योंही वे अपने राज्य की ओर लौट पड़े। महीनों का रास्ता दिनों में तय किया और शत्रु सेना पर ऐसे अचानक आकर टूटे कि फिर उससे सम्हलते न बना। अपनी सेना का सत्यानाश कराके बंगाल के पठान हुशैनशाह दुम दबाकर भागे और फिर कभी प्रताप रुद्र से टक्कर लेने का नाम तक न लिया। ऐसे परमप्रतापी महाराज प्रताप रुद्र ने जब श्री निमाई का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने कहला दिया कि मुझे राजा से भला क्या काम। महाराज प्रताप रुद्र यह सुनकर निराश हुए परन्तु उन्हें इस बात की लगन भी लग गई कि हम चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करके ही रहेंगे। उन्होंने श्री निमाई के आस-पास रहने वाले प्रायः सभी लोगों से जोर डलवाया पर श्री निमाई बार-बार ना करते रहे। महाराज के एक मन्त्री रामानन्द राय पण्डित और साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। वे श्री निमाई के पुराने परिचित भी थे। महाराज ने उन्हें भेजा। निमाई ने कहा : "संन्यासी को अपने आचारों-विचारों और वाणी में निर्मल रहना चाहिए। राजा के साथ सम्बन्ध जुड़ जाने से मेरे संस्कारों पर उसका कुछ न कुछ बुरा प्रभाव पड़ सकता है।" फिर भी अपने प्रति प्रताप रुद्र का यह प्रेम और आकर्षण देखकर श्री निमाई ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना उत्तरीय उतार कर रामानन्द को दे दिया और कहा कि अपने राजा को मेरे आशोर्वचनों सहित यह भेंट दे देना।

श्री चैतन्य महाप्रभु की प्रसादी पाकर महाराज का हृदय गद्‌गद हो उठा। बड़े भाव से उन्होंने उस उत्तरीय को सिर से लगाया, आँखों में आँसू भरकर वे बोले—"यह राज-पाट, यह वैभव ही मेरा दुर्भाग्य बन गया। क्या कहूँ!"

रथयात्रा का उत्सव आया तव तक श्री चैतन्य महाप्रभु की धूम मच चुकी थी। वे अधिकतर गौरांग, गौरमोहन महाप्रभु, श्री चैतन्य महाप्रभु आदि नामों से ही अधिक विख्यात हुए। अपने इन विशेषणों में माँ का 'निमाई' और पिता का विश्वम्भर अब प्रायः खो-सा ही गया था। यही नहीं, वरन् दिग्विजयी केशव कश्मीरी को शास्त्रार्थ में पराजित करने वाले नवद्वीप पण्डित कुल मुकुट मणि आचार्य विश्वम्भर मिश्र का यश तक इन नामों के माहात्म्य के आगे खो गया। रथयात्रा के दिन उड़ीसा के महाराज परम्परा से पुरी में ही रहते हैं और मन्दिर में झाड़ू लगाते हैं। परम प्रतापी महाराज प्रताप रुद्र इस समय पुरी में हैं। महाप्रभु भी उपस्थित हैं; सारी खिलकत उनके दर्शन पाकर निहाल हो रही है। एक बेचारा प्रताप रुद्र ही ऐसा अभागा है जिसे उनके दर्शन नहीं मिलते।

चैतन्य महाप्रभु श्री निमाई उन दिनों काशी मिश्र जी के यहाँ रह रहे थे। अपने महाराज की यह दर्शन पिपासा देख कर काशी मिश्र ने एक ऐसे स्थान पर उनके बैठने की व्यवस्था कराई जहाँ से वे अपनी टोली के साथ गली में कीर्तन करते निकलते हुए महाप्रभु को देर तक और अच्छी तरह से देख सकते थे। राजा ने एक हवेली की छत से श्री गौरांग महाप्रभु को संकीर्तन जुलूस में निकलते देखा। महाप्रभु का कीर्तन सुनकर महाराज ऐसे आत्म विभोर हुए कि उनकी बाहरी सुध-बुध ही बिसर गई। उनके मन में, प्राण में, रोम-रोम में महाप्रभु का करुण स्वर गूँजने लगा था। जुलुस के आगे निकल जाने पर कुछ देर बाद मन सावधान होने के बाद महाराज ने अपने पास बैठे हुए गोपीनाथ से कहा: "यह संगीत तो किसी भी प्रकार से लौकिक नहीं कहा जा सकता। हमने जो देखा और जो सुना वह सब दैवी चमत्कार है, अलौकिक है।"

पुरी में संन्यासी निमाई की यह पहली रथयात्रा थी। नदिया से उनकी पुरानी टोली के सारे लोग महाप्रभु के इस नगर कीर्तन में सम्मिलित होने के लिए आये थे। जुलूस निकलते समय गोपीनाथ जी हरएक के संबंध में महाराज को बतलाते रहे पर महाराज की आँखें तो उस समय महारस-सिन्धु में गोते लगा रही थीं। निर्मल भाव से आत्मलीन रहने वाले संतों के मुख पर आम तौर से एक नैसर्गिक तेज आ जाता। अद्वैताचार्य, नित्यानन्द, हरिदास, श्रीवास, मुरारि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे तपे हुए भक्तों के बीच में गौरांग सचमुच ऐसे लगते थे जैसे देवों के बीच में स्वयं नारायण चल रहे हों। हरि संकीर्तन करते-करते महाप्रभु जैसे-जैसे आत्म-विभोर होते चले वैसे-वैसे ही उनकी सुन्दर काया की कान्ति और भी बढ़ती चली। चैतन्य का दर्शन मात्र ही ऐसा सम्मोहक था कि देखने वालों को चलित लोक धरातल से उठाकर एक नयी मन को ताजगी देने वाली दिव्यानुभूति के धरातल पर सहज ही ले जाता था।

अब तो महाराज को यह लगन लग गई कि चाहे मुझे राज-पाट छोड़ना पड़े पर महाप्रभु के चरण स्पर्श करके अपना जन्म अवश्य सार्थक करूँगा। काशी मिश्र के यहाँ नित्य ही महाप्रभु का कीर्तन कार्यक्रम चलता था। वासुदेव सार्व-भौम ने काशी मिश्र से वात साधकर एक दिन महाराज को वहाँ छिपाकर विठला दिया। श्री निमाई कीर्तन करते-करते भाव समाधि में लीन होकर नित्यानंद की गोद में गिर पड़े। कीर्तन मण्डली उसी तरह हरि कीर्तन करती रही। वासुदेव सार्वभौम ने महाराज से कहा कि यही समय है जाकर श्री चरणों में अपना प्रणाम निवेदन कर आइए। अपने चरणों पर प्रताप रुद्र के मस्तक का स्पर्श पाकर महाप्रभु होश में आ गये। उन्हें देखते ही वे बोले—"हे हरि, मुझे लौकिक सत्ता और ऐश्वर्य के प्रतीक ने क्यों छू लिया। मैंने ऐसा क्या पाप किया था?" यह सुनकर महाराज प्रताप रुद्र-फूट-फूटकर रो पड़े। बोले: "महाप्रभु, जो ऐश्वर्य और सत्ता मुझे इन चरणों से विलग करती है उसे मैं इसी क्षण इन्हीं चरणों में अर्पित कर रहा हूँ। आप दीन-से-दीनतम व्यक्ति को जो प्रेम देते हैं वही मुझे चाहिए और कुछ नहीं चाहिए।"

श्री चैतन्य क्षण-भर उन्हें देखते रहे फिर उनके शरीर पर आनंद खेल गया। वे उठे और महाराज को उठाकर आलिगन वद्ध कर लिया। जो राजा पठानों के लिए यमराज के समान भयकारी थे, जिन्होंने धुर दक्षिण तक अपनी शारीरिक और सामरिक शक्ति की धाक जमा रक्खी थी, कोई वड़ा पहलवान भी जिनसे कुश्ती लड़ने का साहस नहीं करता था, वह लम्बा-चौड़ा भीम सा वलिष्ठ और तेजस्वी प्रताप रुद्र महाप्रभु के आलिंगन में बंधा हुआ अपने ही आँसुओं में घुला चला जा रहा था। इस समय वह सचमुच उस राह चलते दीन से दीनतम व्यक्ति की तरह ही था जिसे दीनवन्धु गौरांग सहज भाव से अपने कलेजे से लगाकर दिव्यानंद मग्न कर देते थे। फिर तो यह हालत हो गई कि जब नगर में महाप्रभु कीर्तन करते चलते तो जैसे प्रजा के और लोग जुलूस में होते थे वैसे ही उड़ीसा के महाराज भी उसमें सम्मिलित होते थे। उस समय वे कोई राजचिह्न धारण नहीं करते थे। श्री चैतन्य महाप्रभु का प्रभाव महाराज प्रताप रुद्र पर वैसा ही पड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे कि आग का खरे सोने पर पड़ता है। वह उसे तपा कर और निखार देती है।

एक बार महाराज के मंत्री रामानन्द राय के भाई गोपी राय किसी अपराध के कारण महाराज के द्वारा पकड़वा मँगाये गये। महाराज उनसे इतने अधिक क्रूर थे कि उन्होंने प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी। रामानन्द राय यह जानते थे कि महाप्रभु के सिवा और कोई भी व्यक्ति महाराज से उनके भाई को क्षमादान नहीं दिला सकता। राय महाशय का पूरा परिवार महाप्रभु का भक्त था। अपने दुख के निवारण के लिए राय महाशय श्री चैतन्य के पास आये। सब कुछ सुनकर चैतन्य बोले : "तुम्हारे दुःख से मुझे दुःख हुआ किन्तु अपराधी के लिए मन में सहानुभूति नहीं जाग सकी। गोपीनाथ के लिए गोपीनाथ ही से प्रार्थना करो। मुझ भिखारी से यह भीख माँगकर तुमने मुझे वड़ी विचित्र स्थिति में डाल दिया है। इसीलिए मैं किसी राजा का संग साथ नहीं चाहता था। आज तुम तो कल कोई और आकर मुझे इसी तरह से घेरेगा कि राजा से मेरा अमुक काम करा दो। अब मैं पुरी में नहीं रहूँगा, आलालनाथ में जाकर डेरा डालूंगा।" यह निश्चय करके श्री निमाई ने अपनी मण्डली से चलने की तैयारी करने को कहा।

काशी मिश्र दौड़े-दौड़े महाराज की सेवा में गये। सब कुछ सुनकर महाराज बोले : "बात अब मेरे दरबार से बड़े दरबार में पहुँच गई है। हम गोपी राय को मुक्त करते हैं। महाप्रभु इस कारण से नगर न छोड़ें।" काशी मिश्र प्रसन्न होकर दौड़े-दौड़े श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गये। महाप्रभु यह सुनकर और दुखी हुए, कहा—"तुमने मेरे नाम का प्रभाव डालकर राजा का न्याय बदलवाया, यह ठीक नहीं किया।" राजधानी छोड़ने के प्रति महाप्रभु का निश्चय अब और भी दृढ़ हो गया। और महाराज प्रताप रुद्र को तुरन्त यह सूचना भेजी गई। वे दौड़े-दौड़े आये और चरणों में गिरकर कहा : "यह न करें महाप्रभु, आपके बिना मैं पागल हो जाऊंगा या फिर साधु होकर निकल जाऊंगा। मैं आत्महत्या तक कर सकता हूँ महाराज! मुझे यों अनाथ करके न जायें।"

श्री निमाई उस समय तो वातावरण को स्निग्ध और शान्त बनाने के लिए मान गये। पर कुछ दिनों बाद यात्रा के बहाने वे पुरी से निकल पड़े। आलालनाथ में कुछ दिन रुके, फिर त्रिवंध आये। गोविन्द नामक एक अनुचर उनके साथ था। त्रिवंध में राजा ने उनका बड़ा सत्कार किया। वहाँ के प्रजाजन यों कहने को तो बौद्ध धर्मानुयायी थे पर वैसे धर्म के प्रति उनकी भावनाएँ कुछ बुझी-बुझी थीं। बौद्ध महाधीश ज्ञान, दर्शन और साधना से विरत होकर पतित जीवन विताते थे। त्रिवंध के राजा ने महाप्रभु से अत्यन्त प्रभावित होकर प्रार्थना की : "महाप्रभु,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो चैतन्य आपने मेरे और मेरे परिवार के भीतर जगाया है, वह मेरे प्रजाजनों में भी कृपा करके जगाएँ। एक बार मेरे राज्य में भी आपके पुण्य-प्रताप से सद्धर्म की लहर फैल जाय।"

श्री निमाई तुरन्त सहमत हो गये। नगर के एक विशाल मैदान में प्रजा के लोगों को ढिढोरा पीटकर बुलवाया गया। एक मंच बना। नगर के सभी प्रतिष्ठित बौद्ध धर्माचारी बुलवाए गये। श्री चैतन्य ने उनसे शास्त्रार्थ किया। वे लोग उनके व्यक्तित्व के आगे ठहर न सके। प्रजा अपने धर्म गुरुओं का रहा-सहा विश्वास भी खो बैठी। महाप्रभु के उपदेशों ने, उनके भजन कीर्तन ने प्रजाजनों में एक नवोत्साह भर दिया। विशाल समुदाय ने नई आस्था पाकर वैष्णव धर्म को अपना लिया।

तुंगभद्रा के तट पर धुण्डिराय नाम का एक घमण्डी शास्त्री ने उन्हें शास्त्रार्थ के लिए वार-वार घेरा पर श्री निमाई बोले कि मैं व्यर्थ के वाक्युद्ध में नहीं पड़ सकता। पहले तो वे इसे अपनी विजय मानकर फूले, किन्तु महाप्रभु का आनंद कीर्तन और उनकी दिव्य भाव समाधि के क्षणों को निरख-निरखकर धुण्डिराय जी के कलेजे की सारी धुन्ध मिट गई। कोरी दिमागी ऐयाशी-सा उनका पांडित्य मण्डित गर्व हिमालय-सा गलकर प्रेम गंगा वनने लगा। वे महाप्रभु के अनन्य भक्त वन गये।

ऐसे ही सिद्ध वटेश्वर नामक एक ग्राम में उनकी महिमा सुनकर वहाँ का धनी मानी, विलासी और अपने आपको दुनिया का एकमात्र बुद्धिमान समझने वाला एक व्यक्ति तीर्थराम दो सुन्दरी वेश्याओं—सत्याबाई और लक्ष्मीवाई—के साथ उनकी परीक्षा लेने के लिए जा पहुँचा। सत्याबाई और लक्ष्मीबाई अपने हावभावों और आँखों से काम कला के लटके उछाल-उछाल कर प्रदर्शित करने लगीं। वह लौकिक श्रृङ्गार का संकेत निमाई को भावसमाधि में लीन करने का कारण बन गया। पापी जन एक परम-पावन साधु को अपने रंग में रँगने आये थे सो उल्टे उसी के रंग में रँग गये। तीर्थराम ने अपनी सारी सम्पदा अपनी पत्नी कमला कुमारी को सौंप दी और साधु हो गये। दोनों वेश्याएँ भी फिर मनुष्य को रिझाना छोड़कर राम को रिझाने में दत्तचित्त हुईं। सिद्ध वटेश्वर में गौरांग महाप्रभु ने जंगल का मार्ग पकड़ा। वीस दिनों की यात्रा के वाद वे मुन्ना नामक ग्राम में पहुँचे। वस्ती के वाहर एक पेड़ के नीचे उनका पड़ाव पड़ा। आते-जाते लोगों ने एक दिव्य पुरुष को देखा तो वस्ती में शोर मच गया। झुण्ड के झुण्ड लोग आने लगे। जन जनार्दन को देखकर निमाई ने कीर्तन भजन उद्बोधन का कार्यक्रम चलाया। सब लोग मगन हो गये। दूसरे दिन और भीड़ वढ़ी, तीसरे दिन और। फिर तो दिनो-दिन भीड़ वढ़ने लगी। चैतन्य धनिकों को प्रेरित करके निर्धनों को अन्न, वस्त्र-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और धन दिलवाते थे। समाज में प्रेमभाव उत्पन्न करके अपने कीर्तनों के द्वारा वे जनमानस को एक ऐसे आनन्द धरातल पर उठा ले जाते थे कि हर एक अपने-अपने जीवन में नई दिव्य अनुभूति का अनुभव करने लगता था।

मुन्ना ग्राम से महाप्रभु वेंकट ग्राम में पधारे। वहाँ रामानन्द नामक एक संन्यासी और विद्वान् ने उनसे शास्त्रार्थ किया, और इस वार्ता क्रम में श्री चैतन्य के द्वैतवाद में उसकी आस्था इस प्रकार बढ़ी कि वह वैष्णव हो गया।

वेंकट ग्राम से वे बगुला ग्राम गये। बगुला में निर्मम भील डाकुओं की बस्ती थी। मगर निमाई का प्रेम भी कुछ कम डाकू न था। उन्होंने डाकुओं के दिल लूट लिये। उन्हें हरि भक्त बनाकर वे आगे बढ़े। पत्थर को मोम बनाने की इस प्रक्रिया में वे स्वयं इतने अधिक हरि-सम्मोहित हो उठे थे कि अब उन्हें बार-बार मूर्च्छा आ जाती थी, जल्दी-जल्दी भाव-समाधि लगती थी। उनका आनन्दावेश अधिक गाढ़ा होने लग था। एक जगह तो वे लगातार तीन दिनों तक भाव समाधि में पड़े रहे, न किसी से बोले न चाले, बस आँसू बहाते रहे।

गिरीश्वर में एक बेल वृक्ष के नीचे स्थापित शिव जी के दर्शन करके चैतन्य आनन्द मग्न हो गये; नाचने लगे। वहीं एक मौन व्रती संन्यासी ने उनसे भेंट की। आँखों-आँखों से बातें हुईं और दोनों की काया में समान रूप से तरंगें उठने लगीं। लोग दोनों का मिलन देखते ही रह गये। जनता हर जगह उन्हें घेरती थी। किसी बस्ती में उनके पहुँचने से पहले ही उनका यश पहुँच जाता था। देश काल के मुर्दनी भरे वातावरण में चैतन्य नव-चेतना प्रवाहित करके जनजीवन का वसन्त बन गए। जगह-जगह उनके प्रभाव से कीर्तन होने लगा। इसका ऐसा चलन चला कि बस्तियों-दर-बस्तियों में क्या गरीब क्या अमीर सभी इस रंग में एक से रँग गए।

घूमते-घामते श्री चैतन्य महाप्रभु काँचीपुरम् जा पहुँचे। विष्णुकांची के भयभूति सेठ नामक एक बड़े ही धनी-मानी व्यक्ति ने नगर में पहुँचते ही उनका स्वागत किया। लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में महाप्रभु के सम्मान में एक भव्य आयोजन किया गया। वहाँ कीर्तन, प्रवचन करके महाप्रभु शिवकांची गए। फिर पक्षी तीर्थ, काल तीर्थ, सन्धि तीर्थ, आदि पवित्र तीर्थों के दर्शन करते हुए वे तिरुचिरापल्ली पहुँचे। कावेरी तट पर श्रृगाल भैरवी के दर्शन किए। नगर में राम लक्ष्मण का मन्दिर देखा। यहाँ एक ब्राह्मण उन्हें भंड साधु समझकर मारने आया। जनता ने क्रोध में आकर उसे बहुत दण्डित करना चाहा पर श्री निमाई ने उसे बचा लिया। तञ्जावूर, कुन्ती-कर्ण-पाड़ा, पद्मकोट, त्रिपत्र, श्ररंगम्, रामेश्वर आदि दक्षिण भारत के अनेक स्थानों का महाप्रभु ने भ्रमण किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामेश्वर में 'हरि बोल हरि बोल' कहकर नाचते हुए वे एक अपूर्व उत्साह में आ गये थे। यहाँ माद्विवन में उनकी एक विचित्र योगी से भेंट हुई। वह एक पहाड़ी पर बैठा रहता था, न कुछ खाता था, न कुछ पीता था, न कहीं जाता ही था। घूमते-घामते महाप्रभु कन्याकुमारी जा पहुँचे। वहाँ पश्चिम के तट पर अरब सागर की दूधिया तरंगें उठती हैं और पूर्व के तट पर मरकत-सी हरी-हरी बंगाल की खाड़ी की लहरें लहराती हैं। अन्तरिक्ष तक व्याप्त नील रहस्यमय-सा हिन्द-महासागर जब इन दो समुद्रों से टकराता है तो कुहारों की धुएँ-सी लगने वाली छटा छहराकर ऐसा आत्म-विस्मृतिकारी दृश्य उपस्थित करती है कि औसत सौन्दर्य बोध रखने वाले अर्द्धविकसित अथवा अविकसित चेतनाशील लोग तक मुग्ध हो उठते हैं, कवियों, कलाकारों, ज्ञानियों और योगियों की तो बात ही निराली है चैत्र पूर्णिमा को भारत देश के उस अन्तिम छोर में पश्चिमी समुद्र में डूबता हुआ सूर्य का गोला और पूर्वी समुद्र से उभरता हुआ चन्द्रमा का गोला एक साथ एक सतह पर ऐसे अद्भुत रूप से दृश्यमान होते हैं कि उसकी शोभा नहीं बखानी जा सकती। गिरा अनयन नयन बिनु बानी। वहाँ पहुँचकर नवद्वीप के गौरांग चैतन्य भी अपना आपा खोकर अनन्त सौन्दर्यमय श्री राधा-नागर में लीन हो गए।

कन्याकुमारी से कुछ संन्यासियों के साथ फिर ऊपर की ओर चले। लगभग पन्द्रह कोस का रास्ता नप गया पर कहीं अन्न का एक दाना भी ग्रहण करने को न मिला। और दूसरे लोग तो भूख के आगे भगवान् को भूलकर चिन्ता और चिड़चिड़ाहट में बक-झक तक करने लगे, पर चैनन्य हँसे और बोले—"मेरे मोहन के इतने छोटे से विनोद पर ही खेल गये तुम लोग ? प्रभु का नाम कीर्तन करो। तुम अपना काम करो, हरि अपना काम करेंगे।" यह कहकर श्री निमाई सोत्साह नाचने और कीर्तन करने लगे। उनका उत्साह इतना संक्रामक था कि लोग-बाग अपनी-अपनी बिथा बिसार कर कीर्तन-मग्न होने लगे। आगे बढ़ते हुए कितना रास्ता पार किया यह किसी के ध्यान में ही नहीं आया ! और सचमुच हरि ने भी अपना कार्य किया। एक बड़ा व्यापारी एक जगह सम्भवतः किसी जलाशय या नदी के पास रात के लिए अपना पड़ाव डालकर विश्राम कर रहा था। कीर्तन के स्वर उसे झुमाने लगे। वह यह देखने आया था कि कौन लोग गा रहे हैं पर जब संन्यासियों की टोली देखी और उस टोली के नायक गौरमोहन श्री चैतन्य के दर्शन किए तो उसकी प्रसन्नता का वारापार न रहा। बड़े आग्रह से वह श्री चैतन्य और सारी साधु मण्डली को अपने डेरे पर ले आया। लगभग अड़तीस चालीस घंटों के भूखे संन्यासियों ने छककर भोजन किया और विश्राम पाया। श्री चैतन्य के विश्वास ने उस मंडली के कई साधुओं को सच्चा साधु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बना दिया । रास्ते में वे इतने आनंदमय रहे कि पहाड़ियों का कठिन मार्ग किसी को कष्टकर न लगा । वे तिरुवांकुर पहुँच गये ।

जैसे सूर्य उदय होने पर किसी से नहीं छिपता वैसे ही अपनी राजधानी में श्री चैतन्य के शुभागमन की सूचना वहाँ के राजा रुद्रपति से भी बहुत देर तक छिपी न रह सकी । सारा शहर एक मुँह से यही कह रहा था कि संन्यासी सैकड़ों देखे पर ऐसा एक न देखा । महाराज रुद्रपति स्वयं भी बड़े विद्वान् थे, श्रीमद्-भागवत और भी बहुत सा भागवत साहित्य पढ़ा था, अच्छे पण्डितों का सत्संग करते थे और भक्ति-भाव से भी सुसम्पन्न थे । उन्होंने श्री चैतन्य को बुलाने के लिए कुछ विशिष्ट लोगों को उनकी सेवा में भेजा । चैतन्य बोले : "मैं किसी के यहाँ नहीं जाता ।" राजा रुद्रपति यह उत्तर सुनकर बोले : "मैंने बड़ा अपराध किया जो स्वयं उनकी सेवा में न जाकर उन्हें बुलवाया । मैं अब स्वयं महाप्रभु के चरणों में अपना मस्तक नवाकर अपनी धृष्टता के लिए क्षमा माँगूंगा ।"

राजा की आँखों में पश्चात्ताप के आँसू देखकर निमाई पिघल गये । उन्होंने कहा : "प्रभु के नाम पर आँसू बहाने वाला व्यक्ति तो मुझे प्राणों से भी प्यारा लगता है ।" श्री चैतन्य एक पखवारे तक वहाँ रहे । रामगिरि पर सीताराम के भव्य मंदिर में जाकर वे भावाभिभूत हो गए । राजा रुद्रपति अपनी प्रजा के अन्य जनसाधारण के समान ही बराबर उनकी सेवा में बने रहे । जब वे वहाँ से चले तो राजा प्रजा ने मिलकर उन्हें बड़ी भावभीनी विदाई दी । पयोष्णी शिवनारायण के दर्शन किए । यहाँ एक शांकर मत के विद्वान् उनसे जबरदस्ती भिड़ गये, चैतन्य ने अन्त में उन्हें भी अपनी चेतना प्रदान कर दी । मत्स्यतीर्थ, कचारा, नागपंच-पदी आदि स्थानों पर होते हुए श्री निमाई तुङ्गभद्रा नदी पार करके एक पहाड़ी मार्ग से चले । कावेरी नदी ने वहीं से अपना उद्गम पाया है । फिर सत्यगिरि होते हुए वे चण्डीपुर पहुँचे । वहाँ ईश्वर भारती नामक एक संन्यासी उनसे भिड़ने का प्रयत्न करने लगे परंतु चैतन्य ने अपनी मीठी बातों और दिव्य रूप से आकर्षित कर लिया; फिर क्रमशः उनके द्वैतवाद ने संन्यासी को ऐसा लुभाया कि उन्हें छिन भर के लिए भी चैतन्य का साथ छोड़ना भारी पड़ने लगा । वे कई दिनों तक श्री चैतन्य के साथ ही साथ यात्रा करते रहे । चैतन्य महाप्रभु बहुत-बहुत समझाने-बुझाने के बाद ही उन्हें वापिस लौटा सके । सारी यात्रा में चैतन्य को ऐसे अनेक लोग मिले जो आते तो थे उनके विरोधी बनकर, किन्तु लौटते समय उनके भक्त ही होकर जाते थे । वह समय घोर जड़ता और संत्रास का था । लोक व्यवहार के भावों का वैसा सञ्चापन नहीं रह गया था जैसा कि एक स्वस्थ मानस के समाज में होना चाहिए । ऐसे समय में नदिया के गोराचाँद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को देखना, उनकी बातें सुनना एक ऐसा आनंद देता था जैसा उन्होंने इस सीमा तक पहले किसी भी वस्तु से नहीं पाया था।

चैतन्य को देखते ही हर व्यक्ति अपने अन्दर के जड़ अविश्वास को सहसा विश्वास के रूप में बदलते हुए अनुभव करने लगता था। शीतकाल में ठोस हिम बन जाने वाले मानसरोवर के पिघलने की ऋतु जब आती है तो भीतर से टूटती हुई बर्फ की पर्तों से तरह-तरह की गड़गड़ाहटों भरा नाद गूँजने लगता है। चैतन्य के कीर्तनों को सुन-सुन कर उनकी वाणी का प्रसाद पाकर हर व्यक्ति के मानस सरोवर में वैसी ही हलचल मच उठती थी। हर व्यक्ति अपने आप में यह अनुभव करता था कि अपने नैतिक बोध में वह कुछ ऊपर उठ गया है। श्री निमाई में जगह-जगह की बोलियों-बानियों को बड़ी जल्दी सीख लेने की अद्भुत् प्रतिभा थी। जहाँ कहीं भी वे दो-तीन दिनों से कुछ अधिक ठहर गये वहाँ की जनता को उन्हीं की भाषा में हरिरसाप्लावित करके आगे बढ़ते थे। बाहरी तौर से उनका आत्म-विस्मृतकारी अनोखे बावलेपन भरा रूप, तीव्र भावावेश आने पर उनकी दिव्य कान्तिमय छवि और कभी-कभी सावधान होने पर उनका महापण्डित वाला चमत्कारी प्रतिभाशाली रूप जो देखता वह फिर अविश्वास नहीं कर पाता था और जो न देखता वह सहसा विश्वास नहीं कर पाता था। उन्हें देखने के लिए उत्सुक भीड़ कोसों चलकर उनके यात्रा मार्ग पर पहुँचती थी। यह उत्सुकता और कौतूहल यात्रा भर श्री निमाई के आगे-आगे चलता ही रहा। उनका 'हरि बोल' गली-गली नगर-नगर पहाड़ियों तक गुँजाता हुआ आगे बढ़ता रहा। एक बड़े जंगल को पार करते समय एक जगह कदम्ब के पेड़ों से आच्छादित भूमि भाग आया। यह कदम्ब वन सहज रूप से निमाई के लिए संकेत बन कर कृष्णमय हो गया। जिधर देखते उधर ही श्याम खड़ा दिखलाई देता। अपने भीतर दर्शन की प्यास बुझाने के लिए सदा बावला रहने वाला निमाई महात्मा वह अनन्त छवि-सिन्धु पाकर आनंद-मत्स्य बन गया। कभी इस और कभी उस पेड़ से वे जा लिपटते : "अरे मेरे वंशीधर मनमोहन, अन्ततः मुझे मिल ही गये।" जब जिस पेड़ से जा लिपटते तब उन्हें यथार्थ का बोध होता और मुरली मनोहर छवि आगे के पेड़ों पर वैसे ही हँसती दिखाई देती थी। हार कर गौरांग स्वयं आँसुओं का महासागर बन गये। उनकी करुणा, उनका वह अनोखा दैन्यभाव देखा नहीं जाता था। दो दिनों तक लगातार यही बावलापन उन पर छाया रहा। बेचारा अनुचर गोविन्द घबरा गया कि क्या करें। फिर वे आप ही सम्हल गये। मार्ग भर उस कदम्ब वन में कृष्ण प्रेम का संकीर्तन करते चले। चैतन्य का यह बावलापन दूसरे प्रकार का था। एक प्रकार से उनका मन उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काबू में था और दूसरे तरफ से उनका मन सदा अपने हरि में खोया हुआ रहता था। मन के यह दोनों रूप साथ-साथ वह रहे थे। देखने वालों को लगता था कि उनके साथ नव-वसंत चल रहा है।

चलते-चलते वे महाराष्ट्र पहुँचे। दक्षिण में वे संस्कृत के अलावा प्रायः तमिल बोलकर ही अपना काम चलाते रहे थे। केरल, कर्णाटक आदि जहाँ तहाँ की बोली बानी के कुछ शब्द या कुछ वाक्य पिरोकर जनसाधारण में वे तमिल से ही अपना काम चलाते रहे। अब केवल संस्कृत भाषा ही उनका आधार रही। उसी में स्थानीय भाषाओं के कुछ शब्द और वाक्य मिलाकर वे काम चलाने लगे। पुणे (पूना) नगरी संस्कृत के विद्वानों का एक प्राचीन और प्रधान केन्द्र है। चैतन्य के वहाँ पहुँचने पर पण्डित-समाज ने बड़े भाव से उनका स्वागत किया। गीता और श्रीमद्भागवत जैसे ग्रन्थों से आस्था पाने वाला वैष्णव पंडित वर्ग भी पूना में कुछ कम नहीं था। इसलिए चैतन्य की ख्याति वहाँ चामत्कारिक रूप से फैल गई। श्री चैतन्य महाप्रभु पुणे नगरी के पास एक रम्य बनावटी झील के किनारे एक बकुल वृक्ष के नीचे ठहरे थे। वहीं मजमा जुटता था। चैतन्य का दोहरा व्यक्तित्व, कभी बावला कभी महापण्डित—सब लोगों को अद्भुत रूप से बाँधता था। विद्वान् उनके पांडित्य से और सर्वसाधारण उनके हरि प्रेम से सम्मोहित हो गए थे। ब्राह्मणों में एक दिल्लगीबाज भी थे। जब चैतन्य की कृष्ण प्रेम में डूबी हुई बातें चल रही थीं, वातावरण उनके शब्दों की बेहोशी में खोया हुआ था, तब अचानक खड़े होकर उस मसखरे ने संस्कृत भाषा में कहा : "वे रहे आपके कृष्ण !"

"कहाँ ?" सब भूलकर कृष्ण मतवाले निमाई हड़बड़ा कर पूछने लगे।

दिल्लगीबाज ने झील की तरफ हाथ बढ़ा कर कहा : "वह देखिए, मुझे तो दिखाई दे रहे हैं। आपको नहीं दिखाई देते ?" बावले निमाई के लिए यह चुनौती महा आवेशमयी बन गई। उन्हें झील में झिलमिलाते श्रीकृष्ण दिखलाई पड़े और भावावेश में आकर उन्होंने चबूतरे से झील में छलांग मार दी। पानी में डूबने और फिर उतराने के बाद उन्हें होश नहीं रहा था। पानी में छलांग लगाते ही वे अपने कृष्ण में डूब गये थे और उन्हीं के ध्यान में डूबे हुए थे। उनका शरीर बेबस होकर डूबने उतराने लगा। देखते-ही-देखते पचासों तैराक पानी में पहुँच गए। चैतन्य बड़ी देर बाद अपनी उस मूर्च्छना से जागे। इसी बीच लोगों ने उस दिल्लगीबाज़ को बहुत भला-बुरा कहा। श्री चैतन्य ने जब सुना, तब बोले "उस बेचारे को दोष क्यों देते हो। हरि जल, थल, नभ में सब जगह एक ही है। वह बड़ा भाग्यवान है जो उन्हें देख लेता है। एक मैं अभागा हूँ कि उसके दर्शन की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छा लिए डोलते-डोलते बावला हो गया, पर मेरा श्याम अब भी मुझे पास बुलाकर फिर आप कहीं विलुप्त हो जाता है। पूरी तरह से मन में नहीं रहता। ···क्यों हरि, क्यों नहीं रहते ?'' चैतन्य बड़ी देर तक रोते रहे।

महाराष्ट्र के बाद वे गुजरात पहुँचे। वहाँ अहमदाबाद आदि कई नगर-ग्रामों में घूमते हुए वे द्वारका पहुँचे।

द्वारका में बंगाल के कुलीन ग्राम से आये हुए दो तीर्थयात्री, गोविन्द वसु और रामचरण वसु, महाप्रभु का आगमन सुनकर उनके दर्शनार्थ दौड़ते हुए आए। एक लम्बे अर्से के बाद दो बंगालियों से अपनी मातृ-भाषा में बोल कर महाप्रभु को तो आनन्द हुआ ही पर उनके अनुचर गोविन्द लुहार को तो मानो स्वर्ग ही मिल गया। द्वारका से लौटते समय घोघा ग्राम में रुके। वहाँ पर बड़े सम्पन्न लोग रहते थे। एक बड़ी सुन्दरी, कला और लक्ष्मी से सुसम्पन्न वेश्या औरों के साथ प्रभु के दर्शनार्थ आई। श्री चैतन्य के कीर्तन संगीत ने उस संगीत निपुणा के भीतर छिपे भक्ति-स्रोत को फोड़ दिया। वह अपनी अन्तर्लय पा गई। फिर उसे यह दुनिया न सुहाई, अपना सारा धन-वैभव अपनी दासी को देकर वह वेश्या कान्ह-बावरी होकर एकान्त जीवन बिताने लगी।

गुजरात में सोमनाथ, जूनागढ़, प्रभास क्षेत्र होते हुए मध्य-भारत में अनेक स्थलों का भ्रमण करते हुए वे फिर पुरी क्षेत्र में आ पहुँचे। आलालनाथ पहुँचकर उन्होंने तीन दिनों तक विश्राम किया। पुरी में ठहरे नदियावासी और पुरी के चैतन्य भक्त खबर पाते ही आलालनाथ की ओर धाये। गदाधर, मुरारि और लंगड़े खंजनाचार्य तो ऐसे दौड़ते हुए चले कि देखने वाले देख-देख कर दंग होते थे। सार्वभौम, रामदास, कृष्णदास, हरिदास, जगन्नाथ, देवकीनन्दन, गायक लक्ष्मण, गौरीदास और इनके पीछे-पीछे सैकड़ों गौरांग भक्त महाप्रभु के दर्शनार्थ चल पड़े। नरहरि जुलूस के आगे झण्डा उठाए चल रहे थे। बलरामदास तुरही बजा रहे थे। श्री चैतन्य महाप्रभु को आलालनाथ से जब पुरी में लाया गया तो उनके पीछे अपार भीड़ चल रही थी। काशी मिश्र के घर में एक बार फिर चहल-पहल बढ़ी। महाराज प्रताप रुद्र फिर उनकी चाकरी बजाने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोलह

इस यात्रा के लगभग साढ़े पाँच या पौने छः वर्षों तक महाप्रभु अधिकतर पुरी में ही रहे। वे वृन्दावन जाने को परम उत्सुक थे किन्तु उनके भक्त उन्हें बार-बार रोक लेते थे। पुरी और उसके आसपास के क्षेत्रों में श्रीचैतन्य महाप्रभु का माहात्म्य दिनों-दिन बढ़ता ही जाता था। श्री निमाई श्री कृष्ण के अवतार मान लिये गये थे। परन्तु यह सब होते हुए भी महाप्रभु सन्तुष्ट न थे। उन्हें लगता था कि हरि नाम वितरण अर्थात् वैष्णव धर्म का प्रचार वैसा नहीं हो रहा जैसा कि वे चाहते हैं। इस कार्य में उनके दो प्रमुख सहायक थे, अद्वैताचार्य जी और श्री नित्यानन्द। अद्वैताचार्य जी को उन्होंने गौड़ देश में प्रचार के लिए भेजा, किन्तु नित्यानन्द बार-बार कहने पर भी उनके पास से हटना न चाहते थे। अद्वैताचार्य भरे बुढ़ापे में भी बड़े उत्साह के साथ चाण्डाल से लेकर ब्राह्मणों तक को समान भाव से हरि नाम का प्रसाद वितरण करने लगे। जन-जीवन में नवोल्लास भर गया। फिर भी श्री गौरांग महाप्रभु की मनचाही योजना पूरी नहीं हो पा रही थी। एक दिन निमाई ने महाभावोल्लास में अद्भुत आनन्द नर्तन किया। बाद में निमाई ने निताई से कहा—"श्रीपाद, दुखी जीवों में यह आनन्द भरो, संकीर्ण स्वार्थी न बनो। तुम भी गौड़ जाओ और तन्मय होकर जीवोद्धार के कर्मों में लगो।"

निताई बोले : "ना-ना, मुझसे यह न होगा। यहाँ जो काम बतलाओगे सो करूँगा किन्तु तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।" निताई की यह हठ-मुद्रा देख-कर महाप्रभु चुप हो गए। कुछ दिन बीतने पर उन्होंने फिर नित्यानन्द से कहा : "श्रीपाद, यदि तुम्हीं यों मुँह मोड़ोगे तो बेचारे दीन-दुखी और हर प्रकार से दलित-जनों के जीवन में आस्था क्योंकर उत्पन्न होगी ?"

नित्यानन्द ने अपनी मौज में आकर कह दिया कि मुझसे क्या मतलब, तुम्हारे जीव हैं तुम्हीं उनका उद्धार करो। निताई का यह दो टूक उत्तर सुन-कर निमाई रो पड़े। उनके आँसू देखकर श्री नित्यानन्द के होश ठिकाने आ गए, बोले : "प्रभु, इस प्रकार व्याकुल न हों, नहीं तो मैं जीते जी मर जाऊंगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं अपनी बात वापस लेता हूँ। आप जो कहेंगे वही करूँगा।''

निमाई बोले : मेरी बड़ी इच्छा थी कि मिथ्या ज्ञान के आडंबर से आक्रांत लोक-हृदय में खरा प्रेम और विश्वास जगाऊँ, किन्तु अब मैं यह भली-भाँति जान गया हूँ कि यह कार्य मुझसे भी अधिक अच्छी तरह से तुम कर सकते हो। गौड़ देश की समस्याएँ अति जटिल हैं। वहाँ छात्रों और आचार्यों ने ज्ञान को कागद का गुड्डा बना रखा है। जनसाधारण भले ही पढ़ा-लिखा न हों, किन्तु सच-झूठ का नीर-क्षीर विवेक वह अपने अन्तःकरण से कर सकता है। यदि उसकी अनास्था दिनों-दिन यों ही बढ़ती रही तो वह निश्चय ही एक दिन ऊब कर धर्म परिवर्त्तन की बात सोचने लगेगा। वह और भी बुरा होगा श्रीपाद ! अबोध दुखी जीव को एक अँधेरे से दूसरे अँधेरे में भटकते देखकर क्या तुम्हें सुख मिल सकेगा ?''

श्री नित्यानन्द सिर झुकाए चुपचाप बैठे रहे। श्री निमाई ने उनके हाथ पर हाथ धर कर प्रेम से कहा : ''यों उदासीन होकर न बैठो श्रीपाद, तुम तो मेरे बड़े भाई के समान हो। जाओ, मूर्ख नीच पापी पण्डित, चाण्डाल से लेकर ब्राह्मण तक, सब को प्रेम-दान दो। लोक हृदय मरुभूमि हो गया है उसे अपने आनन्द रस से सींचो।''

निताई निमाई का यह आग्रह देखकर हाथ जोड़ने लगे। दीनभाव से कहा : ''यों दींन होकर मुझसे न बोलो निमाई ! इससे मुझे और भी कष्ट होता है। अरे मैं तो कठपुतली मात्र हूँ, सूत्रधार तुम्हीं हो। जैसे नचाओगे नाचूंगा।''

श्री निमाई ने ठीक ही पहचाना था। उस समय लोक में सद्धर्म का ऐसा प्रचार और कोई नहीं कर सकता था जैसा कि श्री निमाई कर सके। गौरांग के एक अन्य अनन्य भक्त गदाधर के साथ वे उड़ीसा से गौड़ चले आये। पैरों में नूपुर और करों में करताल लेकर मगनमन नाचते हुए निताई गाते चलते थे—

'भज गौरांग, कह गौरांग, लह गौरांग नाम।
जे भजे गौरांग चाँद, शेइ आमार प्रान।'

उसका नृत्य कीर्तन जादू भरा था। अविश्वासी से अविश्वासी व्यक्ति को भी उन्हें देखकर अपना दुराग्रह त्यागना पड़ता था। उनके नाम प्रचार करने के तरीके भी अनोखे थे। राह चलते वे किसी को भी रोककर खड़े हो जाते थे, कहते : ''बोलो, गौरहरि।'' जब तक वह नाम न लेता तब तक वे उसका पीछा न छोड़ते थे। किसी बड़े अफ़सर-ओहदेदार या धनी-मानी को आते देखा तो चट से मुँह में तिनका दबा कर उससे कहने लगे—''मै बिकाऊ हूँ, गौरहरि गौरहरि पुकार कर मुझे कृपा करके खरीद लो।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक वड़े पहलवान को सामने सिर झुका कर उदास जाते देखा तो उससे वोले : "अरे-अरे-अरे, ऐसे उदास क्यों हो रहे हो भैया, अब डर किस बात का ? तुमने सुना नहीं, वह आ गये हैं, वह जो यमराज के भी यम हैं। फिर डर किस का है ? आओ, आओ, यह उदासी छोड़ो, हम तुम नाचते हुए बैकुण्ठ चले।"

श्री नित्यानन्द ने गौड़ देश के दलित वर्ग में देखते ही देखते एक अद्भुत आस्था उत्पन्न कर दी थी। वौद्ध मान्यताओं वाला समाज उस समय आस्थाहीन और अनाथ हो चुका था। वङ्गाल के वौद्ध धर्माचारियों में कोई भी उस समय ऐसे उच्चकोटि का साधक और विद्वान् न था जो चैतन्यमार्गी प्रेमदान करने वाले परमभक्त श्री नित्यानन्द से टक्कर ले सके। रूढ़िवादी वर्णाश्रमियों को भी महात्मा निताई से एक बड़ी शिकायत यह थी कि उन्होंने ऐसों को ऊँचा उठा दिया जिन्हें दवाकर वे अपने को श्रेष्ठ और 'दलितों' का हुजूर माई-वाप समझते थे।

आगे चलकर श्री नित्यानन्द ने संन्यास धर्म छोड़कर श्री चैतन्य के आदेश से गृहस्थाश्रम को अपना लिया। उद्देश्यपूर्ण व्यक्ति के लिए यह बहुत बड़े साहस का काम था, क्योंकि संन्यासी से गृहस्थ हो जाने वाला व्यक्ति उन दिनों तुरन्त ही लोगों की नज़रों से गिर जाता था। किन्तु श्री चैतन्य प्रभु के आदेश पर श्री नित्यानन्द कुछ भी कर सकते थे। निताई ने पहले तो वड़ी आपत्ति की किन्तु निमाई के आग्रह के आगे वह टिक न सके। दलित समाज में गार्हस्थ्य धर्म की महिमा वढ़ाने के लिए श्री निमाई को श्री निताई का गृहस्थ बनना अभीष्ट था। कहा जाता है कि नित्यानन्द ने जव संन्यासी का वेष त्यागकर गृहस्थ का वाना पहना तो वङ्गाल के ब्राह्मणों ने उनके विरुद्ध जहर उगला। कोई ब्राह्मण इस 'धर्म-भ्रष्ट पतित' को अपनी कन्या देने के लिए तैयार न था। यही नहीं, श्री चैतन्य महाप्रभु के पक्षधर पण्डित समाज को डराने-धमकाने के लिए उन्होंने उन सव को वेद विरोधी, सनातन धर्म विरोधी कहकर समाज-च्युत करना आरम्भ किया।

जव चैतन्य महाप्रभु के कानों में ऐसे समाचारों की भनकें तीव्र होकर पड़ने लगीं तो उन्होंने कहा : "हरि भक्तों को इन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जो वेदों के प्रमाण दे देकर हमारी निन्दा करते हैं, वे यह ध्यान नहीं रखते कि प्रमाण-शिरोमणि होकर भी यदि लक्षणा की जाय तो वेदों को स्वतः प्रमाण नहीं कहा जा सकता। ध्यान रखने लायक बात यह कि जो लोग स्वयं विषय-वासना में लिप्त रहते हुए भी भगवद्भक्तों के सात्विक आचरणों में भी अश्लीलता देखते हैं वे झूठे होने से कारण ईश्वर को कभी नहीं जान सकते। भगवद्भक्त श्वपच उस महापण्डित ब्राह्मण से अच्छा है जो दिनरात ज्ञानचर्चा करके भी ईश्वर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वास नहीं रखते। ध्यान रखो, श्रीकृष्ण की कृपा वेद से परतंत्र नहीं है। ईश्वर जाति कुल आदि का विचार नहीं रखते, उन्हें केवल प्रेम ही प्यारा है।''

महाप्रभु की इन बातों के प्रचार से कुटिलों की कुटिलता निकम्मी पड़ गई। कालना के गौरदास सरखेल और सूर्यदास सरखेल नामक दो भाई गौरांग महाप्रभु के बड़े भक्तों में से थे। कुटिल चौधरियों की धमकियों की परवाह न करके वे श्री निमाई को अपना दामाद बनाने का प्रस्ताव लेकर निमाई महाप्रभु के पास आये। सूर्यदेव के दो पुत्रियाँ थीं। एक का नाम वसुधा था, दूसरी का जाह्नवी। इन दोनों बहनों को श्री नित्यानन्द की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गृहस्थ बनने पर, वर्णाश्रमियों के घोर निंदात्मक प्रचार के बावजूद लोकमानस में नित्यानन्द की महिमा यथावत बनी ही रही। गृहस्थ होकर भी श्री निताई और उनके धर्म-प्रचार का प्रभाव पूर्ववत ही बना रहा। यही नहीं, वर्षों बाद, श्री निताई के गोलोकवासी हो जाने पर उनकी विधवा पत्नी जाह्नवी और उनके पुत्र वीरचन्द्र उर्फ वीरभद्र ने बंगाल के वैष्णव समाज की अनन्य सेवा करके वहाँ के इतिहास में अमरपद प्राप्त किया। दलितों को ऊंचा उठाने के क्रान्तिकारी आन्दोलन से श्री चैतन्य का हाथ बंटाने वालों में नित्यानन्द का स्थान सबसे ऊँचा है।

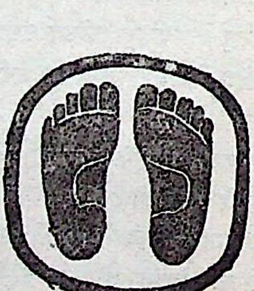

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्रह

श्री निमाई के जीवन से प्रभावित होने वाले उल्लेखनीय जनों में सनातन और रूप नामक दो भाइयों का स्थान भी बहुत ऊँचा है। गौड़ देश के बादशाह हुसैन शाह के मंत्रियों में दो ब्राह्मण भी थे। वे दोनों सगे भाई थे और सुपण्डित थे। उन्होंने स्वाभाविक रूप से दरबारी प्रभाव के कारण मुसलमानी वेशभूषा और रहन-सहन का ढंग अपना लिया था। वे अपने नामों से अधिक अपने सहकारी ओहदों से ही अधिक विख्यात हुए—साकर मल्लिक और दबीर खास। यह सब होते हुए भी संस्कृत काव्य साहित्य मर्मज्ञों में वे अनन्य माने जाते थे। संयोग से रामकेलि नामक एक कस्बे में दोनों भाइयों की श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट हो गई। उन्हें यह अनुभव हुआ कि उन्होंने अपने जीवन में पहली बार एक सच्चे कवि हृदय वाले महापुरुष को देखा है। उन्हें यह भी अनुभव हुआ यह ब्रह्माण्ड एक महाकाव्य है, किन्तु उसमें निहित अनन्त सौन्दर्य को देखने के लिए ऐसी ही छनी हुई आत्मदृष्टि की आवश्यकता है जैसी महाप्रभु के पास है। इस भेंट से दोनों भाइयों की जीवनधारा ही बदल गई। महाप्रभु ने इन भाइयों के नाम भी बदल दिये, एक हो गया सनातन और दूसरा रूप। नव नामकरण करके उन्होंने दोनों भाइयों को उपदेश दिया : "भक्तों को ईश्वर से धन, जन, सुन्दर कविता रचने की प्रतिभा आदि लौकिक वस्तुओं की कामना नहीं करनी चाहिए, उनकी केवल अहैतुकी-भक्ति के लिए ही प्रार्थना करनी चाहिए। धनवान लखपति नहीं होता, लखपति वह मनुष्य होता है जो नित्य एक लाख नाम जप करता है। बहुत से देवी-देवताओं की पूजा करने से फल प्राप्त नहीं होता केवल भगवान् की पूजा ही श्रेयस्कर है।"

श्री चैतन्य से भेंट होने के बाद रूप में विशेष रूप से अद्भुत परिवर्तन होना आरंभ हुआ। वे उस समय केवल सत्ताईस वर्ष के थे। किन्तु उन्होंने यह अनुभव करना आरंभ किया कि वासना से मुक्त हुए बिना वे जीवन के सत्य को कभी न पहचान सकेंगे। सरकार दरबार का काम करते हुए भी वे अब प्रायः इन्हीं विचारों में अधिक लीन रहने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन राज-काज की व्यस्तता-वश रूप जी देर से अपने महलों में पहुँचे। वे अपने ख्यालों में खोये हुए थे। भोजन इत्यादि करने के बाद जब वे विश्राम करने लगे तो कमरे की बत्तियाँ बुझा दी गईं। थोड़ी देर बाद उन्हें लगा किसी जहरीले कीड़े ने उन्हें काट लिया है। उन्होंने अपनी पत्नी से प्रकाश करने को कहा। उनकी पत्नी को जब कुछ न दिखलाई दिया तो चट से अपनी मूल्यवान जरी की साड़ी फाड़कर तुरंत उसकी बत्ती बनाई और उसे जलाकर प्रकाश कर दिया। उपचार आदि हो जाने के बाद रूप ने अपनी पत्नी के कहा : "तुम्हें अपना मूल्यवान वस्त्र फाड़कर नष्ट करने में संकोच नहीं हुआ प्रिये ?"

"संकोच क्यों होता नाथ ? अपने कर्त्तव्यों के पालन करने के हेतु मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु भी साधारण हो जाती है। कर्त्तव्य भावना ही वस्तुतः अमूल्य है।'

सुनकर रूप को लगा कि वे भीतर से सहसा खोखले हो गये हैं; एक निःश्वास ढीलकर वे बोले : "तुमने तो अपने नाथ के प्रति अपना कर्त्तव्य खूब निभाया प्रिये किन्तु मैं अभी तक ऐसा नहीं कर पाया। प्रभु के प्रति अपनी कर्त्तव्य भावना को बिसार कर मैं यह महल, दरबार, राज-काज और मूल्यवान वस्त्राभूषणों के मोह जाल में फँसा हुआ हूँ।"

दूसरे दिन सबेरे रूप जी ने अपने धन वैभव का आधा भाग गरीबों और ब्राह्मण को दान देने के लिए अलग कर दिया। शेष आधे में से एक भाग अपने परिवार के लिए तथा दूसरा अपने बड़े भाई सनानत के लिए लिखकर भिखारी के वेष में वे घर त्याग कर चले गये। उनके संसार त्याग की सूचना उनके घर वालों को यह वसीयतनामा देखकर ही मिल सकी। घर में हाहाकार मच गया। बड़े भाई सनातन यह सुनकर स्तब्ध हो गये। उन्हें लगा कि छोटे भाई ने बड़े भाई से त्याग के मामले में भी बाजी जीत ली।

प्रयाग पहुँचकर रूप ने अपने बड़े भाई की सेवा में यह काव्य पंक्तियाँ रचकर भिजवाईं—

"यदुपतेः क्व गता मथुरापुरी
रघुपतेः क्व गतोत्तरकोशला।
इति विचिन्त्य मनः कुरु सुस्थिरम्
नसदिद जगदित्येव धारय।"

[कहाँ गया यदुपति की मथुरा का वह वैभव और रघुपति की उत्तर कोशला का ऐश्वर्य ! जगत् की क्षणभंगुरता पर सुस्थिर होकर विचार कीजिये फिर यह निश्चय कीजिये कि आपको किस मार्ग पर चलना है।]

सनातन उर्फ साकर मल्लिक अपने छोटे भाई का यह संदेश पाकर मानो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी मुक्ति का मार्ग पा गये। श्री चैतन्य से वे भी कुछ कम प्रभावित न हुए थे और छोटे भाई के संसार त्याग करने पर उनका मन भी संसार से पूरी तरह उचट चुका था। रूप का पत्र पाने के वाद उन्होंने दरबार में जाना छोड दिया। हुसैनशाह को शक हुआ कि कहीं यह भी अपने भाई की तरह ही संन्यासी न हो जाय। वादशाह ने एक आदमी भेजकर साकर मल्लिक के दरवार में न आने का कारण पुछवाया। उन्होंने कहलवा दिया कि तबीयत खराव है। वादशाह ने जाँच के लिए अपने हकीम को भेज दिया। हकीम ने उन्हें कायिक रूप से स्वस्थ पाया और वादशाह को यह बतला भी दिया। वादशाह ने मल्लिक को तुरन्त ही दरबार में उपस्थित होने का आदेश भेजा। सनातन जी अब अपने जी की वात छिपा न सके, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि उनका मन अव संसारी माया से उचट गया है। अब वे वादशाह की सेवा न कर सकेंगे। नाराज होकर हुसैनशाह ने उन्हें बन्दीगृह में डलवा दिया। जेलखाने की कोठरी सनातन पंडित का साधना कक्ष वन गई। कुछ ही दिनों बाद संयोग से वादशाह को कुछ दिनों के लिए अपनी राजधानी से वाहर जाना पड़ा। उनके राज्य के किसी भाग में शत्रुओं ने कुछ उत्पात मचा रखा था। सनातन पण्डित के घर वालों को यह एक सुअवसर मिल गया। बहुत जोड़-तोड़ करके तथा रिश्वत के तौर से पाँच हजार रुपयों की वड़ी राशि कारिन्दों को चटाकर वे सनातन जी को कारामुक्त कराने में सफल हो गये। ऐन समय में जेलखाने का दारोगा फिर कुछ ननुनच करने लगा। तव रिश्वत की यह राशि पाँच हजार से बढ़ाकर सात हजार कर दी गई। पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी में सात हजार रुपयों की राशि मामूली नहीं थी। काराध्यक्ष ललच तो अवश्य गया परन्तु उसे अपने प्राणों का भय भी सता रहा था। उसके लिए भी उसे उपाय बतलाया गया। उसे सुझाया गया कि कह देना, अमुक पर्व के दिन कैदी के वार-वार आग्रह करने पर उसे गंगा स्नान के लिए ले जाया गया था, तभी कैदी डुबकी मारकर नदी के भीतर ही भीतर तैर कर कहीं भाग गया।

मुक्ति होने पर सनातन फिर एक क्षण के लिए भी अपने देश में न ठहरे। उन्होंने तुरन्त ही संन्यासी का वेष धारण करके वहाँ से पयान किया। ईषान् नामक एक सेवक भक्तिवश उनके साथ लग गया। चलते-चलते वे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ भूर्या नामक एक व्यक्ति ने उन्हें अपने घर में आश्रय दिया। दुनिया को पहचानने में परमप्रवीण सनातन जी को भूर्या का आडम्बर युक्त सत्कार देखकर यह लगा कि दाल में जरूर ही कुछ काला है, यह व्यक्ति निश्चय ही किसी लालच से उन्हें आग्रहपूर्वक अपने घर में टिकाये हुए है। उन्होंने ईषान् को अपने पास बुलाकर पूछा—"सच बतलाओ क्या तुम्हारे पास कुछ धन भी है ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईषान् अपने मालिक से अब यह छिपा न सका कि घर से चलते समय वह अपने साथ पन्द्रह स्वर्ण मुद्राएँ भी लाया था। सनातन भूर्या की ठग माया भरे सत्कार को अब भली भाँति समझ गये। उन्होंने उसे बुलवाया और कहा : "मैंने तुम्हें दो व्यक्तियों की व्यर्थ हत्या के पाप से बचा लिया है। लो, यह चौदह स्वर्ण मुद्राएं और अपने मन से कलुषित विचार को निकाल दो।" बाकी बची हुई एक स्वर्ण मुद्रा उन्होंने भूर्या के सामने ही ईषान् को लौटा दी और कहा : "घर लौट जाओ ईषान्। माया तुम्हारे मन को अब भी बाँध रही है। इस एक अशर्फी से तुम्हारी यात्रा के आवश्यक खर्चे पूरे हो जायेंगे।" भूर्या ने सनातन से वहुत-वहुत क्षमा माँगी। वे बोले : "मैंने यदि तुम्हें क्षमा न प्रदान की होती तो इस प्रकार से स्पष्ट होकर तुमसे कुछ कहा भी न होता। सच तो यह है कि तुम्हारे व्यवहार से जागी हुई शंकाओं ने मुझे पूर्ण मुक्ति दिलाने में वड़ी सहायता की है। अब आश्रय के लिए किसी के घर की देहली पर न चढ़ूँगा।"

सनातन फिर बराबर पेड़ों तले ही विश्राम करते रहे। गुदगुदे गद्दों पर सोने वाला राजमन्त्री कँकरीली-पथरीली भूमि पर सहज सुख के साथ सोना सीखने का अभ्यास करने लगा।

एक जगह एक अनुभवी वृद्धा स्त्री ने उनके अभिजात कुल के संस्कारों को उनकी कुछ छोटी-छोटी बातों से ही पहचान लिया। उसने कहा : "तुम जरूर ही किसी वड़े कुल के व्यक्ति हो। संन्यासी होने पर भी तुम्हारे बैठने-उठने में अभी तक वही नवाबी ठसक है।"

सुनते ही सनातन चेत गये। बोले : "माँ, तुमने ठीक ही पहचाना। पुरानी आदतें और संस्कार जल्दी मिटाये नहीं मिटते। फिर भी अब मैं यह प्रयत्न करूँगा कि शीघ्र से शीघ्र इन पुरानी आदतों से भी मुक्त हो जाऊँ। मैं तुम्हारा वड़ा कृतज्ञ हूँ माँ कि तुमने टोककर इस ओर मेरा ध्यान दिला दिया।"

सनातन फिर खूब सतर्क होकर अपने लौकिक आचार-विचारों से जूझने लगे। सर्दी के दिन थे, कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। भ्रमण करते हुए सनातन हाजीपुर नामक एक ग्राम में पहुँच गये। चीथड़ों में लिपटे सनातन तन्मय होकर प्रभु की वन्दना में एक भजन गा रहे थे। संयोग से उनके साले श्रीकण्ठ उधर से निकले। वे सरकारी खज़ाने से तीन लाख रुपये लेकर हुसैनशाह की अश्वशाला के लिए घोड़े खरीदने हाजीपुर आये थे। आवाज पहचान कर वे पास आये और सनातन से लिपट गये। रो कर कहा : "जीजा जी, हाय आपकी इस दशा में भी देखना मेरे भाग्य में वदा था। इस भयंकर सर्दी में आप जिस प्रकार निस्सहाय से बैठे हैं, वह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"चिन्ता न करो श्रीकण्ठ, मैं परम सुखी हूँ। ऐसा सुख मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।"

"जीजा जी, घर लौट चलिये, आपको इस दीन-हीन दशा में देखकर मेरा मन मथा जा रहा है।"

"लौटाने के लिए मैं संसार के द्वार वन्द कर आया हूँ श्रीकण्ठ। अव केवल प्रभु मिलन की आकांक्षा ही शेष है।"

"और कुछ नहीं तो मेरा यह दुशाला ही स्वीकार कीजिए जीजा जी। कम से कम आप इस किटकिटाते हुए जाड़े से कुछ तो अवश्य ही वच सकेंगे।"

"नहीं श्रीकण्ठ, यह मूल्यवान् सामग्री अव मेरे लिए त्याज्य है।"

श्रीकण्ठ सुनकर रोने लगे, कहा : "आपके यह कष्ट सहते देखकर अव मुझे यह मूल्यवान वस्त्र काट रहे हैं। मैं भी इन सबको त्याग कर आपके साथ चलूंगा।"

"पागल न वनो श्रीकण्ठ, तुम मेरे कारण मोहवश संन्यास लोगे, इसलिये उसका सुफल तुम्हें कभी प्राप्त न होगा। यह सच्चा संन्यास धर्म तुमसे कभी सध न पायेगा।"

सुखिया श्रीकण्ठ जानते थे कि वह कभी ऐसे तपस्वी नहीं बन सकेंगे। फिर भी उन्होंने अपना हठ न छोड़ा। श्रीकंठ का मान रखने के लिये सनातन जी ने तीन रुपये का एक मामूली मोटा कम्वल ओढ़ना स्वीकार कर लिया। श्रीकण्ठ बराबर अपने जीजा के पास ही बने रहे। सनातन ने इस माया वन्धन को तोड़ने का निश्चय कर लिया। रात में सबके सो जाने पर सनातन उठकर चल दिये।

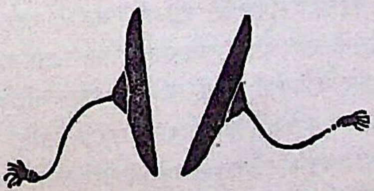

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अट्ठारह

जगाई-माधाई और अब रूप तथा सनातन जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों के संन्यास ग्रहण करने से आभिजात्य वर्ग में एक तहलका मच गया। बँधे सड़े मैले पानो को मानो किसी ने मथ दिया; हलचल हुई। पानी का मैल छँटा, उसमें नये सिर से प्राण संचार होने लगा। कुंठित संत्रस्त और विकृतियों से गतिशील समाज में अब तक जहाँ यह निष्क्रिय विश्वास जमा हुआ था कि हम अब नैतिक रूप से कभी उठ नहीं सकेंगे। इस मान्यता की आड़ में समाज का प्रतिष्ठित वर्ग दिनो-दिन पतित और स्वार्थी होता जा रहा था। जब जगाई-माधाई जैसे सम्पन्न सत्ताधारी कुलीन ब्राह्मण अपने समाज के प्रति मद्यपी और व्यभिचारी होकर आयेंगे, प्रजा को पीड़ा पहुँचाने वाली राजसत्ता के दलाल बनकर समाज को लूटेंगे, रूप और सनातन उसे संस्कारी पण्डित और सुकवि विजेता शासक के चाकर बनकर उसके आगे दिन-रात सलामें झुकायेंगे, तो उसका प्रभाव क्योंकर भला पड़ सकता है। पराधीनों के समाज में जब दस-पाँच अवसरवादी चतुर चाँईं लोग विजेता प्रभुओं के तलवे चाटकर अगर बड़े भी बन गये तो उनका बड़प्पन अपने समाज के किसी काम नहीं आता। वह समझते हैं कि लोग हमसे जलते हैं इसलिए बुरा मानते हैं, पर हकीकत यह है कि उनका बड़प्पन समाज का नैतिकता में गिरावट लाता है। औसत व्यक्ति आमतौर से कायर तो नहीं पर सुविचारक नहीं होता, इसलिए नैतिकता के क्षेत्र में अपने आप पहल करके आगे बढ़ने का हौसला उसमें नहीं रहता। फिर भी वह यह अवश्य चाहता है कि उसे ऐसा करने की प्रेरणा मिलती रहे। श्री चैतन्य तत्कालीन पराधीन समाज के लिए ऐसी ही प्रेरक शक्ति के रूप में अवतरित हुए थे। उनका अलौकिक विरह लोक की पीड़ा को भी अपने में समेट कर चलता था। उनका 'हरि' घट-घट व्यापी था; वे फिर अपने हरि को भला यों पीड़ाकुल क्योंकर छोड़ सकते थे। इसलिए नित्यानंद को पाने के बाद उन्होंने अपने कीर्तन को जन-आंदोलन का रूप दे दिया था। विजेता शासक के डर के मारे जहाँ मुँह से बोल नहीं फूटते थे वहीं 'हरि बोल हरि बोल' से गलियाँ गूँज उठीं। घुंघरू झाँझ मृदंग करताल शंखनाद से दिग्-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिगंत गुँजरित हो उठा। लोगों को ऐसा लगा कि हाँ, हममें भी साहस है, हम अपनी आस्था को घोषित करके उस पर सगर्व और सानन्द टिके रह सकते हैं। बड़े लोगों में चैतन्य की कृपा से अब फिर से गई चेतना लौट रही है। चाबुक की फटकारों पर उठने-बैठने वाले पालतू शेरों को लगा कि अपना नैसर्गिक धर्म भूलने के कारण ही उनका यह मानसिक पतन हुआ है। ज्ञान के जो शब्द अब तक निरर्थक हो चुके थे, वे पण्डितों के मन में फिर से सार्थक होने लगे। पूरे समाज में हलचल हुई; मुर्दों में जान आई।

उधर नित्यानन्द, हरिदास और अद्वैताचार्य जी आदि चैतन्य मण्डल के प्रमुख भक्त अपने प्रभु की आज्ञा से दलितोद्धार के काम में लगे गाँव-गाँव डोल रहे थे। इन सब बातों से बंगाल में फिर से नई जान पड़ी थी। जन-जन में श्री चैतन्य महाप्रभु के झूठे सच्चे चामत्कारिक किस्से भरे हुए थे कि प्रतापी हुसैनशाह जैसे पठान शासक भी उनका दलन करने से घबराते हैं; धुर दक्षिण रामेश्वरम् तक जिसकी तलवार की धाक बँधी हुई थी, वह विक्रमादित्य का अवतार, उड़ीसा नरेश प्रताप रुद्र अपने आप को 'गौरहरि' की चरणधूल मानकर उनकी आज्ञा से अपनी हीनतम प्रजा की सेवा करता है। यह सब बातें आस्था की खोज में भटकने वाले दलित दीन प्राणियों के लिए सचमुच चामत्कारिक थीं।

एक बार वे पुरी से चलकर शांतिपुर ग्राम में अद्वैताचार्य जी के यहाँ पहुँचे। उनके आगमन का समाचार उड़ते-उड़ते प्रायः उसी समय सभी जगह पहुँच गया था जब वे पुरी से चले थे। रास्ते भर भक्तों की भीड़ ही भीड़ मिलती रही। महाप्रभु जब शांतिपुर पहुँचे तो वहाँ केवल शांतिपुर वासी ही नहीं, वरन् नदिया वासी भी उनके स्वागतार्थ आकुल-व्याकुल से खड़े थे। उन्हें देखते ही 'जय गौर-हरि' के निनाद से दिग्दिगंत गूँजने लगा। वीतराग संन्यासी को शांतिपुर नदिया के नागरिकों ने अपने प्रेमसागर में समा लिया था। नदिया के निमाई अपनी भूमि का प्रेम पाकर आनन्द से उभ-चुभ हो गये। यह सरल और परम सात्विक प्रेम उनके लिए साक्षात कृष्ण रूप ही था। जब उन्होंने अद्वैताचार्य जी के घर में प्रवेश किया तो देखा कि सामने यशोदा मैया खड़ी हैं। शची माँ को देखते ही 'गौरहरि, गोराचाँद श्री श्री चैतन्य महाप्रभु' केवल निमाई ही रह गये। संन्यासी होने के बाद जन्म देने वाले माता-पिता से मनुष्य का रिश्ता समाप्त हो जाता है। इस समय निमाई यदि किसी के बेटे थे तो संन्यासी केशव भारती के, उन्होंने ही उन्हें दीक्षा दी थी, पर यह सारे बन्धन चैतन्य ऐसे संन्यासी के लिए कभी जड़ न हो सके। वीतराग होकर भी प्रेम के पुजारी थे। माँ को देखते ही निमाई नन्हा सा बालक हो गया और उनसे जा लिपटा। बूढ़ी माँ अपने बेटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को देखती ही रह गई। जन-जन का भगवान् उसके लिए तो कोख-जाया बेटा ही था। वह भाव भला उसके मन से क्योंकर जा सकता था। बेटे के चेहरे पर, उसके सारे शरीर पर एक दिव्य कान्ति सी चमक रही है, माँ का निमाई वही का वही होकर भी आत्मतेज से निखरकर कुछ और ही लग रहा है। वह लौकिक होकर भी अलौकिक है। माँ बार-बार बेटे का मुख निरखती है तो यह सब भाव आते हैं, पर इन सबके ऊपर भी माँ के लिए सत्य यही है कि वह बेटा है। एक बार माँ से लिपटकर फिर जब वे विधिवत् उठकर उनकी प्रदक्षिणा करके प्रणाम करने लगे तो शची माँ एकाएक बोलीं : "बेटा, तू जो अब संन्यासी होकर मुझे प्रणाम करता है तो मुझे यह लगता है कि मैं उसे स्वीकार करके पाप कर रही हूँ। फिर सोचती हूँ कि तू भला ऐसा कोई काम क्यों करेगा जिससे कि मुझे पाप लगे।"

चैतन्य बोले : "जिसे प्रणाम करके मैं अपना जन्म सार्थक करता हूँ उसे भला पातक क्यों लगेगा माँ ?"

शची माँ ने खींचकर अपने लाल को छाती से लगा लिया। उनका जी भर आया। रोती जायँ, बेटे के सिर पर हाथ फेरती जायँ और फिर भाव-भरे शब्दों में बडबड़ाती जायँ : "मेरा बेटा स्वयं भगवान् है, और तब भी मैं निर्बुद्धि की निर्बुद्धि हो रही। मन से यह बात जाती ही नहीं कि तू मेरा निमाई है। मैंने तुझे अपना दूध पिला कर उछेरा है।"

उस दिन अद्वैताचार्य जी के घर आनंद बरस रहा था। निकट के लोग माँ बेटे के इस मिलन को देखकर अपना भाग्य सराह रहे थे। बेटे ने जब माँ के लाड़ लड़ाये तो माँ भी उसका भगवद् रूप बिसार कर मोहवश अपने दुख से भरकर शिकायती बन गई। अपने रोष में बेटे को झिड़क कर कहा : "अरे जा, बेकार को माँ-माँ करता है। जो ऐसा ही माँ का हेत होता तो तू घर छोड़कर जाता भला ? तू पितृहीन बालक, मैंने तुझे इसीलिए इतने जतन से पढ़ाया-लिखाया कि तेरे मन में यह कचोट न रह जाय कि बाबा होते तो यह पढ़ता और वह पढ़ता। बड़े घर की बेटी रूपवती गुणवती साक्षात् देवी सी कन्या से तेरा ब्याह रचाया। मैंने हर तरह से तुझे सुखी बनाने के लिए अपने तन-मन को खपाया और तू निर्मोही बुढ़ापे में मेरे गले में उस बिचारी बहू को फाँसी सा डाल कर, आप भगवान् का होकर घर से निकल गया ! मैंने तुझे जनम दिया था तो उसका दंड देने के लिए तू भले ही मुझे छोड़ देता, पर उस बेचारी पराये घर की बेटी ने क्या बिगाड़ा था जो उसे रुलाकर चला गया ?"

महाप्रभु सिर झुकाये चुप बैठे रहे। और माँ अपने बेटे को पाकर बहुत दिनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भरे अपने मन के गुबार निकालती रहीं। बड़ी देर तक जो मन में आया बेटे को सुनाती रहीं और फिर कहा : "घर चल, मैं तुझे लेने आई हूँ। तेरी ये डोर कोपीन अब मैं अधिक न सहूँगी। मैं अपने लाल को फिर से घर ले जाऊँगी।" कहकर वे फिर अपने बेटे का मस्तक चूमने लगीं। उनकी आँखें फिर बह चलीं।

भक्तगण माँ बेटे के मिलन दृश्य देखते हुए आँसू बहा रहे थे। जब माँ अपने पुत्र से घर ही में रहने का आग्रह करतीं तो भक्त लोग सोचते कि श्री निमाई माँ को सान्त्वना देने के लिए निश्चय ही हाँ कहेंगे; परन्तु श्री निमाई चुपचाप सुनते ही बैठे रहे। अपने जी के उबालों को निकाल-निकाल कर शची माँ जब कुछ शांत हुईं तो निमाई बोले—"माँ, मैंने अपनी अन्तर्प्रेरणावश संन्यास अवश्य लिया, पर तुम्हारे सुख-दुख का ध्यान मुझे निरन्तर बना ही रहता है। देखो माँ, मैं वृन्दावन जाने के लिए पुरी से निकला था पर उसमें कुछ ऐसा विघ्न पड़ा कि मैं तुम्हारे दर्शन करने के लिये इधर चला आया। संन्यासी होकर भी अपनी इस काया पर अपना अधिकार नहीं मानता, इसे तुमने जन्म दिया है अतः तुम्हारी आज्ञानुसार ही कार्य करूंगा। परन्तु तुम एक बार स्वस्थ मन से सब बातों पर विचार कर लो; थोड़ा शान्त होकर सब बातों का उचित निर्णय करो, फिर जो कहोगी सो करूँगा।"

माँ आँसू पोछते हुए उठीं। श्री अद्वैताचार्य जी की पत्नी सीतादेवी कुछ दूर पर खड़ी माँ बेटे को ओर देख रही थीं। वे आयु में लगभग शची माँ के बराबर ही थीं। उनके उठकर आने पर सीतादेवी ने तुरंत ही अपने कलेजे से लगा लिया और कहा : "अब तुम स्वस्थ होकर बैठो दीदी, जो कुछ हुआ या हो रहा है वह सब श्रीहरि की इच्छा से ही हो रहा है।" कहकर उनका हाथ पकड़ कर वे घर के भीतर ले गईं। चलते-चलते अचानक माँ ने कहा, "आज मैं रसोई बनाऊँगी। बहुत दिनों से मेरे निमाई ने मेरे हाथ का भोजन नहीं किया। माँ की यह बात सुनकर सीतादेवी तथा घर की अन्य स्त्रियों की आँखों में आँसू आ गये। माँ के रसोई बनाने पर किसी को भी आपत्ति न थी। सब जानती थीं कि श्री श्री चैतन्य महाप्रभु को रुचिकर लगने वाले व्यञ्जन शची माँ ही प्रस्तुत कर सकेंगी।

बाहर श्री निमाई अपने भक्तों से घिरे हुए आनन्द से हरि चर्चा कर रहे थे। भक्तों में अपार उत्साह उमड़ पड़ा था। जैसे-जैसे समय बीतने लगा वैसे-वैसे ही आसपास के गाँवों और बस्तियों से दर्शनार्थियों की भीड़ शांतिपुर की ओर बढ़ने लगी थी। नदिया में गली-गली बातें होती थीं। नौकरों-चाकरों अथवा घर में आने-जाने वाले व्यक्तियों से श्री गौरहरि की नई-नई सूचनाएँ पाकर सौभाग्यवती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णुप्रिया जी मन ही मन में तड़प उठी थीं। सासु जी तो शान्तिपुर चली गईं पर वे भला घर छोड़कर कैसे जा सकती थीं। पति जब इतने पास आ गये हैं तब भी क्या वे उनसे न मिल सकेंगी। मेरे प्रभु क्या मेरे प्रति निष्ठुर ही बने रहेंगे। नहीं, वे तो प्रेम के अवतार हैं। उन्होंने कभी मुझे इतना प्रेम दिया है कि विश्वास नहीं होता कि अब वे मुझसे यों मुँह मोड़ लेंगे। कई दिनों तक आठों पहर मन में तरह-तरह की बातें उठतीं और घुमड़ती रहीं। फिर विष्णु-प्रिया जी से रहा न गया। पति संन्यासी हुए तो क्या पत्नी अपने मन की व्यथा उनसे अवश्य कहेगी पर कैसे कहे। जब-जब कागज पर बात उतारने बैठीं तब-तब उनके आँसू उमड़ पड़े। बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर उन्होंने पाती लिखीं—"प्राणधन, जब से तुमने घर छोड़ा है, माँ बहुत दुखी रहती हैं। उनके दिन उपवास कर-कर के ही बीतते हैं। मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं उन्हें किस प्रकार से सन्तोष दूं। फिर भी विश्वास मानो अपनी ओर से उनके प्रति अधिकाधिक सतर्क रहने का प्रयत्न करती हूँ। मालिनी ठकुराइन सदा माँ के पास ही बनी रहती है। मुझे तो देखते ही उनका कलेजा भर-भर आता है इस-लिए जहाँ तक बनता है मैं ओट में रहकर ही उनकी सेवा करती हूँ। एक बार पिताजी मुझे बिदा कराने के लिये आये थे, उनसे कह दिया कि माँ को छोड़कर मैं कहीं नहीं जा सकती। अपनी ओर से तो मैं भरसक प्रयत्न करती रहती हूँ कि मुझसे कोई ऐसी चूक न हो जिससे कि तुम्हारे सुनाम पर तनिक सा भी कलंक लगे। पर अज्ञानवश यह नहीं जानती कि संन्यासी की पत्नी को किस प्रकार के नियमों का पालन करना चाहिए। एक बार यदि तुम आकर मुझे सब कुछ समझा जाते तो भला होता, मैं तुम्हारे किसी भी नियम बन्धन में बाधा नहीं डालूंगी। बस, एक बार तुम्हें जी भरकर देख लूं तो मेरे मन को चैन आ जाएगा।"

श्रीमती विष्णुप्रिया के दिन बड़े ही कठिन बीत रहे थे। जब तक घर सास थीं तब तक तो वे सामाजिक शिष्टाचारवश अपने मन पर अंकुश भी रख लेती थीं परन्तु इस समय माँ घर में नहीं हैं और प्रिया जी के प्राणधन दूर होकर भी बहुत पास आ गये हैं, इसलिए अपने मन की छटपटाहट को वह रोक नहीं पातीं। उन्हें बार-बार मूर्च्छा आने लगी। दास-दासियाँ और आत्मीय जन उनकी दशा देखकर व्याकुल हो उठे। पर सभी असहाय थे। अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती विष्णुप्रिया जी के दुःख का भार हलका करने का उपाय किसी के पास नहीं था।

प्रिया जी का पत्र महाप्रभु को मिला। उन्होंने उसे पढ़ा पर उत्तर न दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उधर माँ हठ ठाने बैठी थीं कि बेटे को घर ले जायेंगी। और बेटा परम चैतन्य महाप्रभु होने पर भी अपनी माँ से पार नहीं पा रहा था। बेटा तरह-तरह से अपनी माँ को समझाता—"माँ तुम जो कहोगी मैं वही करूँगा किंतु तुम आचार्य कुल की सिरमौर्य हो, तुम्हें भली-भाँति अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विचार करके ही मुझे आज्ञा देनी चाहिए।"

पुत्र की इस बात को माँ का हठ प्रबल होकर भी काट नहीं पाता था। वे जानती थीं कि संन्यासी का धर्म क्या होता है। वे जानती थीं कि संन्यासी हो जाने के बाद मनुष्य गार्हस्थ्य धर्म की ओर फिर नहीं लौटता। उसका ऐसा करना शास्त्रों के द्वारा वर्जित और घोर लोक-निन्दा का कारण बनता है। तब फिर माँ मोहवश क्या अपने बेटे का भविष्य बिगाड़े ? नहीं, माँ ऐसा नहीं कर सकती। बेटे को जैसे सुख मिले वैसा करना ही माँ का धर्म है।"

पत्नी केवल विनय करके ही रह गई; माँ अपने हठ और विवेक की खींच-तान में बार-बार इधर से उधर खिचकर, अपने ही भीतर तरह-तरह से उमड़-घुमड़ कर रह गईं; और श्री चैतन्य इस सबसे वीतराग होकर अपने कृष्ण में लीन रहे। उनके नदिया जाने की नौबत न आई। माँ कलेजे पर पत्थर रखकर बेटे को इच्छा मत अपना जीवन यापन करने की आज्ञा दे देती है। इतना देख लिया, इतने दिनों अपने हाथ से तरह-तरह के व्यंजन बनाकर बेटे को खिला लिये, अपने जी में घुटती बातें उसके आगे खोलकर कह लीं, बस इतना ही बहुत है। शची माँ का निमाई अब सारे जगत् का प्रेमाधार है, वे उसे कदापि नहीं रोक सकतीं। श्री चैतन्य शान्तिपुर से विदा लेते हैं। इस बार भक्तों की आँखें बरस रही हैं, पर माँ की आँखों में एक बूंद भी आँसू नहीं है।

नदिया में अपने प्राणपति के घर की स्वामिनी बनी बैठी अखंड सौभाग्यवती विष्णुप्रिया अपने पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में बार-बार घर के द्वारे की ओर देखने जातीं, बाट देखती खड़ी रह जातीं···एक दिन माँ आ गईं पर जिनकी आस थी वह न आए। इतने पास आकर भी फिर चले गये। प्रिया अपने प्रिय से मिल न सकीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्नीस

श्री श्री चैतन्य महाप्रभु कई वर्षों से टलती आ रही वृन्दावन धाम की यात्रा के लिए निकल पड़े। शान्तिपुर से लौटकर वे फिर पुरी वापस आए और कुछ ही दिनों बाद अचानक यह घोषणा की कि मैं अकेले ही वृन्दावन जा रहा हूँ।

भक्तों में तहलका मच गया। कोई भक्त अपने भागवन् को इतनी लम्बी यात्रा भला अकेले क्यों करके दे सकता था। पर निमाई भगवान् तो मानो अपने निश्चय पर अटल हो गये थे, उन्होंने कहा : "सुख्यात माधवेन्द्र पुरी महाराज तो अकेले ही गए थे। शुद्ध हृदय से उन्होंने सारी कठिनाइयों को झेला था। और मैं अपने भगवान् के दर्शन करने जाऊँगा तो क्या राजा की तरह फौज फाटा लेकर जाऊंगा ? छि:-छि: मुझसे यह कभी नहीं होगा, मैं अकेले ही जाऊँगा।"

रात में श्री निमाई अकेले ही यात्रा के लिए निकल पड़े। अपने भक्तों की विशाल भीड़ से वचकर निकलने का यही एक मात्र उपाय था। फिर भी उन्हें विदाई देने के लिए उनके निकटतम भक्तों की छोटी-सी भीड़ साथ चली। श्री निमाई ने एक सीमा से अधिक उन्हें भो अपने साथ न चलने दिया। उड़ीसा नरेश के मंत्री रामानन्द राय महाशय ने उनसे फिर सविनय निवेदन किया : "प्रभु, एक रसोइया अपने साथ अवश्य ले जायँ।"

"नहीं। यदि एक को ले जाऊँ तो दूसरा बुरा मानेगा। मेरे लिए सभी समान हैं। अब मुझसे इस प्रकार का आग्रह न करना रामानन्द।" रामानन्द सिर झुकाकर चुप हो रहे। सब ने उन्हें आँसुओं भरी आँखों से निहारकर विदाई दी। कुछ दूर आगे जाने पर श्री चैतन्य को लोटा-डोर साथ लिए बलदेव भट्टाचार्य दिखलाई दिए। वे श्री निमाई की कोर्तन मण्डली में प्राय: नित्य ही सम्मिलित हुआ करते थे। जब उन्होंने प्रभु को प्रणाम किया, तो वे चौंके, पूछा : "अरे बलदेव, तुम यहाँ कैसे ?"

"एक बार मथुरा, वृन्दावन के दर्शन कर आया हूँ न प्रभु, इसोलिए आपकी छत्रछाया में दूसरी बार वहाँ जाने का लोभ छोड़ न पाया।" महाप्रभु अपने भक्त की चाल समझ गए परन्तु इस बार उन्होंने कोई आपत्ति न की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर-भारत की यात्रा उस समय निरापद न थी। लुटेरों-बटमारों की टोलियाँ बेपनाह बढ़ गई थीं। अक्सर छोटे-मोटे सरकारी खजाने तक लुट जाया करते थे। रोज के हमले-हल्लों के कारण भी यात्रियों को बड़े कष्ट झेलने पड़ जाते थे। छोटी-छोटी रियासतों में इस प्रकार का अशांतिमय वातावरण बराबर बने रहने से मार्गों की अस्तव्यस्तता इतनी बढ़ गई थी कि गृहस्थ तो गृहस्थ साधु वैरागी भी उन राहों पर चलते सहमते थे। परंतु चैतन्य इन सब चिंताओं से मुक्त होकर बराबर आगे बढ़ते चले। उन्होंने झारखंड क्षेत्र के जंगलों को पार किया और राह के गाँवों और बस्तियों से गुज़रते, नाम संकीर्तन करते हुए वे बढ़ते चले। कोई उन्हें पागल समझता और कोई ढोंगी। कहीं-कहीं बस्तियों में बुरे लोग उन पर ढेले भी बरसा दिया करते थे। निमाई के लिए सुख-दुख एक समान था। सज्जनों और दुर्जनों में व्यवहार में उनके लिए हर्ष और विषाद का भेद ही मिट गया था। मनुष्य रूप में स्वयं श्रीहरि लीला कर रहे थे। होते करते वे बनारस पहुँच गये। काशी में वे तपन मिश्र के घर ठहरे। यह स्थान मणिकर्णिका घाट के समीप था। तपन मिश्र के दोनों बेटे रघु और चन्द्रशेखर वैद्य श्री निमाई के परम भक्त और सेवक बन गए।

काशी उन दिनों संन्यासियों का गढ़ था। गली-गली में 'ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या' की चर्चा ही चला करती थी। उपनिषद् ज्ञान की बड़ी-बड़ी पंडिताऊ बातों में बाबा विश्वनाथ की नगरी उलझी हुई थी। भक्तों की बड़ी बेकदरी थी। संन्यासी भक्तमार्गियों की भावुकता का मज़ाक उड़ाया करते थे। श्री निमाई को ऐसे व्यक्तियों से मिलने में कदापि सुख नहीं मिल सकता था। इसलिए वे इन सबसे अलग ही रहा करते थे। संयोग से एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण को श्री निमाई से कुछ देर बातें करने का अवसर प्राप्त हो गया। महाप्रभु की बातों, उनकी तर्क-पद्धति और उनके व्यवहार को देखकर वह ब्राह्मण अत्यधिक प्रभावित हुआ। उन दिनों काशी के संन्यासियों में स्वामी प्रकाशानन्द जी महाराज की बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके तप, तेज और पांडित्य के आगे सभी अपना मस्तक झुकाते थे। महाराष्ट्रीय ब्राह्मण ने एक दिन प्रकाशानन्द जी से कहा : 'स्वामी जी, आजकल काशी में पुरी से पधारे हुए एक विलक्षण संन्यासी उपस्थित हैं। उनका-सा रूप और तेज इस लोक में प्राय: देखने को नहीं मिलता। गंगातट पर बैठे हुए उन हरि विरही महात्मा को देख-देखकर मुझे ऐसा लगा मानो उनके आँसुओं में मेरे अन्तर के सारे कलुष धुलते ही चले जा रहे हैं। वे साक्षात् परमात्मा के औतार हैं। मैं उनके दर्शन करके तथा थोड़ी बहुत बातें करने का अवसर पाकर अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशानन्द जी सुनकर मुस्कराए, कहा : "हाँ, मुझसे पहले भी यह कहा जा चुका है। मैंने सुना है कि उसने अद्वैताचार्य और वासुदेव सार्वभौम जैसे महापण्डितों को भी जादू-टोने से अपने वश में करके गौड़ और उड़ीसा में अपनी वड़ी महिमा फैला रखी है, किन्तु काशी के लोग ऐसे पागलों के फेर में नहीं पड़ा करते।"

प्रकाशानन्द जी की बातें उस महाराष्ट्रीय सत्पुरुष को अच्छी नहीं लगीं, परन्तु वह विवश था। प्रकाशानंद काशी के पण्डितों और साधुओं के सिरमौर थे। जिधर से वह मुँह फेर लें उधर फिर काशी वाले आँख उठाकर भी नहीं ताकते थे। चैतन्य ने अपने इस महाराष्ट्रीय भक्त से कहा : "मैं कोरे शास्त्रार्थ वाले ज्ञान से नीरस हुए बनारस में भक्ति-सुधारस धार वहाने के लिए आया था। परन्तु लगता है कि यहाँ उसका कोई खरीदार नहीं है। खैर हरि की इच्छा, चलो वृन्दावन चलें।"

महाराष्ट्रीय ब्राह्मण श्री निमाई के व्यक्तित्व से ऐसा प्रभावित हो गया था कि महाप्रभु का तनिक-सा संकेत मात्र पाकर ही वह उनके साथ हो लिया। उसे और वलदेव भट्टाचार्य को साथ लेकर निमाई प्रभु प्रयाग आए। वहाँ वे तीन दिन ठहरे। जब वे मथुरा जाने के लिए यमुना तट पर आए तो नदी को देखते ही वे भाव-विह्वल हो उठे। जिस यमुना में उनके आराध्य परम योगेश्वर मुरली-मनोहर ने नाना केलि की, उसके दर्शन मात्र से श्री निमाई को यह भावावेश आना बड़ा ही स्वाभाविक था।

रास्ते भर वे बड़े भाव-मग्न रहे। ज्यों-ज्यों श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि मथुरा निकट आती जाती थी त्यों-त्यों महाप्रभु का आनन्दोल्लास बढ़ता ही जाता था। व्रज की धूलि को माथे पर चढ़ाकर वे समाधि लीन हो गये।

व्रजभूमि उस समय खँडहरों से भरी हुई थी। श्रीकृष्ण की स्मृतियों से सम्बद्ध स्थानों का पता बतलाने वाला भी अब कोई न था। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने भावावेश में जिस स्थान को जो मान लिया वही व्रजवालों ने भी स्वीकार किया। श्री चैतन्य ने कहा : "यह विश्राम घाट है यह दीर्घ, यह विष्णु, भूपेश्वर और कर्णेश्वरघाट है।" मधुवन, तालवन, कदम्बवन आदि श्रीकृष्ण की प्रसिद्ध लीला स्थलियों को भी श्री चैतन्य ने ही पहचाना। जिस स्थान को उन्होंने वृन्दावन कहा उसे ही व्रजवासियों ने भी वृन्दावन मान लिया और आज तक वरावर मानते चले आ रहे हैं।

वृन्दावन में श्रीकृष्ण की एक प्राचीन मूर्ति भक्त संन्यासी ईश्वरपुरी जी के गुरु माधवेन्द्र पुरी महाराज ने खोज निकाली थी। जब से तुर्क पठानों के आक्रमण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने लगे तब से व्रजमण्डल में कृष्ण की मूर्तियों का कहीं पता भी नहीं चलता था। गोपालकृष्ण की इस मूर्ति को भी दुष्टों की शनि दृष्टि से बचाने के लिये व्रजवासियों को बड़े-बड़ जतन करने पड़े थे। वृन्दावन में श्री चैतन्य का मन खूब लगा। एक तो श्याममनोहर की लीलाभूमि, दूसरे वहाँ उनके परमभक्त रूप, सनातन और भूगर्भ आदि भी मिल गये थे। श्री निमाई का कीर्तन, प्रवचन और उनके भावावेशों को देख-देखकर व्रजवासी मुग्ध हो गये थे। श्री चैतन्य प्रत्येक व्रजवासी को 'हरि हरि' कह कर अपने कलेजे से लगा लेते थे। कोई टोकता कि मैं हीनजन्मा हूँ, आपके स्पर्श के योग्य नहीं तो हँस कर कहते : "श्रीकृष्ण और उनके भक्त हर जाति हर रूप में मिलते हैं। उन्हें स्पर्श करने में भला कौन धर्म-शास्त्र दोष निकाल सकता है ?" वे कहते हैं कि भगवान् नीचों के प्रति अधिक कृपालु होते हैं। कुलीनों और पंडितों को अपनी कुल, विद्या आदि का अभिमान होता है। श्रीकृष्ण तो उसे मिलते हैं तो तिनके से भी अधिक नम्र होकर, वृक्षों से अधिक सहनशील होकर, अमानी होकर साथ ही दूसरों को मान देकर उनका भजन करता है।"

ऐसा संन्यासी व्रजवासियों ने पहले कभी नहीं देखा था। देखते ही देखते उनकी महिमा चारों ओर व्याप्त हो गई। उनके दर्शनार्थियों की भीड़ दिन प्रति दिन बढ़ गई। लोगबाग कहते कि श्रीकृष्ण की भूली बिसरी लीला स्थलियों को पहचान कर उद्घाटित करने वाला यह अत्यन्त रूपवान तेजस्वी और निराला व्यक्ति और कोई नहीं, स्वयं श्रीकृष्ण भगवान् ही हैं। भोले व्रजवासी अपने गोरे कान्हा को आग्रहपूर्वक अपने-अपने घरों को लिवा चलने के लिए आते थे। यह व्रजवासीगण और उनका प्रेम श्री निमाई के लिए साधारण न था। प्रत्येक व्रज-बाल में वे अपने व्रजलाल ही को देखते थे। तत्कालीन व्रज की गोपिकाएँ उनकी दृष्टि में कृष्ण की सखियाँ बन जाती थीं। उनके मन में आठो पहर आनंद तरंगें उठने लगीं। आँखें प्रेमाश्रुओं का सरोवर बन गईं। जब समस्त लोक ही श्याम-मय हो तब भला चैतन्य को और क्या चाहिए। कब और किस समय किस वस्तु को देखकर वे भावलीन हो जायेंगे यह कोई नहीं कह सकता था। एक बार रास्ते में वे कृष्ण-कृष्ण करते हुए अचेत हो गये। उस समय उनके साथ पाँच व्यक्ति और थे। वे सड़क के किनारे धूल में पड़े हुए महाप्रभु की सेवा करने लगे। उसी समय दस घुड़सवारों की टोली उधर से गुजरी। एक अचेत पुरुष के पास इन पाँच व्यक्तियों को बैठे देखकर घुड़सवार यह समझे कि यह पांचों बटमार हैं और इस अचेत पड़े हुए व्यक्ति को लूटने की नियति से शायद उन्होंने उसे बहुत मारा है। घुड़सवारों ने उन पाँचों को धमकाकर पकड़ लिया और उनकी मुश्कें कस दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैतन्य के उन भक्तों में एक कृष्णदास भी थे। उन्होंने तनिक हिम्मत दिखाई। कहा कि तुम हमको साधारण व्यक्ति न समझना, अपने गुरु की सेवा के निमित्त ही हम इस समय इस वेशभूषा में हैं। हमारे तनिक सी हाँक मारते ही अभी सैकड़ों सिपाही आकर तुम्हें घेर लेंगे।

यह बातें चल ही रही थीं कि श्री निमाई चैतन्य होकर उठ बैठे। सब कुछ देख सुनकर उन्होंने काले लिबास पहने एक घुड़सवार से कहा: "यह पाँचों व्यक्ति मेरे साथी हैं। मैं संन्यासी हूँ। मेरे पास श्रीकृष्ण को छोड़कर और कोई ऐसी वस्तु नहीं जो लूटी जा सके। और उसे तो मैं लुटाता ही चलता हूँ। मुझे अक्सर मृगी के दौरे आ जाते हैं। इस समय भी आ गया था। आप मेरे कारण मेरे प्रियजनों को कृपया कष्ट न पहुँचायें।"

काले लिबास वाला घुड़सवार धार्मिक, ईश्वर प्रेमी और साधक व्यक्ति था। उसने उत्सुकतावश चैतन्य से प्रश्न करने शुरू किए।

"इन्सान को कौन सा धरम मानना चाहिए?" सवार ने पूछा।

"मनुष्य को अपने धर्म का पालन करना चाहिए। उसके मुख्यत: तीन धर्म हैं, भगवान् का नाम लेना, जीवों पर दया करना और भक्तों की सेवा करना।"

"भगत कौन बन सकता है?"

"कोई भी। भगवान् की भक्ति करने का अधिकार सबको है। जाति कुल देश धर्म आदि की कोई मर्यादा मनुष्य को भक्ति करने से नहीं रोक सकती। भगवान् का नाम लेने वाला व्यक्ति परम पवित्र होता है।"

"भगवान् के नाम से क्या मिलता है?"

"मनुष्य के पाप दूर हो जाते हैं। लेकिन जो मनुष्य इस भरोसे पर पाप करता है कि भगवान् का नाम लेकर उन्हें धो लूंगा, उस आत्म प्रवंचक के पाप घटते नहीं वरन् बढ़ जाते हैं।"

बातों-बातों में रस गाढ़ा होने लगा। जैसे-जैसे वे तुर्क पठान घुड़सवार श्री चैतन्य महाप्रभु की बातें सुनते जाते थे और उनकी भाव-भंगिमाओं को निहारते थे, वैसे-वैसे ही उनके प्रति उनका भक्तिभाव भी प्रगाढ़ होता जाता था। वे दसों सैनिक थोड़ी ही देर में प्रभु से ऐसे प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना धर्म त्याग कर वैष्णव धर्म को अपना लिया। श्री चैतन्य ने उनसे कहा: "यह कभी न भूलना कि वैष्णव दूसरे धर्मों के देवताओं और ग्रन्थों की कभी भूल कर भी निन्दा नहीं करता। वैष्णव प्रत्येक जीव का सम्मान करता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीस

वृन्दावन से लौटकर चैतन्य फिर प्रयाग आ पहुँचे। यहाँ गौड़ के भूतपूर्व राजा सत्रुद्धि राय से उनकी भेंट हुई। गौर देश का तत्कालीन शासक हुसैनशाह एक समय राजा सुत्रुद्धि राय का नौकर था। एक बार किसी अपराध के कारण राजा ने हुसैनखाँ को कोड़ों से पिटवाया था। हुसैनखाँ ने एक सफल षड्यंत्र रच कर सुबुद्धि राय को गद्दी से उतार दिया और स्वयं हुसैनखाँ से हुसैनशाह बन बैठा। पहले तो उसने राजा सुबुद्धि राय को अपना पूर्व प्रतिपालक होने के नाते केवल अपदस्थ करके हो छोड़ दिया किन्तु बाद में अपनी बेगम की सलाह से उसने सुत्रुद्धि राय को हर प्रकार से निस्तेज करने की ठानी। उसने उन्हें पकड़ मँगवाया। उसने कहा कि मुसलमान धर्म ग्रहण करो। राजा के मना करने पर हुसैनशाह ने दो बलिष्ठ पुरुषों के द्वारा जबर्दस्ती राजा सुबुद्धि राय को बँधवाकर उनके मुख में मुसलमान के जूठे पात्र का पानी डलवा दिया। राजा सुबुद्धि राय सार्वजनिक रूप से धर्मच्युत कर दिये गये। ऐसा करने से गौड़ की गद्दी अब हुसैनशाह के लिए पूरी तरह से सुरक्षित हो गई। हारे हुए राजा के प्रति सहानुभूति रखकर प्रजा शायद हुसैनशाह के विरुद्ध किसी न किसी प्रकार के षड्यंत्र करने का उत्साह दिखा सकती थी परन्तु अब ऐसा न कर सकेगी। धर्मभ्रष्ट राजा को भला गद्दी पर कौन बिठलाएगा।

विधर्मी के जूठे पात्र से जल पी लेने के बाद सुबुद्धि राय गौड़ बङ्गाल के लिए निर्मूल्य हो चुके थे। उस समय देश में धर्म को लेकर सामाजिक आचार-विचारों का एक ऐसा गलत रवैया चल रहा था कि जो भी विजेता शासकों के अत्याचारों का शिकार होता उसे उसका समाज भी दूध की मक्खी की तरह बाहर निकाल कर फेंक देता था। हिन्दू धर्माचारियों की इस प्रचंड मूर्खता के कारण अनेकों ने घृणापूर्वक हिन्दू धर्म से मुंह मोड़ लिया। बेचारे सुबुद्धि राय अपने संस्कारों के कारण धर्मभ्रष्ट होने के बावजूद धर्माचारियों के प्रायश्चित का विधान पूछते फिरते थे। वे गिड़गिड़ाते थे कि कोई उन्हें शुद्ध करके फिर से समाज में मिला ले, लेकिन धर्माचारी कहते थे अब तुम फिर से हमारे समाज में प्रतिष्ठित नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो सकते हो। उनका कहना था कि जिस मुँह से तुमने विधर्मी का जूठा पानी पिया है उसमें खौलते हुए घी की धार डालो। देहान्त प्रायश्चित ही तुम्हारे लिए एकमात्र विधान है। इस प्रकार दम्भी और मूर्ख धर्माचार्य भारत का निरीह प्रजा के प्रति 'मरे को मारे शाह मदार' वाली कहावत चरितार्थ कर रहे थे। प्रयाग में श्री चैतन्य महाप्रभु का आगमन सुनकर सुबुद्धि राय उनकी सेवा में पहुँचे। चैतन्य ने उनसे कहा : "कृष्ण नाम सब पापों का प्रायश्चित है। तुमने तो वस्तुत: कोई पाप किया नहीं है। वृन्दावन जाओ और कृष्ण-कृष्ण जपो। तुम्हें निश्चय ही शान्ति मिलेगी।'

सुबुद्धि राय श्री चैतन्य महाप्रभु से यह सहानुभूति पाकर आश्चर्य से स्तब्ध हो गये। वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि हिन्दू समाज का कोई पवित्र व्यक्ति उन्हें इस प्रकार आदर देकर अपने कलेजे से लगा सकता है। उनके हृदय में श्रद्धा का स्रोत उमड़ पड़ा। जीने के लिए फिर से आस्था मिली।

परमगुरु श्री चैतन्य के चरणों में साष्टांग प्रणाम करके नवोल्लास के साथ कृष्ण नाम जपते हुए वे वृन्दावन चले गये।

श्री निमाई प्रयाग से वाराणसी आ गये। इस बार भी उन्होंने तपन मिश्र के घर पर ही डेरा डाला। एक दिन महाप्रभु भीतर बैठे हुए अपने भक्तों से बातें कर रहे थे, एकाएक बोले : "अरे बाहर एक परम वैष्णव बैठे हुए हैं। कोई जाकर उन्हें सादर भीतर लिवा लाओ।"

चन्द्रशेखर नाम का एक व्यक्ति तुरन्त बाहर आ गया, परन्तु उन्हें कोई वैष्णव न दिखलाई दिया। लौटकर उसने कहा : "बाहर तो कोई भी वैष्णव नहीं है प्रभु।"

"तुमने द्वार पर किसी भी व्यक्ति को नहीं देखा ?"

"एक मुसलमान दरवेश तो जरूर बैठा है परन्तु वैष्णव वहाँ कोई भी नहीं है।"

"उसे ही सादर भीतर ले आओ।"

यह व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं सनातन पण्डित थे जो हुसैनशाह के कारागार से मुक्त होकर दरवेश के छद्मवेश में यात्रा करते हुए काशी आए थे। श्री चैतन्य के वहाँ उपस्थित होने की सूचना पाकर वे उनके दर्शनार्थ तपन मिश्र के द्वारे आये थे। श्री चैतन्य ने जब उन दरवेश रूपी सनातन जी को भीतर लाने की आज्ञा दी तो चन्द्रशेखर आश्चर्य चकित रह गये। वे सनातन पण्डित को सादर भीतर लिवा लाए। श्री निमाई प्रभु ने सनातन को कलेजे से लगा लिया और कहा—"सोना भट्ठी में तपकर ही निखरता है। अब तुम खरे वैष्णव हुए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी में श्री चैतन्त महाप्रभु के दर्शनार्थ भीड़ क्रमशः नित्य बढ़ने लगी। काशी संन्यासियों से प्रभावित नगरी थी। स्वामी प्रकाशानन्द जी सरस्वती वहाँ के बेताज के वादशाह थे। चैतन्य के दुवारा काशी आने की सूचना मिलते उन्हें देर न लगी। वृन्दावन जाते हुए श्री चैतन्य जब पहली बार काशी आए थे तब उनकी महिमा सुनकर प्रकाशानन्द ने कहा था : "वह भंड मेरे आगे कभी टिक नहीं सकता।" जब वे काशी से चले गये तो प्रकाशानन्द ने दम्भपूर्वक कहा : "देखा, मैं जानता था कि वह यहाँ से भाग जाएगा। अद्वैताचार्य और सार्वभौम पण्डित होते हुए भी कच्चे दिल वाले लोग हैं। वे निमाई के मायाजाल में फँस गये परन्तु काशी में उसकी दाल नहीं गल सकती थी। देख लेना अब वह यहाँ लौट कर कभी नहीं आएगा।"

लेकिन वह कृष्ण वावला महापण्डित और परम भक्त फिर बनारस में आ पहुँचा। इस बार काशी की जनता और भी अधिक आकर्षण के साथ श्री चैतन्य के दर्शनार्थ तपन मिश्र के घर जाने लगी। ऐसा लगता था कि शंकर की नगरी में श्रीकृष्ण छा गये हैं। प्रकाशानन्द ज्यों-ज्यों यह सुनते त्यों-त्यों अधिक उत्तेजित होकर श्री चैतन्य के विरुद्ध प्रलाप करते थे।

उन दिनों काशी में एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित महाराष्ट्रीय ब्राह्मण रहा करते थे। वे प्रकाशानन्द जी के भक्त तो थे ही किन्तु चैतन्य महाप्रभु के प्रति भी उनका भक्तिभाव प्रगाढ़ हो गया था। श्री चैतन्य के विरुद्ध प्रकाशानन्द की कटूक्तियाँ सुनकर बार-बार उनके मन में यह विचार आने लगा कि किसी प्रकार दोनों संन्यासियों की भेंट हो जाय। उन्हें विश्वास था कि प्रकाशानन्द यदि एक वार चैतन्य से मिल लेंगे तो वे फिर कभी भी उनके विरुद्ध भाषण न करेंगे। यह सोचकर उन महाराष्ट्रीय सज्जन ने काशी के सारे संन्यासियों को अपने घर पर भोजन के लिये आमन्त्रित किया। संन्यासियों के इस भोज में श्री श्री चैतन्य महाप्रभु और उनकी भक्त मण्डली भी सादर बुलाई गयी थी। चैतन्य प्रायः ऐसे भोजों में सम्मिलित नहीं होते थे परन्तु अपने शिष्यों और भक्तों के आग्रह को देखकर उन्होंने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

महाराष्ट्रीय ब्राह्मण के घर पर एक हजार से अधिक संन्यासियों की मंडली उपस्थित थी। स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती उनके मध्य में ऐसे शोभित हो रहे थे जैसे तारों भरे आकाश में चन्द्रमा। तभी प्रकाशानन्द जी तथा अन्य संन्यासियों ने देखा कि कच्चे सोने-से वर्ण वाला एक अत्यन्त आकर्षक और तेजस्वी संन्यासी अपने भक्त मण्डली के साथ आ रहा है। वे सभी उसे देखते ही रह गये। उनमें से बहुतों ने, स्वयं प्रकाशानन्द जी ने भी चैतन्य का केवल नाम भर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही सुना था किन्तु उन्हें देखते ही बहुतों को लगा कि यह महापुरुष मानो उनका सदा का जाना-पहचाना हुआ व्यक्ति ही है, और जान-पहचान भी ऐसी है कि न तो उससे आँखें मिलाते बनता है और न चुराते ही।

चैतन्य मण्डप के बाहर उस स्थान के समीप बैठ गये जहाँ संन्यासियों के हाथ-पैर धुलाए जा रहे थे। प्रकाशानन्द जी को यह अच्छा न लगा। महाप्रभु के दर्शन मात्र से ही उनका मन उसकी ओर खिच गया था। महाप्रभु के प्रति उनके मन में जो उपेक्षा और शत्रुता का भाव था, वह इस समय टिक नहीं पा रहा था उन्हें अति दीन भाव से अपवित्र स्थान पर बैठते देखकर वे बोले : "श्रीपाद, सभा में प्रवेश करें। अपवित्र स्थान पर बैठकर आप हमें क्लेश क्यों दे रहे हैं।"

हाथ जोड़कर निमाई ने उत्तर दिया : "मेरा सम्प्रदाय हीन और आपका उच्च है, भला फिर मैं आपके समकक्ष होकर किस प्रकार बैठ सकता हूँ।" संन्यासियों के सरस्वती, तीर्थ, गिरि, पुरी आदि संप्रदायों में भारती सबसे निचली श्रेणी में माना जाता था, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु के श्रीमुख से यह बात सुनकर स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती बैठे न रह सके, मुस्कराते हुए वे अपने आसन से उठे। सभामण्डप में विराजमान् समस्त संन्यासी गण अपने गुरु को उठते देखकर खड़े हो गये। प्रकाशानन्द जी ने महाप्रभु को हाथ पकड़कर उठाया और साथ ले जाकर उन्हें अपने समीप ही आसन प्रदान किया। महाप्रभु विनय पूर्वक बैठ गये। प्रकाशानन्द बड़े ध्यान से उन्हें कुछ देर तक देखते रहे : फिर पूछा "श्रीपाद, मैंने सुना है कि आप श्री केशव भारती के शिष्य हैं किन्तु मुझे दुःख है कि आपने इतने दिनों से नगर में रहते हुए भी मुझे दर्शन देने की कृपा नहीं की।"

महाप्रभु ने उत्तर न दिया, विनीत भाव से मौन बैठे रहे। प्रकाशानन्द जी ने फिर कहा : "आपके तेज और भाव को देखकर मैं आनन्द चकित हूँ। आप साक्षात् नारायण के समान दर्शनीय हैं। किन्तु मैंने सुना है आप संन्यासियों के समान वेद-पाठ नहीं करते, यही नहीं वरन् आप संन्यासियों के लिए अशोभनीय और दूषित नृत्य गीतादि में निमग्न रहते हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप ऐसे धर्म-विरुद्ध हीनाचरण में आखिर क्यों लिप्त रहते हैं।"

श्री निमाई प्रभु ने शान्त और गम्भीर स्वर में उत्तर दिया : "श्रीपाद, आप के प्रश्न का उत्तर देने के लिए मुझे सविस्तार इसका कारण बतलाना पड़ेगा, इसके लिए कृपा करके मुझे आज्ञा प्रदान करें।"

प्रकाशानन्द जी ने सिर हिलाकर अनुमति प्रदान की। महाप्रभु कहने लगे : "जब मैंने यह आश्रम ग्रहण किया तो गुरु महाराज ने देखा कि एक अत्यन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूर्ख प्राणी हूँ, इसीलिए वे बोले, "बेटा तुम वेदान्त न पढ़ सकोगे। मैं तुम्हें एक श्लोक सुनाता हूँ उसे कण्ठस्थ कर लो।" यह कहकर वे तन्मय होकर श्लोक करने लगे—

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ।"

श्लोक सुनाकर महाप्रभु ने उसकी व्याख्या भी सभा के समक्ष प्रस्तुत की, कहा—"गुरुदेव बोले कि कलिकाल में नाम ही गतिशील है। नामजप से ही तुम्हारे कर्मबन्ध का क्षय होगा। मैंने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके कृष्णनाम का जप करना आरंभ कर दिया। धीरे-धीरे मेरी प्रकृति में परिवर्तन होने लगा। स्वयं से विवश होकर कभी हँसने, कभी रोने और नाचने-गाने भी लगा। अपनी यह दशा देखकर मैं बहुत डरा। मैंने गुरु जी से कहा कि प्रभु, आपने मुझे यह कैसा मंत्र प्रदान किया है। इसे जपते-जपते तो मैं पागल हो गया हूँ। मैं सचमुच बड़ी विपत्ति में पड़ गया हूँ। गुरु जी हंसने लगे, बोले, बेटा, यह विपद नहीं संपद है। तुम्हारा मंत्र निश्चय ही सिद्ध हुआ। तुमने वह प्रेम पाया है जो औरों को नहीं मिलता। अपने दिए हुए मंत्र को तुम्हारे द्वारा इस प्रकार सिद्ध हुआ देखकर मैं कृतार्थ हो गया।"

प्रकाशानन्द जी इस उत्तर से पूरी तरह सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने कहा : "मैंने सुना है कि आप महापंडित हैं, फिर भी आप वेदान्त क्यों नहीं पढ़ते ?"

"कोरा ज्ञान आस्था नहीं दे पाता श्रीपाद ! इस कलिकाल में नाम ही से शक्ति मिलती है।"

प्रकाशानंद जी बोले—"मैंने माना, किन्तु यह नाचना-गाना तो संन्यासी के लिए अत्यन्त अशोभनीय कार्य है, फिर आप ऐसा क्यों करते हैं ?"

"अपनी इच्छा से नहीं करता श्रीपाद ! अन्तःकरण में प्रेमोदय होते ही यह नृत्य-गीत अपने आप ही आरम्भ हो जाता है। मैं अपने आप से विवश हो जाता हूँ।"

"किन्तु क्या यह अच्छी बात है ? कृष्ण के प्रति प्रेम भाव का उदय होना सचमुच बड़े सौभाग्य का विषय है। किन्तु वेदान्त कीयों उपेक्षा करना अनुचित है। आपके समान व्यक्तियों का वेदान्त के प्रति अश्रद्धा रखना मुझे नितांत अनुचित लगता है।"

श्री चैतन्य बोले : "श्रीपाद, आपके प्रश्न का उत्तर यदि मैं नहीं देता तो वह अपराध माना जायगा। और मेरा उत्तर यदि सन्तोषजनक नहीं बन पड़ता तो आप मुझसे विरक्त हो जायंगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप स्वच्छन्द भाव से अपनी बात कहें। आपकी बात से विरक्त होने का प्रश्न ही मेरे मन में नहीं उठता है।"

प्रकाशानन्द जी से यह सुनकर प्रभु बोले : "वेदान्त ईश्वर वचन है। इस सम्बन्ध में मेरे मन में किसी भी प्रकार का भ्रम अथवा प्रमाद नहीं है। वेदान्त के सूत्रों का अर्थ भी मुझे मान्य है, किन्तु शंकराचार्य जी ने उनका जो अर्थ किया है उसे मैं शंकर वाक्य मानता हूँ, ईश्वर वाक्य नहीं। वेदान्त सूत्रों के अर्थ इतने स्पष्ट और सुबोध हैं कि उनका भाष्य करने की आवश्यकता ही नहीं थी। शंकराचार्य जी के द्वारा किए गए अर्थ कल्पित हैं। सूत्र के सहज अर्थों से मेल नहीं बैठता है।"

संन्यासी मण्डली यह सुनकर चौंक उठी। जगद्गुरु भगवान् शंकराचार्य जी द्वारा रचित भाष्यों का कोई व्यक्ति इस प्रकार खण्डन कर सकता है इसकी कल्पना भी तब तक किसी के मन में झाँकने का साहस न कर सकती थी। संन्यासियों के लिए तो शंकर वाक्य ब्रह्म वाक्य के समान ही था। एक संन्यासी ने कहा : "महात्मन्, आपके इस बड़बोलेपन का हेतु क्या है? जिसे सारा जगत् गुरु मानकर प्रणाम करता है उसे आप अर्थ के अनर्थ वाला दोषी बतला रहे हैं! आपके साहस ने कदाचित् अपनी कोई मर्यादा स्थापित नहीं की है, ऐसा जान पड़ता है।"

श्री निमाई बोले : "शंकराचार्य जी महापुरुष थे। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी भी थे। उन्हें जगद्गुरु कहकर आदर देने का विरोध भी मैं कभी नहीं करता। शंकराचार्य जी सब कुछ हो सकते हैं, पर ईश्वर उनसे भी बड़ा है। वेद ईश्वर वाक्य है अतएव उसके अर्थ सरल और सुबोध हैं, किन्तु शंकराचार्य जी ने उनके जो अर्थ किए हैं वे उतने ही दुरूह हैं। शंकराचार्य जी अपना मत स्थापित करना चाहते थे अतएव उनका भाष्य भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए रचा गया था।"

श्री गौरांग निमाई ने शंकराचार्य जी के अद्वैत मत का खण्डन करना आरंभ कर दिया। उनकी शान्त मधुर ओजस्वी वाणी गंगा की तरह बहती रही और सारी संन्यासी मण्डली स्तब्ध होकर सुनती रही। ऐसा लगता था कि जैसे उनकी वाणी ने सम्मोहन कर दिया हो। सभा में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति चैतन्य-वाणी के प्रभाव से एक नये चेतना लोक में पहुँच गया था। और स्वयं प्रकाशानन्द जी का हाल यह था कि वे मन ही मन पानी-पानी हुए जा रहे थे। प्रकाशानन्द जी को अपने प्रखर पांडित्य पर अभिमान था, परन्तु ऊँट इस समय पहाड़ के नीचे आ गया था। वे श्री चैतन्य की अलौकिक प्रतिभा से बँध गए थे। वे ठहरे माया-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वादी, 'सोऽहम्' जपने वाले। भक्ति का मार्ग उनके लिये बचकाना मार्ग था। 'जो मैं हूँ वही ईश्वर है'—तब कौन किसकी भक्ति करे, पर श्री चैतन्य गौरांग देव तो सीधे उनकी जन्म भर की अडिग आस्था पर प्रहार कर रहे थे, वे बोले : "श्रीपाद, आपकी बातों को मैंने बहुत ध्यान से सुना और आपके प्रति मेरा आदर भाव अब असीम हो गया है। शंकराचार्य जी के मत का खण्डन करने वाला व्यक्ति निश्चय ही असीम शक्तिशाली है। परन्तु मैं अभी आपसे कुछ और भी जानना चाहता हूँ। सूत्र के मुख्य अर्थ आपकी दृष्टि में क्या हैं यह कृपा करके बतलाइए।"

श्री गौरांग ने यह सिद्ध किया कि वेद वैष्णव धर्म का पोषण करते हैं। पर ऐश्वर्य युक्त सच्चिदानन्द परब्रह्म के प्रति प्रेम से प्रणत होना ही मानव जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। ब्रह्म को प्रेम से ही जाना और पाया जा सकता है।

श्री चैतन्य के द्वारा दृष्टिकोण से किए गए अर्थों ने समस्त संन्यासी मण्डली को उनके प्रति श्रद्धाभिभूत कर दिया। प्रकाशानन्द जी के शुष्क ज्ञान ने पहली बार अपने भीतर रसबोध पाया। उन्हें ऐसा लगा कि उनका पुनर्जन्म हो रहा है। वे हाथ जोड़कर खड़े हो गए और बोले : "श्रीपाद, आज तक मेरे मन में आपके प्रति उपेक्षा का भाव था। मैंने यही समझा कि आप किसी प्रकार की बाजीगरी करके अपना मत चलाना चाहते हैं, किन्तु आज आपको देखकर सुन-कर मुझे ऐसा लगा कि मानो साक्षात् वेद ही अपना यथार्थ बतलाने के लिए शरीर धरकर हमारा भ्रम निवारण करने के लिए यहाँ पधारे हैं। भक्ति की महिमा को मैंने आज से पहले कभी समझा ही नहीं था। आज से आपने मेरे मन में गुरु का स्थान ग्रहण किया। मैं भी अब यह अनुभव करता हूँ कि आज का देश और काल जिस प्रकार अनास्था मण्डित होकर अपने भीतर ही भीतर बिखर रहा है उसे सम्हालने की शक्ति कोरे ज्ञान में नहीं है। अनास्था की मरु-भूमि को सींचने के लिये प्रेम रसधार चाहिए।" यह कहकर प्रकाशानन्द काशी के बेताज के बादशाह ने श्री चैतन्य के आगे भूमिष्ठ होकर साष्टांग प्रणाम किया। उनके झुकते ही पूरी काशी चैतन्य के चरणों में लोट गई। जिस समय श्री चैतन्य काशी से पुरी धाम के लिये चले उस समय एक बहुत बड़ी उन्हें भावभीनी विदाई देने के लिए इकट्ठा हो गई थी।

काशी का मन जीतकर श्री चैतन्य ने मानो भारत का मन जीत लिया था। यद्यपि उन्होंने केवल अड़तालीस वर्ष की आयु ही पायी परन्तु इतने अल्पकाल में उन्होंने जो कार्य किया वह बहुतों से सौ वर्ष जीकर भी पूरा नहीं हो सकता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था । उन्होंने लाखों पतित पद्-दलितों का उद्धार किया । जो समाज में पदच्युत थे उन्हें नयी हैसियत दी । पूरे समाज को जीने के लिए एक नयी आस्था प्रदान की । चैतन्य का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से सारे बंगाल पर और अप्रत्यक्ष रूप से सारे भारत पर पड़ा । उनके अन्त की कथा बड़ी ही विचित्र है । शकाब्द १४५५ में भीड़ भरे जगन्नाथ के मन्दिर में सहसा अदृश्यमान् हो गए और फिर कभी न दिखलाई पड़े । नदिया का गोरा चाँद दैहिक रूप से अस्त हो गया किन्तु उसकी विमल यश चाँदनी आज भी है ।

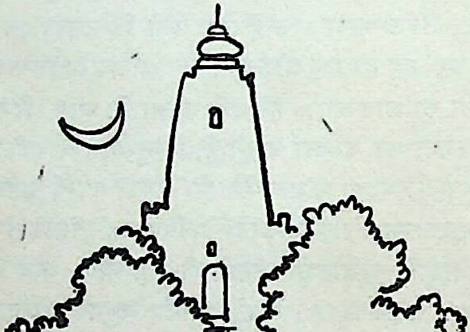

इ० दिनेश्वर प्रसाद सिंह
इन्द्रा कालोनी, पटना द्वारा प्रदत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[illegible] केश्वर प्रसाद सिंह
[illegible] पटना द्वारा प्रदत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकभारती द्वारा प्रकाशित
महान् चिन्तकों की जीवन गाथाएँ

• • •

- **विवेकानन्द :: रोमां रोलां**
  'साहित्य अकादमी' की ओर से प्रकाशित
  'अज्ञेय' एवं रघुवीर सहाय द्वारा अनूदित
- **रामकृष्ण परमहंस :: रोमां रोलां**
  डॉ० रघुराज गुप्त तथा धनराज वेदालंकार
  द्वारा अनूदित
- **महर्षि दयानन्द**
  यदुवंश सहाय
- **उत्तर योगी :: (श्री अरविन्द)**
  शिवप्रसाद सिंह
- **गुरु नानकदेव :: जीवन और दर्शन**
  डॉ० जयराम मिश्र
- **स्वामी रामतीर्थ**
  डॉ० जयराम मिश्र
- **महात्मा गांधी :: रोमां रोलां**
  'साहित्य अकादमी' की ओर से प्रकाशित
  प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' द्वारा अनूदित
- **आदि शंकराचार्य :: जीवन और दर्शन**
  डॉ० जयराम मिश्र
- **भगवान् बुद्ध :: जीवन और दर्शन**
  धर्मानन्द कोसम्बी
- **मानवपुत्र ईसा :: जीवन और दर्शन**
  डॉ० रघुवंश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

चैतन्य महाप्रभु

अमृतलाल नागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.